हिन्दी के उत्पादक स्वनिम : प्रयोजनमूलक आयाम
(संज्ञा, विशेषण और क्रिया के संदर्भ में)

हैदराबाद विश्वविद्यालय की पी-हेच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

शोधार्थी

प्रीति प्रेमचन्द्र

1999

निर्देशक

आचार्य वै० वेंकटरमण राव
एम०ए० (हिन्दी), एम०ए० (तेलुगु), पी-हेच०डी०
डीन,मानिवकी संकाय एवं आचार्य हिन्दीविभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद-५०० ०४६ ।

अध्यक्ष

आचार्या नूरजहाँ बेगम
एम०ए० (हिन्दी), एम०ए० (संस्कृत), पी-हेच०डी०,डी०लिट०
अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद-५०० ०४६ ।

DECLARATION

Name of the research scholar	:	***MRS. PREETI PREMCHANDRA***
Department / Centre	:	***HINDI***
University of Hyderabad		

This is to certify that I, ***MRS. PREETI PREMCHANDRA*** *have carried out the research embodied in the present thesis* ***"Hindi ke utpaadak ruupim : Prayojan muulak Aayam (Sangyaa, Visheshan Evem Kriyaa ke Sandarbha mein)"*** *for the full period prescribed under the Ph. D. ordinances of the University.*

I declare that no part of this thesis was earlier submitted for the award of any research degree or diploma to any university.

DATE: 21/10/99.

Preeti

SIGNATURE

21/10

(RESEARCH SUPERVISOR)

(HEAD OF DEPARTMENT) 22-10-99

Prof. & Head, Dept. of Hindi
School of Humanities
University of Hyderabad
HYDERABAD-500 134

(DEAN OF SCHOOL) 22/10/99

DEAN
SCHOOL OF HUMANITIES
University of Hyderabad

पूज्य पिताजी स्व. श्री चन्द्रकुमार जी को
श्रद्धांजली

अनुक्रमणिका

पृ.सं.

प्राक्कथन I - IV

प्रथम अध्याय

हिन्दी के प्रयोजन मूलक आयाम एवं आधार

1.0 प्रस्तावना 01

1.1 **प्रयोजन मूलक भाषा, स्वरुप और क्षेत्र** 02

1.2 **प्रयुक्ति** 03

1.2.1 वार्ता क्षेत्र 04

1.2.2 वार्ता प्रकार 04

1.2.3 वार्ता शैली 04

1.3 **शोध के आधार** 04

1.4 **दिशा** 05

1.5 **निष्कर्ष** 05

द्वितीय अध्याय

शब्द : संरचना एवं रूपिम

2.0 प्रस्तावना 06

2.1 **शब्द** 06

2.1.1 शब्द और संस्कृत आचार्य दृष्टि 06

2.1.2 शब्द और पाश्चात्य आचार्य दृष्टि 09

2.1.3 हिन्दी के वैयाकरणों की दृष्टि में 'शब्द' 09

2.2 **शब्द की संरचनात्मक इकाइयाँ** 13

2.2.1 प्रकृति 13

2.2.2 प्रत्यय 14

2.2.3 उपसर्ग 14

2.3 शब्द संरचना : भारतीय आचार्यों के विचार 15
2.4 रूप, रूपिम एवं संरूप 16
2.4.1 मुक्त रूपिम 18
2.4.2 बद्ध रूपिम 19
2.5 निष्कर्ष 19

तृतीय अध्याय

शब्द संरचना की प्रक्रियाएँ : उत्पादकता

3.0 प्रस्तावना 20
3.1 शब्द संरचना की प्रक्रियाएँ 20
3.1.1 प्रत्ययोजन 21
3.1.2 समासीकरण 25
3.1.3 द्विरुक्तिकरण 26
3.2 शब्द संरचना संबंधी कुछ महत्वपूर्ण कार्य 27
3.3 उत्पादकता 31
3.4 निष्कर्ष 42

चतुर्थ अध्याय

उत्पादकता की प्रक्रिया : हिन्दी के उत्पादक रूपिम

4.0 प्रस्तावना 43
4.1 उत्पादकता की प्रक्रिया 43
4.1.1 मुक्त रूपिम 44
4.1.2 बद्ध रूपिम 44
4.2 रूपिम : वितरण 46
4.2.1 एक रूपिमिक मुक्त रूपिम 46
4.2.2 एक रूपिमिक बद्ध रूपिम 46

a) उपसर्ग

b) प्रत्यय

4.2.3 बहुरूपिम 47

4.2.4 यौगिक बद्धरूपिमिक 49

4.2.5 साधित्य मुख्य शब्द 54

4.3 संबधतत्व आधारित रूपिम 54

4.3.1 समासिक रूप 55

4.3.2 प्रत्यय योजन 56

4.3.3 आभ्यंतर परिवर्तन 71

4.3.4 शून्य रूप 75

4.3.5 स्वतंत्र रूप 76

4.3.6 शब्द क्रम 77

4.3.7 द्विवरावृति 78

4.4 हिन्दी के उत्पादक रूपिम 79

4.5 निष्कर्ष 98

पंचम अध्याय

संज्ञा संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम

5.0 प्रस्तावना 101

5.1 आधुनिक तकनिकी पारिभाषिक संज्ञा शब्द 102

5.2 वनस्पति विज्ञान : हिन्दी के उत्पादक रूपिम 103

5.3 प्रशासनिक शब्दावली 121

5.4 बैंकिंग शब्दावली 136

5.5 निष्कर्ष 146

षष्ठ अध्याय

विशेषण संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम

6.0 प्रस्तावना 149

6.1 **सामान्य भाषा में संज्ञा का विशेषण में रूपांतरण** 150

6.2 **पारिभाषिक शब्दावली** 151

6.3 **वनस्पति विज्ञान** 157

6.4 **प्रशासनिक शब्दावली** 157

6.5 **बैंकिंग शब्दावली** 158

6.6 **अंग्रेजी में विशेषण** 160

6.7 **निष्कर्ष** 165

सप्तम् अध्याय

क्रिया संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम

7.0 प्रस्तावना 167

7.1 **क्रिया तत्वों के नियम** 168

7.2 **वनस्पति विज्ञान** 171

7.3 **प्रशासनिक शब्दावली** 174

7.4 **बैंकिंग शब्दावली** 175

7.5 **निष्कर्ष** 177

उपसंहार 178

परिशिष्ट

अ) सहायक ग्रंथ हिन्दी 182

आ) सहायक ग्रंथ अंग्रेजी 184

प्राक्कथन

आज के इस वैज्ञानिक एवं सूचना क्रान्ति के युग में भाषा को तथ्यात्मक एवं प्रयोजनमूलक रूप से प्रयोग किया जाना आवश्यक हो रहा है । इस तथ्यात्मकता को और भी आगे अग्रसर करने की एवं भाषा के तत्वों के मानदण्डों पर प्रस्तुत करने की भी आवश्यकता हैं । भाषा को साहित्यिक जगत से उठा कर साहित्येतर क्षेत्र में सम्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए और इन साहित्येत्तर क्षेत्र को भी सरल बनाना भी आज की आवश्यकता हैं । मैंने M.Phil में "हिन्दी संज्ञा संरचना और कुछ उत्पादक रूपिम" विषय पर कार्य किया है और इसी रूची को और भी आगे बढाया है । हिन्दी के उत्पादक रूपिम क्या है ये रूपिम किस संदर्भ में उत्पादक हो सकते है ? उनकी उत्पादकता की सीमा क्या है ? और सबसे पहले हिन्दी के शब्दों और रूपिमों के संदर्भ में उनकी उत्पादकता क्या हो सकती है ? आदि प्रश्नों के समाधान ढूंढ़ने की मेरे मन में जिज्ञासा बडी । इसी से प्रवृत्त होकर मैंने अपने शोध के लिए इस विषय का चयन किया है । इन सबकी प्रयोजनमूलक हिन्दी के संदर्भ में क्या उपयोगिता हो सकती है और ये उत्पादक रूपिम प्रयोजनमूलक हिन्दी के किन-किन आयामों और संदर्भों में आधुनिक परिवेश में कहाँ तक सफल हो सकते हैं इन सबको विश्लेषण के आधार पर निर्धारण करने और विश्लेषण की गहराई तक जाकर अध्ययन करना चाहती थी ।

इस विषय की समकालिकता यह है कि आज हिन्दी भाषा राजभाषा के रूप में स्वीकृत हुई है और संवैधानिक समितियों ने प्रयोजनमूलक हिन्दी भाषा को एक बृहत् आयाम दिया है । जब भी किसी विकासशील देश के समक्ष अपनी भाषाओं के माध्यम से विभिन्न काम-काज करने या विभिन्न क्षेत्रों में अपनी भाषा के माध्यम से अपने को अभिव्यक्त करने का प्रश्न उठता हैं तब वहाँ भाषा नियोजन के अंतर्गत कुछ भाषा नीतियाँ निर्मित होती हैं । इस दिशा में विकासशील देश उन्हें कह सकते हैं जो पिछले कुछ दशकों के अंदर स्वतंत्र हुए हैं । भारत ऐसे ही देशों में से एक हैं । इस दृष्टि से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रभाषा के द्वारा एक ऐसी राष्ट्रीय एकता की बात सोची गई जिससे सारा राष्ट्र एक सूत्र में बंध सके । वह है भाषा की विभिन्न रूपों में प्रयुक्त होनेवाली शब्दावली और प्रोक्तियाँ उनके रूप, इन सब के रूप अब किस सीमा तक हिन्दी भाषा के प्रयोजनमूलक आयामों में

उत्पादक हो सकते हैं इसे जानना प्रस्तुत शोध का केन्द्रीय लक्ष्य हैं । परन्तु जहाँ राजभाषा के रूप में जब हिन्दी के प्रकार्यों व उसके कर्मों के द्वारा उसका एक विशिष्ट स्थान निर्धारण होने निवार्य है, भाषा नियोजन ने भी राजभाषा हिन्दी के संदर्भ में इन बातों को ध्यान में रखा । आज की आवश्यकता है कि राजभाषा का यह स्वरूप विभिन्न प्रयोजनों के लिए केवल निर्मित ही नहीं किया जाये, परन्तु उसका प्रयोग कई क्षेत्रों में हो और उससे वह अखिल भारतीय स्तर पर स्वीकार किया जायें । इस दृष्टि से राजभाषा हिन्दी की स्वीकृति के साथ हिन्दी का अखिल भारतीय स्वरूप क्या होगा, उसका विश्लेषण संविधान की धारा 351 में बहुत स्पष्ट रूप से दिया भी गया है । प्रयोजनमूलक भाषा के इस विकास को भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो भारतीय भाषाएँ जहाँ सदा से संदर्भ की अनुभूति और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए प्रयुक्त होती रही हैं, वहीं प्रयोजनमूलक भाषा के स्वरूप में अंतर हुआ हैं । इस प्रयोजनमूलक भाषा का क्षेत्र व्यापक हो गया, इसके विभिन्न रूप व स्वरूप होतें हैं, इसके साथ इसका व्याकरण भी विषयानुकूल बदल जाता है । इन सब विषय पर भाषा रूपों को भाषा-विज्ञान में प्रयुक्ति की संज्ञा दी गई हैं । जैसा कि कहा गया है कि एक भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ होती हैं उसी प्रकार प्रयोजनमूलक भाषा के अंतर्गत कई प्रयुक्तियाँ होती हैं । इन प्रयुक्तियों को ध्यान में रखते हुए उनके शब्दों व शब्दों की विभिन्न रूपों की उत्पादक प्रक्रिया का क्या संदर्भ हो सकता है ? यह उत्पादक प्रक्रियाओं की किस सीमा तक उत्पादक हो सकती हैं, उसकी उत्पादकता के क्या माध्यम, क्षेत्र, व तत्व हो सकते है, और क्या वास्तविकता में हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द हैं भी जो उत्पादकता के माध्यम से व्युत्पन्न हो सकतें - इन सारी बातों को इस शोध में देखने का प्रयास किया गया है ।

इस अध्ययन की अध्याय योजना सात अध्यायों में बनी है ———

प्रथम अध्याय **'हिन्दी के प्रयोजनमूलक आयाम एवं आधार'** में हिन्दी के प्रयोजनमूलक तत्वों एवं आधारों पर विचार किया गया और उनका प्रयोग उत्पादकता के क्षेत्र में किस तरह से रहेगा इसे भी दृष्टिगत किया गया है ।

द्वितीय अध्याय **'शब्द संरचना एवं रूपिम'** पर उनके भारतीय एवं पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों के

विचारों को केन्द्र में रखते हुए इस शोध कार्य को बढ़ाया गया है, जिसके अंतर्गत रूप, रूपिम, संरूप, उपसर्ग, प्रत्यय, मध्यसर्ग पर भी विचार किया गया है ।

तृतीय अध्याय **'शब्द संरचना की प्रक्रियाँ : उत्पादकता'** में शब्द संरचना की प्रक्रियाओं को देखा गया जो सात प्रकार के है जिसके अंतर्गत प्रत्यय योजन प्रक्रिया बहुत महत्वपूर्ण एवं संपूर्ण व्याकरण की नींव है । इसी में ये प्रक्रियाएँ किस तरह से उत्पादकता के क्षेत्र में प्रयोग में आयेंगी - इस पर भी विचार किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय **'उत्पादकता की प्रक्रिया : हिन्दी के उत्पादक रूपिम'** में रूपिम क्या है, किस तरह से है और कौन से रूपिम उत्पादक बनेंगे आदि देखा गया और उनका विश्लेषण प्रस्तुत किया गया हैं ।

पंचम् अध्याय **'संज्ञा संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम'** के अंतर्गत वनस्पति विज्ञान, प्रशासनिक और बैंकिंग शब्दावलियों के संज्ञा रूपों का विवरण देते हुए उन्हें विभिन्न वर्गों में लाने का प्रयत्न किया गया । संज्ञा रूपिमों की उत्पादकता का विश्लेषण किया गया है ।

षष्ठ अध्याय **'विशेषण संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम'** के अंतर्गत उपर्युक्त तीनों क्षेत्रों के संदर्भ में उनके उत्पादक रूपिमों को देखा गया और विशेषण शब्दों को किस तरह से वर्गों में बदल सकते है उसे भी देखा गया है ।

सप्तम् अध्याय **'क्रिया संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम'** के अंतर्गत किस रूप में पारिभाषिक एवं तकनिकी शब्दावली में क्रिया रूपिम प्रयुक्त और उत्पादक होती हैं देखा गया है ।

अंत में उपसंहार के रूप में शोध अध्ययन का सार प्रस्तुत किया गया है ।

इस शोध के प्रेरणादाता मेरे निर्देशक प्रोफेसर वै. वेंकटरमण राव जी है जिन्होंने मुझे इसे संपूर्ण कराने में तथा हर कठिनाई एवं समस्या को सुलझाने में मुझे पदे-पदे मार्ग दर्शन, स्नेह, सहयोग और उत्साह प्रदान किया है । उनका मैं सदैव आभारी रहूगीं । विभाग की अध्यक्षा डॉ. नूरजहाँ बेगम और अन्य गुरुजनों की भी आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा इस कार्य के पीछे रही है । श्री नरसिंग राव की भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने मेरे इस शोध प्रबंध के टंकण द्वारा सुंदर आकृति और स्वरूप प्रदान किया है ।

पूज्य माता-पिता जिन्होंने मुझे बचपन से लेकर अब तक मेरे जीवन में आर्शिवाद, मुझे दृढता एवं आगे बढने का प्रोत्साहन दिया है । इनका प्रेम-भाव मेरे लिए सदैव पूज्यनीय रहेगा ।

अंत में मैं अपने पति श्री चितरंजन सोहनीजी का हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने इस ऐशोध को परिपूर्ण करने में अपना सहयोग और तन, मन, धन लगाकर मुझे प्रोत्साहन के साथ-साथ निराशा होने से बचाया है । आज मैं उन्हीं की वजह से अपने इस शोध प्रबंध को पूर्ण कर सकी हूँ ।

प्रथम अध्याय

हिन्दी के प्रयोजन मूलक आयाम एवं आधार

प्रथम अध्याय

हिन्दी के प्रयोजनमूलक आयाम एवं आधार

1.0 प्रस्तावना

भाषा के दो पक्ष होते हैं । एक का संबंध उसकी संरचना और बुनावट के साथ होता है और दूसरे का संबंध और प्रकार्य के साथ । संरचना और बुनावट के संदर्भ का केन्द्र बिन्दु भाषा का व्याकरण होता है और उसके प्रयोजन का संदर्भ उसका संप्रेषण होता है । यद्यपि संरचना और प्रयोजन का अटूट संबंध है, किन्तु आज तक भाषा के संरचनात्मक पक्ष पर अधिक ध्यान दिया गया है, जब कि प्रयोजन मूलक पक्ष पर कम विचार किया गया है । हिन्दी राष्ट्रभाषा है । जब हिन्दी राजभाषा घोषित की गई तब से उसके व्यवहार क्षेत्र में बढौती हुई । तब यह महसूस किया गया कि हिन्दी भाषा को केवल साहित्यिक और व्याकरणों तक सीमित न रखकर, उसके अन्य पक्षों पर ध्यान देने की आवश्यकता है । तभी हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा की भूमिका अच्छी तरह से निभा सकेगी । इसी कारणवश हिन्दी के प्रयोजनमूलक क्षेत्र पर इधर कुछ वर्षों से अध्ययन किया जा रहा है और पाठ्यक्रमों में भी इसे और आगे चलाने का निर्णय लिया गया है । हिन्दी भाषा केवल साहित्यिक दायरों में न रहकर साहित्येतर क्षेत्र में आगे बढती जा रही है । जैसे-जैसे ये बढ रही है उसका प्रयोग होता जा रहा है । परन्तु यह प्रयोग साहित्यिक भाषा के समान सरल नहीं है । इसमें पारिभाषिक शब्दों का लिप्यन्तरण किया गया है या फिर शब्दों को बहुत कठिन रूप से रूपायित किया गया है । प्रयोजनमूलक भाषा अब बैंकों में, वाणिज्य में, विज्ञान में, पत्रकारिकता में, प्रशासन में और कार्यालयों में राजभाषा के रूप में प्रयोग में आ रही है । परन्तु इसका प्रयोग कठिन हो रहा है । इस प्रयोजनमूलक भाषा को सरल और लचीला बनाने के लिए हमें भाषा के संरचनात्मक एवं व्याकरणिक तत्वों को आधार बनाना होगा । इन दोनों ही पक्षों पर ध्यान रखते हुए प्रस्तुत शोध "हिन्दी के उत्पादक रूपिम : प्रयोजन मूलक आयाम" (संज्ञा, विशेषण और क्रिया के संदर्भ में) विचार किया गया है । प्रस्तुत शोध में प्रयोजनमूलक आयाम में तीन विभिन्न क्षेत्रों का चुनाव किया गया । वैज्ञानिक क्षेत्र के अंतर्गत वनस्पति विज्ञान, प्रशासनिक शब्दावली और बैंकिंग शब्दावली और इन

तीनों क्षेत्रों में उनकी पारिभाषिक शब्दावली का अध्ययन किया गया और कुछ ऐसे शब्दों को चुना गया, जिनमें प्रत्यय, मध्यसर्ग और उपसर्ग जुडे हुएं हैं । इनमें ये जो रूपिम है, वे किस सीमा तक उत्पादक है । यह भी देखा गया और एक पारिभाषिक शब्द जो संज्ञा वर्ग में है उसके विशेषण और क्रिया वर्गों में भी लाने का प्रयत्न किया गया । जिस पारिभाषिक शब्द का वर्ग परिवर्तन कर रहे हैं, इस वर्ग परिवर्तन में यह देखने का प्रयत्न किया जा रहा है कि क्या यह पारिभाषिक शब्द तीन वर्गों में उत्पादक हो रहे हैं या नहीं । अगर उत्पादक हो रहे हैं तो निरूपित कर सकते हैं कि प्रयोजनमूलक भाषा भी पारिभाषिक शब्द होने के बावजूद भी लचीली, लयात्मक और सरल हो सकती है ।

1.1 प्रयोजनमूलक भाषा, स्वरूप और क्षेत्र

प्रयोजनमूलक भाषा, भाषा के व्यवहारिक पक्ष को उजागर करने के लिए प्रयुक्त की गई भाषा का एक रूप है । यह भाषाई रूप सामाजिक, वैज्ञानिक और वैधानिक अवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयुक्त होता है । इसका प्रयोजनमूलक विशेषण इसके व्यवहारिक और कामकाजी पक्ष को अधिक स्पष्ट करता है । इस प्रयोजनमूलक भाषा में दैनिक जीवन में कार्य साधन के लिए प्रयुक्त की जानेवाली हिन्दी को संरचनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है । इसके अंतर्गत संपर्क और संप्रेषण की आवश्यकता होती है । प्रयोजनमूलक भाषा विविध प्रयोजनों में प्रयुक्त होनेवाली भाषा है । इसी कारणवश इसकी भाषा में, वाक् विनियास में, शैली में अंतर होता है । यह भेद क्षेत्र-क्षेत्र के अनुसार बदलता रहता है ।

किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए भाषा के साहित्यिक और साहित्येतर दोनों पक्षों की आवश्यकता हेती है । कोई भी भाषा कितनी भी विकसित क्यों न हो उसका मूल्यांकन उसके साहित्यिक विविधताओं और विषय से संबंधित विचार करने और अभिव्यक्ति प्रकट करने के भाव को प्रकट करता है । भाषा की प्रयोजनमूलक संरचना को सभी क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए । उस क्षेत्र के स्वरूप को कुछ मानदण्डों को रखते हुए उसे अपने साथ लेकर चलना चाहिए और यह भी देखना चाहिए कि क्या इस आधुनिक युग की आवश्यकताओं को

पूरा कर पाएगी या नहीं और भविष्य में इसे और भी प्रगतिपरक बनाने के लिए क्या संभावनाएँ होनी चाहिए, उसे भी ध्यान में रखना होगा ।

प्रयोजनमूलक भाषा के कई रूप सामने आते हैं जैसे कार्यालय भाषा, तकनिकी भाषा और वाणिज्य भाषा, जन संचारी भाषा, साहित्यिक भाषा, वैज्ञानिक भाषा और कार्यालय भाषा । इन सभी क्षेत्रों में भाषा की शैली बदलती रहती है । जैसे शैली बदलती रहती है, ठीक उसी तरह उसकी शब्दावली और वक्य विन्यास भी बदलते है । भाषा और शैली का इस तरह बदलना ही भाषा में नए-नए मोड लाता है । नए मोड लाना ही भाषा का विकास है । और जब यह भाषा विकसित होती है तब ही कुछ ऐसे शब्द इन क्षेत्रों में से उभरकर आते हैं । जो अपने-अपने क्षेत्र के अनुसार उत्पादक होते है ।

भाषा विभिन्न संदर्भों में, विभिन्न क्षेत्रों में और विभिन्न-विभिन्न भाषाई रूपों का प्रयोग किया जाता है । जब भाषा विभिन्न क्षेत्रों और स्वरूपों में प्रयुक्त होती है तब उसे क्षेत्र की प्रयुक्ति कहते हैं । इस प्रयुक्ति की आधार भूमिका भेदीकरण और स्थितियों के संदर्भ माने जाते हैं । इस प्रकार से विभिन्न संदर्भगत और भूमिगत प्रयोगों में भाषा व्यवहार बदलता रहता है । इस बदलाव और भाषाई शैली के लिए अलग-अलग प्रयुक्ति होती है ।

1.2 प्रयुक्ति

व्यक्ति समाज में विभिन्न भूमिकाएँ निभाता है और विभिन्न भूमिकाओं के लिए विभिन्न भाषा रूपों का प्रयोग करता है । व्यक्ति की एक निश्चित सामाजिक भूमिका नहीं होती परन्तु भाषाई प्रयोग की विभिन्न क्षेत्रीय भूमिकाएँ, भाषाई भूमिकाएँ होती हैं । जो भाषाई रूप का प्रयोग किसी विशेष प्रयोजन के लिए किया जाता है उसे विशिष्ट प्रयोजन की भाषा कहते है । इसके तीन भेद हैं –

1. वार्ता क्षेत्र

2. वार्ता प्रकार

3. वार्ता शैली

1.2.1 वार्ता क्षेत्र : जैसे कार्यालय, वाणिज्य, विज्ञान भाषाओं में भाषा एवं शैली का भेद दिखाई देता है और जो भाषा विषय के आधार पर प्रयोक्तियों का निर्माण करती है ऐसी भाषााओं में उनकी पारिभाषिक शब्दावली तथा भाषा संरचना एवं दूसरे से अलग होती है । ऐसी स्थिति में भाषा अपने-अपने क्षेत्र के अनुरूप होती है । उसे वार्ता क्षेत्र कहते है ।

1.2.2 वार्ता प्रकार : इसमें यह देखा जाता है कि भाषा का प्रयोग मौखिक या लिखित रूप में किया जा रहा है । क्योंकि मौखिक भाषा में प्रायः वाक्य रचना पूर्ण नहीं होती । ध्वनि एवं शब्दों का परिवर्तन होता है । जबकि एक लिखित भाषा सुनिश्चित और व्यवस्थित भाषा होती है और जब भाषा अपने प्रकार से बदलती है तो उसे वार्ता प्रकार कहते हैं ।

1.2.3 वार्ता शैली : इस रूप में वक्ता या फिर पाठक लेखक का संबंध बहुत महत्वपूर्ण होता है । क्योंकि यहाँ पर भाषा का प्रयोग सामाजिक संदर्भों में और विभिन्न स्तरों में बतलाता रहता है । जहाँ भाषा कभी सामान्य, कहीं विशिष्ट और कहीं तकनिकी और कहीं वैज्ञानिक और कहीं औपचारिक और कहीं अन-औपचारिक रूप से बदलती है । इसके साथ उसकी शैली भी बदलती रहती है । जैसे शैली बदलती है उसे वार्ता शैली कह सकते है ।

1.3 शोध के आधार : इस शोध में भी प्रयोजनमूलक क्षेत्र के तीन विभिन्न विधाओं को लिया गया । वैज्ञानिक, प्रशसनिक और बैंकिंग । इन विधाओं में सभी शब्द पारिभाषिक एवं तकनिकी है । इन्हीं पारिभाषिक एवं तकनिकी शब्दों में व्यकरणिक तत्वों जैसे प्रत्यय, उपसर्ग आदि को देखा गया और इन पारिभाषिक शब्दों का संज्ञा से विशेषण और विशेषण से क्रिया के विभिन्न वर्गों में बदला गया और यह देखा गया है कि क्या वर्ग बदलने से शब्द उत्पादक बन सकते हैं या नहीं । जैसे हिन्दी

बूढा – बुढापा – बूढा होना आदि

यहाँ पर बूढा शब्द संज्ञा है और इस संज्ञा की विशेषता बतानेवाला शब्द बुढापा है और बूढा होना एक क्रिया की प्रक्रिया है । ठीक इसी तरह से पारिभाषिक शब्दों में भी बदलाव करके इनके प्रत्ययों को उत्पादक बनाने का प्रयास किया जा सकता है ।

जैसे : बलूत – बलूतित – बलूतित होना/करना

यहाँ बलूत वनस्पति विज्ञान का शब्द है । इस शब्द को विशेषण और क्रिया वर्गों में भी प्रस्तुत किया गया है । कुछ प्रत्ययों और उपसर्गों की सहायता से यह संभव है । जैसे बलूत शब्द वनस्पति विज्ञान की प्रयुक्ति में उत्पादित है ।

1.4 दिशा : इस शोध में भाषा के संरचनात्मक और व्याकरणिक रूप को भी और प्रयोजनमूलक तत्वों को दृष्टि में रखकर उनके उत्पादक रूपिमों का व्यवहारिक एवं प्रोक्तिमूलक संदर्भों में विश्लेषण किया गया है । लक्ष्य परम्परित रूपिम एवं नव संकल्पित रूपिमों के प्रयोग एवं संरचनात्मक दिशाओं का निरूपण करना भी रहा हैं ।

1.5 निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में प्रयोजनमूलक हिन्दी किस सीमा तक उत्पादकता के क्षेत्र को आगे बढ़ायेगी और विभिन्न क्षेत्रों में इसका प्रयोग किस तरह रहेगा, उसे देखना लक्ष्य बनाया गया है ।

द्वितीय अध्याय

शब्द : संरचना एवं रूपिम

द्वितीय अध्याय

शब्द : संरचना एवं रूपिम

2.0 प्रस्तावना

शब्द संरचना एवं रूपिम पर उनके भारतीय एवं पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों के विचारों को केन्द्र में रखते हुए इस शोध कार्य को आगे बढाया गया, इस अध्याय के अंतर्गत रूप, रूपिम, संरूप, उपसर्ग, मध्यसर्ग, प्रत्यय आदि पर प्रकाश डाला गया हैं ।

2.1 शब्द

शब्द भाषा की एक महत्वपूर्ण संरचित और अभिव्यक्ति की न्यूनतम इकाई है । शब्द बहुसंयोज ाक भी है । शायद इसी कारण इसे स्पष्टतः परिभाषित करने में कठिनाई उपस्थित होती है । शब्द के भाषाई तत्व की निश्चित परिभाषा संक्षेप में देना भी कठिन है । शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाई है जिससे एक अर्थ की प्रतीति होती है । शब्द के आन्तरिक (Internal) तथा बाहृय (External) भाषाई पक्ष हैं । शब्द को परिभाषित करते समय इसके तीन पक्षों पर ध्यान दिया जाता है । पहला तत्व, दूसरा उच्चारण तथा तीसरा वाक्य में शब्द की व्याकरणिक संरचना । शब्द को प्रायः इन्हीं तीनों आधारों पर परिभाषित किया और परखा जाता रहा हैं । शब्द की अधिकतर परिभाषाएँ उच्चारण अथवा व्याकरणिक आधारों पर मिलती हैं । ध्वन्यात्मक स्तर पर शब्द को एक पूर्ण उच्चार माना जाता है तथा व्याकरणिक स्तर पर शब्द की परिभाषा वाक्य में इसके प्रकार्य के आधार पर होती है । उदाहरण के लिए इस वाक्य को लिजिए **कल शहर में बाजार बन्द रहेगा** । इस वाक्य में शब्द हैं जिन्हें व्याकरण के स्तर पर पद कहा जाता हैं । ये रेखांकित भी हैं क्योंकि बोलते समय प्रत्येक शब्द के बाद व्यक्ति रुकता है - यह एक "उच्चार" होगा ।

2.1.1 शब्द और संस्कृत आचार्य दृष्टि

यास्क ने शब्द को भाषा की मूल वस्तु और खण्डनीय माना । उनके अनुसार शब्द की आदि

इकाई को प्रकृति और शब्द के अंतिम इकाई को प्रत्यय माना । यास्क के अनुसार प्रकृति मूल रूप प्रदान करती है और प्रत्यय से शब्द की आकृति की पहचान होती हैं । निरुक्त की भाषा में धातु को **अख्यात** तथा प्रतिपादिक को **नाम** कहते हैं ।*1

पाणिनी ने स्वतंत्र रूप में शब्द को भाषा व्यवस्था की एक संरचनात्मक इकाई के रूप में देखा और प्रयोग के स्तर पर उन्होंने उसे भाषा की प्रयोगात्मक इकाई - "पद" के रूप में माना । पद से उनका तात्पर्य था एक ऐसी इकाई जो चल सके अर्थात् समय परिवर्तन के साथ-साथ जिसके विभिन्न रूप प्रयोग में आ सकें । "पद का शाब्दिक अर्थ है "चलायमान", अथवा जो चल सके । दूसरे शब्दों में पाणिनि के अनुसार पद भाषा की वह इकाई है जो भाषा व्यवस्था में एक विशिष्ट व्याकरणिक भूमिका निभाती है । समय तथा संदर्भ के अनुरूप यह अपना रूप धारण करती है । पाणिनि ने अर्थ -विश्लेषण के लिए अपने शास्त्र में पद के साथ पदांश और वर्ण की भी अर्थवत्ता मानी है । पाणिनि के अनुसार पद की प्रयोगात्मक भूमिका निभानेवाली सरंचनात्मक इकाई शब्द है जो स्वयं कुछ न्यूनतर इकाइयों के योग से निर्मित होती है । यास्क के दिये गये आधारों पर पाणिनि ने भी शब्द को एक खण्डनीय संरचनात्मक इकाई मानी जिसके दो खण्ड स्वीकार करते हैं ।

1. प्रकृति (मूल)
2. प्रत्यय

प्रकृति के दो वर्ग माने, पहला धातु (जो क्रिया शब्द को सम्बोधित करता है), दूसरा प्रातिपादिक (जो संज्ञा शब्दों को सम्बोधित करता है) । पाणिनि ने स्पष्ट रूप से बताया कि धातु की तरह प्रातिपादिक भी मूल शब्द है । उन्होंने यह भी कहा कि कोई कारण नहीं कि सब शब्दों को मूल धातु ही मानें, आरम्भ से ही दोनों (धातु व प्रातिपादिक) मूल शब्द रहे होंगे ।*2

---

1. **पाणिनि व्याकरण में प्रजनन प्रविधियाँ** (1976) - डॉ. रमानाथ शर्मा - से उद्धृत
2. **पाणिनि व्याकरण में प्रजनन प्रविधियाँ** (1976) - डॉ. रमानाथ शर्मा और पाणिनि व्याकरण की भूमिका (1983) डॉ. वी कृष्णा स्वामी आयंगार

पतंजलि ने शब्द को कर्ण से प्राप्त, बुद्धि से ग्राहय, प्रयोग से प्रस्फुरित होनेवाली ध्वनि माना जिसके बोलने से अर्थ की प्रतीति हो वही शब्द है । संक्षेप में पतंजलि ने शब्द को भाषा की एक उच्चरित, श्रव्य, बुद्धिग्राहा अर्थबोधक तथा भाषा की संरचनात्मक व्यवस्था की एक अर्थवान इकाई मानी । अतः पतंजलि के अनुसार भी आन्तरिक स्तर पर शब्द ध्वनित व अर्थपूर्ण है । तथा बाहय स्तर पर शब्द वाक्य में पद की भूमिका निभाता है ।*3

भाषा को लेकर **भतृहरि***4 का चिंतन भाषा की संरचनात्मक व्यवस्था से अधिक भाषा दर्शन पर केन्द्रित था । इसीलिए शायद उन्होंने शब्द को "ब्रम्ह" के रूप में देखा । भतृहरि के लिए शब्द भाषा की एक केन्द्रीय इकाई है । उनके अनुसार शब्द "सर्वबीज" है । सर्वबीज से उनका तात्पर्य भाषा के उस तत्व से है जो मूलतः एक होते हुए भी प्रयोग के स्तर पर अलग रूपों में प्रस्तुत होता है ।

अधिकतर भारतीय विद्वान पतंजलि व भतृहरि की परिभाषाओं में शब्द को ब्रम्ह, अर्थात् भाषा की एक केन्द्रीय संरचनात्मक इकाई मानते हैं । भोलानाथ तिवारी ने शब्द को भाषा की नींव मानी और भाषा में केन्द्रीय माना । डॉ. नरेश मिश्र, हिन्दी शब्द समूह का विकास (1987, नटराज पब्लिकेशन), प्रो. अमरनाथ पाण्डेय, शब्द विमर्श (1988, नटराज एण्ड सन्स), डॉ. पाण्डेय ब्रजमोहन, शब्द चर्चा (1986, राजकमल प्रकाशन), डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया, शब्द श्री (1978, शांति पब्लिकेशन), डॉ. किशोरी लाल वाजपाई, हिन्दी व्याकरण, (1978, मीनाक्षी प्रकाशन), डॉ. विजय पाल सिंह, सामान्य हिन्दी (1981, हिन्दी प्रचाारक संस्थान), आदि विद्वानों के अध्ययनों में भी समय के अनुसार, परिवेश के अनुसार और संदर्भ के अनुसार शब्द को रूप व अर्थ को धारण कर लेने की बात मिलती है । कुछ भाषा शास्त्रियों ने शब्द के ही मूल व मुख्य रूप माना । विभिन्न व्याकरणिक अवयवों को जोड़कर इसी शब्द को कभी विस्तृत कभी संकुचित बनाया गया । संक्षेप में भारतीय परंपरा में अर्थ के स्तर पर जहाँ एक धारा शब्द को भाषा व्यवस्था की एक केन्द्रीय इकाई मानती है वहीं दूसरी धारा संरचनात्मक स्तर पर शब्द को एक खण्डनीय इकाई के रूप में ग्रहण करती है ।

---

3. **पाणिनि व्याकरण में प्रजनन प्रविधियाँ** (1976) - डॉ. रमानाथ शर्मा - से उद्धृत
4. **"VAKYAPADIYAM"** डॉ. सत्याकम वर्मा, (1970)

2.1.2 शब्द और पाश्चात्य आचार्य दृष्टि

पाश्चात्य परंपरा में शब्द की परिभाषाएँ कुछ इस प्रकार की मिलती हैं :

F.R. Palmer : (Grammar, 1971) शब्द को भाषा की लघुतम इकाई मानते हैं । जो एक पूर्ण उच्चार के रूप में काम कर सकें ।*5

Ulman : (The language of Phoenetics, 1947) के अनुसार शब्द भाषा की लघुतम महत्वपूर्ण इकाई है ।*6

Entwistle : (Language of Linguistics, 1947) ने शब्द को विचार व अर्थ की स्वतंत्र इकाई मानी ।*7

S.Morris : (Language, 1934) शब्द को अर्थ व ध्वनि के समूह का ऐसा योग मानते हैं जिसका व्याकरणिक प्रयोग हो सके ।*8

Sweet : (Grammar, 1971) ने भी शब्द को लघुतम अर्थवान इकाई माना ।*9

2.1.3 हिन्दी के वैयाकरणों की दृष्टि में शब्द

प्रसिद्ध हिन्दी भाषा वैयाकरणिक कामता प्रसाद गुरु के अनुसार "एक या अधिक अक्षरों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं" (गुरु 1977, पृ.सं. 53) । इस परिभाषा में ध्यान देने की बात यह है कि गुरु ने "ध्वनि" शब्द का प्रयोग प्रचलित अर्थ "मात्र ध्वनि" के संदर्भ में न करके उच्चार (ध्वनि श्रृंखला) के अर्थ में किया है । इस परिभाषा के अनुसार शब्द एक या उससे अधिक

5. Word is the minimal unit of lang.
6. Word is the most Important and minimal unit of Language
7. Word is a meaningful, sensable Independent of the Language
8. Word is the combination of meaning and phoenix, which is associated in the Language
9. Word is a meaningful and minimal unit

उच्चरित ध्वनि समूह है जो अर्थ के स्तर पर स्वतंत्र है । अर्थात् एक शब्द से एक ही अर्थ व्यक्त होता है । कामताप्रसाद गुरु शब्द की परिभाषा में "स्वतंत्र" शब्द पर प्रकाश डालते हुए आगे लिखते हैं कि अर्थ "शब्द के लक्षण में स्वत्रंत्र शब्द रखने का कारण यह है कि भाषा के कुछ अंग ऐसे होते हैं, जिनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता । जब वे शब्दों के साथ जोड़ी जाती हैं तब सार्थक होती हैं । ऐसी परतंत्र ध्वनियों को शब्दांश कहते हैं । जैसे "पन", "ता", "ने", "को", इत्यादि इन्हीं को आधुनिक भाषा विज्ञान में बद्ध रूपिम कहा गया है (Bound Morpheme) । जब ये शब्दांश किसी शब्द के पहले जोड़े जाते हैं तो उन्हें उपसर्ग कहते हैं, जो शब्दांश शब्द के पीछे जोड़े जाते हैं वे प्रत्यय कहलाते हैं (गुरु 1977, 53) । गुरु की परिभाषा में शब्द एक अर्थपूर्ण इकाई है जिसकी पहचान उच्चार के आधार पर होती है । वास्तविकता यह है कि विभिन्न व्याकरणिक भूमिका निबाहनेवाले ये प्रत्यय, उपसर्ग, परसर्ग, शब्दांश इत्यादि भी अर्थपूर्ण हैं । किसी भी भाषा में आनेवाले बहुवचन प्रत्यय बहुवचन का अर्थ रखते हैं । इसी प्रकार परसर्ग 'ने' हिन्दी में विशेष संज्ञा के वाक्य में कर्ताकारक होने का अर्थ संप्रेषित करता है । शब्दांश के अर्थतत्व को लेकर उनका जो भी मत हो, एक बात जो गुरु की शब्द की परिभाषा से स्पष्टतः दर्शित होती है वह यह कि गुरु शब्द को एक ही उच्चार मानते हैं तथा वह शब्द को "उच्चार" के आधार पर परिभाषित करते हैं ।

अतः इस धारा के चिंतक शब्द को भाषा की न्यूनतम अर्थपूर्ण संरचनात्मक इकाई के रूप में देखते हैं ।

दूसरी ओर संरचनात्मक भाषा वैज्ञानिक स्पष्टतः शब्द को एक खण्डनीय संरचनात्मक इकाई के रूप में देखते हैं । वास्तविकता यह है कि ब्लूमफील्ड इत्यादि संरचनात्मक भाषा वैज्ञानिक शब्द को लेकर उतने विचारशील नहीं थे जितने कि "रूप" को लेकर, तथा भाषा संरचना के जिन स्तरों पर वे चिंतन कर रहे थे वे ध्वनि, रूप व वाक्य थे । बल्कि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ध्वनि तथा रूप के क्षेत्र में उनका चिंतन अधिक केन्द्रित था । यह काल कहीं पाणिनि के चिंतन से भी प्रभावित था और भाषा व्यवस्था को लेकर उसी चिंतन धारा में बह रहा था ।

ब्लूमफील्ड (Bloom Field, 1933) के अनुसार शब्द एक - न्यूनतम मुक्त रूप है ।*10 तथा नाइड़ा (Nida) के अनुसार शब्द रूपिमों के योग से बनी एक अर्थपूर्ण इकाई है (नाइडा 1945, 1)

ऊपर दी गई विभिन्न परिभाषाओं के आकलन से एक बात स्पष्टतः उभर कर आती है कि शब्द को परिभाषित करने की दो स्पष्ट धाराएँ है । एक वह जहाँ शब्द भाषा की न्यूनतम अर्थपूर्ण संरचनात्मक इकाई के रूप में स्वीकार किया गया है तथा प्रयोग के स्तर पर इसमें आनेवाले परिवर्तनों को शब्द का विस्तार माना है । इन विद्वानों के अनुसार शब्द भाषा की एक केन्द्रीय इकाई है । दूसरी ओर वे विद्वान हैं जो शब्द को भाषा की संरचनात्मक इकाई तो मानते हैं परन्तु संरचना की दृष्टि से उनके अनुसार यह न्यूनतम अर्थपूर्ण इकाई नहीं है । अपितु अर्थ के स्तर पर यह एक खण्डनीय इकाई है । प्रयोग के स्तर पर शब्द में प्रकट होनेवाली संरचनात्मक विविधताएँ शब्दों के विभिन्न संरचनात्मक घटकों के योग का परिणाम है ।

इस धारा में भी दो दिशाएँ दिखती है । एक उन भारतीय विद्वानों (पाणिनि, यास्क, पतंजलि) की जिन्होंने शब्द के खण्डों को गुणात्मक दृष्टि से दो अलग वर्गों में विभाजित किया है : प्रकृति और प्रत्यय । उदाहरण के रूप में "सुन्दरता" शब्द में पहला खण्ड "सुन्दर" प्रकृति है दूसरा खण्ड "ता" प्रत्यय है । अर्थात् शब्द के खण्डों में एक "मूल" है और दूसरा उसका विस्तार । दूसरी ओर संरचनात्मक भाषा वैज्ञानिकों (ब्लूमफील्ड, नाइडा) ने श्ब्द के न्यूनतम खण्डों के रूप में "रूप" को माना । जहाँ भाषा की न्यूनतम अर्थपूर्ण इकाई "रूपिम" मानी गई । रूप के प्रकार प्रकार्य की दृष्टि से तो परिभाषित हैं परन्तु गुणात्मक दृष्टि से नहीं । अतः ऊपर दिये गये उदाहरण में सुन्दर तथा ता दोनों ही रूप हैं ।

संरचनात्मक भाषा विज्ञान काल में शब्द रूपों के योग से बनी एक संरचनात्मक इकाई के रूप में परिभाषित होता रहा । रूपांतरण प्रजनन व्याकरण के उद्‌गम के साथ भाषा व्यवस्था के अध्ययन

10. "Minimal free form", (1933) Language.

में विन्यासात्मक प्रक्रियाओं को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा । इस काल में शब्द को कुछ न्यूनतर इकाइयों के योग से संरचित एक इकाई मानकर इस की संरचनात्मक इकाईयों तथा प्रक्रियाओं के अध्ययन पर अधिक बल दिया जाने लगा । संरचनात्मक काल में अर्थतत्व की दृष्टि से खो चली "मूल शब्द" की अवधारणा इस काल में एक बार फिर Lexeme कोशीय शब्द के रूप में उभर कर आई । Lexeme वह कोशीय शब्द है जो भाषा में अर्थ की दृष्टि से स्वतंत्र है तथा प्रयोग के स्तर पर विभिन्न संरचनात्मक प्रक्रियाओं से होकर यह वाक्य की इकाई या पद बन जाता है । शब्द संरचना की प्रक्रिया कोशीय शब्द में विभक्ति प्रत्यय का योग कर पद बनाती है । उदाहरण के लिए हिन्दी शब्द लड़का, लड़के, लड़कों आदि पदों का कोशीय शब्द लड़का है । कोशीय शब्द 'लड़का' में विभिन्न वचन आदि के प्रत्यय जुड़ कर लड़का, लड़के तथा लड़कों आदि पद रूपों का निर्माण होता है । रूपांतरण प्रजनन व्याकरण की यह अवधारणा बहुत कुछ संस्कृत की प्रकृति+प्रत्यय की परम्परा के निकट है । उपर्युक्त विवेचन के आधार पर जो निष्कर्ष निकलता है उसके सूत्र इस प्रकार है :

1. शब्द भाषा की एक श्रव्य इकाई है ।
2. शब्द अर्थपूर्ण है पर वांचित सम्प्रेषण की दृष्टि से यह न्यूनतम इकाई नहीं हैं ।
3. क्योंकि अर्थ की दृष्टि से यह न्यूनतम नहीं है अत: यह मानना होगा कि इसकी कुछ अन्य संबंध इकाईयाँ भी है ।
4. फलत: यह कहा जा सकता है कि शब्द कुछ अर्थपूर्ण संरचनात्मक इकाईयों के योग से निर्मित एक संरचनात्मक इकाई है ।

संक्षेप में शब्द को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है कि शब्द भाषा की एक श्रव्य अर्थपूर्ण खण्डनीय संरचनात्मक इकाई है जो कुछ अन्य अर्थपूर्ण इकाईयों के योग से बनता है । इसके विभिन्न अर्थपूर्ण खण्ड विभिन्न संदर्भों में इसको विशिष्ट अर्थ प्रदान करते हैं । "शब्द" से संबंधित दो अन्य बातें जो ऊपर दी गई परिभाषाओं से उभरती हैं वे हैं :

1. शब्द कुछ न्यूनतर इकाईयों के योग से बनता है जो कुछ विद्वानों के अनुसार प्रकृति, प्रत्यय, रूप इत्यादि है ।
2. इन इकाईयों का योग कुछ प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है ।

2.2 शब्द की संरचनात्मक इकाईयाँ

पिछले अनुभाग में यह स्पष्ट किया गया है कि शब्द कुछ अर्थवान् इकाईयों के योग से बनी एक संरचनात्मक इकाई है । प्रस्तुत खण्ड में इन्हीं इकाईयों का एक संक्षिप्त विवरण है । शब्द को परिभाषित करते समय यह स्पष्ट हो गया था कि प्राचीन भारतीय वैयाकरणिक शब्द की न्यूनतम इकाइयों पर चिंतन कर रहे थे । यास्क तथा पाणिनि दोनों ही शब्द को प्रकृति एवं प्रत्यय का योग मानते थे ।

2.2.1 प्रकृति तथा प्रत्यय

जैसा कि पहले बताया गया पाणिनि के अनुसार प्रकृति, प्रत्यय दोनों ही अर्थवान हैं । पाणिनि ने अर्थ विश्लेषण की सुविधा के लिए अपने शास्त्र में पद के साथ पदांश और वर्ण की भी अर्थवत्ता मानी है । उन्होंने कहा कि पद की प्रयोगात्मक भूमिका निभानेवाली संरचनात्मक इकाई शब्द है ।

उन्होंने प्रकृति (धातु या प्रातिपदिक) तथा प्रत्यय दोनों को ही अर्थवान व मूल माना । यास्क ने भी शब्द को भाषा की मूल वस्तु माना । उन्होंने शब्द आदि को प्रकृति व अंत को प्रत्यय माना । उनके अनुसार प्रकृति मूल रूप प्रदान करती है और प्रत्यय से शब्द के अर्थ की आकृति की पहचान होती है । इसी अर्थतत्व को पतंजलि ने मौलिक, और संबंध तत्व को यौगिक माना । अतः कहा जा सकता है कि प्रकृति ही मूल है और यही मौलिक । और प्रत्यय ही यौगिक व संबंध तत्व है ।

क) **प्रकृति के भेद** : प्राचीन भारतीय भाषा वैयाकरण ने प्रकृति के दो भेद माने हैं :

1. **धातु** - जो क्रिया के मूल शब्द को संबोधित करता है ।
2. **प्रातिपादिक** - जो संज्ञा के मूल शब्द को संबोधित करता है ।

ख) **प्रत्यय के भेद** : मुख्य रूप से प्रत्यय के तीन भेद माने गये हैं :

2.2.2 **प्रत्यय** : प्रकृति के अंत में जुड़ने वाले तत्व को प्रत्यय कहते हैं । उदाहरण के लिए हिन्दी शब्द 'सुन्दरता' में "सुन्दर" प्रकृति शब्द है और "ता" संबंध तत्व है अर्थात "प्रत्यय" है ।

2. **मध्य सर्ग** - प्रकृति के मध्य में जुड़ने वाले तत्व को मध्य सर्ग कहते हैं ।

उदाहरण :

कुन्ती - कौंतेय

दशरथ - दाशरथी

लिख - लेख

दिख - देख

मिल = मेल (म्+इ+ल्)

प्रस्तुत उदाहरण में मध्यसर्ग

अ = म्+अ+इ+ल् है

गुण - संधि के नियमों के परिणाम स्वरूप जो अ+इ = ए में परिवर्तित हो जाता है ।

अत: मिल+मध्यसर्ग 'ए' = मेल

2.2.3. उपसर्ग

प्रकृति के आरंभ अथवा आदि में जो तत्व जुडते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं । उपसर्ग का शाब्दिक अर्थ है उप = पास, सर्ग = सृष्टि । जो शब्द के निकट पहुँच कर उसमें कुछ नीवनता लाता है और नवीन शब्दों की सृष्टि करता है वह उपसर्ग कहलाता है । उपसर्ग शब्द को अर्थ की दृष्टि से विस्तृत करने की भूमिका भी निभाता है । उदाहरण:

निर्बल = निर् + बल

प्रस्तुत उदाहरण में **बल** श्ब्द के आगे **निर्** उपसर्ग के योग से "निर्बल" शब्द का निर्माण होता है । "बल" शब्द का अर्थ हिन्दी में "शक्ति" है तथा "निर्" उपसर्ग "नकारात्मक" अर्थ लिए हुए

होता है । फलस्वरूप "बल" के पूर्व आकर "निर्" "निर्बल" शब्द बनता है जो अर्थ की दृष्टि से बल से पूर्णतः विरोधी है । "निर्बल" का अर्थ बलहीन अर्थात् "कमज़ोर" होता है ।

2.3 भारतीय आचार्यों के विचार

यास्क, पाणिनि आदि में अंतर : यास्क ने शब्द को भाषा का मूल रूप माना, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, उन्होंने शब्द की आदि को प्रकृति तथा अंत को प्रत्यय माना । यास्क ने प्रत्येक शब्द में प्रकृति को ढूँढने का प्रयत्न किया, प्रत्यय को उतना महत्व नहीं दिया । परंतु पाणिनि ने प्रत्यय को मुख्य माना, उनका यह मानना था कि शब्द में अर्थ की प्रतीति वस्तुतः प्रत्यय ही कराता है । यदि प्रत्यय का योग नहीं होता है तो केवल धातु व प्रातिपदिक पूर्ण अर्थ सम्प्रेषित नहीं कर पाते । प्रत्यय ही शब्द को संदर्भ के अनुरूप रूप प्रदान करते हैं तथा उनमें अर्थ को पूर्णता लाते हैं । इसी कारणवश पाणिनि ने प्रत्यय को मुख्य स्थान दिया तथा धातु व प्रातिपदिक को गौण माना ।

पाणिनि ने शब्द के संदर्भ में चार भेद बताये

1. वृत्ति - इसमें धातु व प्रातिपदिक कुछ नये-नये शब्द अर्जित करते हैं ।
2. कृत - धातु में व्युत्पादक प्रत्यय के योग से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं । उसी कृदन्त का लघु रूप कृत है ।
3. तद्धित - प्रातिपदिक में जब प्रत्यय जोडे जाते हैं तो उसे तद्धित कहते हैं ।
4. समास - दो या दो से अधिक शब्दों का योग समास कहलाता है ।

   यास्क ने समास में दो संज्ञाओं को लिया :

   क कर्म - क्रिया व कार्य के अर्थ को स्पष्ट रूप से बताया है ।

   ख अभ्यास - इसका तात्पर्य है आवृत्ति से । यास्क के अनुसार अभ्यास पर्याय के रूप में काम करता है ।

पाणिनि ने अपनी सुविधा के अनुसार कार्य व अभ्यास को समास के अंतर्गत मुख्य माना ।

उन्होंने धातु के पूर्व भाग को कर्म व धातु के उत्तर भाग को अभ्यास माना । पाणिनि ने लक्ष्य के साथ लक्षणों को भी देखा तथा शब्द विकास के साथ शब्द विकास के नियमों व प्रवृत्तियों की भी व्याख्या की । पाणिनि ने यह भी कहा कि आरंभ से ही रूप विज्ञान में अधिकार प्रत्ययों का चला ।

2.4 रूप, रूपिम, संरूप

भारतीय वैयाकरणिक परंपरा ने आरंभ से ही शब्द के दो तत्व माने प्रकृति व प्रत्यय । यह अर्थतत्व की दृष्टि से भिन्न-भिन्न है । परंतु नाईडा इत्यादि पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ने शब्द को भाषा की एक खण्डनीय संरचनात्मक इकाई माना । नाईडा, ब्लूमफील्ड इत्यादि विद्वानों ने भाषा में शब्द की न्यूनतर अर्थवान इकाई "रूप" को माना ।

"रूप" भाषा की न्यूनतम अर्थवान इकाई है । आधुनिक भाषा विज्ञान में भाषा में संरचनात्मक स्तर पर ध्वनि से बड़ी इकाई "रूप" मानी गई है । प्रकार्य की दृष्टि से रूप के दो भेद होते हैं ।

क) रूपिम और संरूप

रूपिम : रूपिम भाषा में न्यूनतम अर्थपूर्ण इकाई है । यह भाषा विशेष के संदर्भ में देखी जाती है । इसकी एक विशेषता यह भी है कि वितरण के आधार पर यह मुक्त वितरण में होती है ।

रूपिम की सर्वाधिक स्वीकृत एवं प्रचलित परिभाषा ब्लूमफील्ड (BloomField, 19333) के द्वारा दी गई है । ब्लूमफील्ड के अनुसार "एक ऐसा भाषाई रूप जो किसी अन्य रूप में आंशिक, ध्वन्यात्मक, अर्थात्मक साम्यता न रखता हो वह रूपिम है"*11 (इस परिभाषा के अनुसार रूपिम भाषा की एक ऐसी इकाई है जो अर्थ की दृष्टि से स्वतंत्र है । ब्लूमफील्ड की यह परिभाषा बाद में नाईडा के द्वारा अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित की गई । नाईडा (1946) के अनुसार "रूपिम वे न्यूनतम अर्थपूर्ण इकाईयाँ

---

11. "A lingutic form which bears no partial phonetic, semantic resemblance to any other form is .... morpheme." Language, ब्लूमफील्ड पृ.सं. 161, 1933.

है जो शब्द अथवा शब्दांशों का निर्माण कर सकें ।"*12 संक्षेप में रूपिम भाषा की न्यूनतम इकाई है । यह भाषा विशेष के संदर्भ में देखी जाती है । इसकी एक विशेषता यह भी है कि वितरण के आधार पर यह मुक्त वितरण में होती है ।

नाईडा (1970) - के अनुसार रूपिम यह भाषाई रूप है जिसकी भाषा विशेष में उस भाषा के अन्य रूपों से किसी प्रकार की ध्वन्यात्मक अथवा अर्थगत समानता नहीं होती । उन्होंने यह भी कहा कि शब्द का निर्माण रपिमों के योग से होता है । रूपिमों को सुनिश्चित ढंग से रखने से ही पद बनता है ।

वी एडम्स - (Papers on linguistics, 1948) के अनुसार रूपिम एक व एक से अधिक ऐसे रूपों का समूह है जो भिन्न-भिन्न संदर्भों में एक ही अर्थ एवं एक ही प्रकार्य के लिए प्रयोग किये जाते है ।

ब्लाक - (1947) के अनुसार कोई भी भाषाई रूप चाहें मुक्त हो या बद्ध और जिसे लधुतर अर्थवान रूपों में खण्डित नहीं किया जा सके वही रूपिम है ।

संरूप : भाषा में कभी-कभी दो या उससे अधिक रूप जिनका एक ही अर्थ निकलता हो, तथा वे परिपूरक वितरण में हो संरूप कहलाते हैं । ये दोनों रूप एक ही परिवेश व संदर्भ में नहीं आते, अपितु मिलकर वे दोनों एक रूपिम के सभी संभव संदर्भों को पूरा करते हैं । उदाहरण के लिए हिन्दी में स्त्रीलिंग बहुवचन प्रत्यय शब्दों में निम्नप्रकार से परिलक्षित होते है :

---

12. "Morphemes are the meaningful lunits which may constitute words or parts of words" (1946) नाईडा पृ.सं.1

एकवचन	-	बहुवचन
बेल	-	बेलें
लता	-	लताएँ
मुद्रा	-	मुद्राएँ
वस्तु	-	वस्तुएँ
बहू	-	बहुएँ
चूड़ी	-	चूड़ियाँ
लड़की	-	लड़कियाँ
बिल्ली	-	बिल्लियाँ

यहाँ हम देखते हैं कि ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में अविकारी बहुवचन प्रत्यय "आँ" आता है तथा व्यञ्जनान्त एवं आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में वही अविकारी बहुवचन प्रत्यय "एँ" के रूप में आता है। ऊपर दिए गए शब्दों में "आँ" एवं "एँ" दोनों ही रूपों का अर्थ एक ही है परन्तु संदर्भ अलग-अलग हैं, इस प्रकार यह रूप परिपूरक विवरण में है। अतः एक ही रूपिम अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग रूपों में प्रकट हो सकता है। वे सभी रूप जो एक ही अर्थ के बोधक हों एक ही रूपिम के संरूप कहलाते हैं। ऊपर के उदाहरण में हिन्दी के स्त्रीलिंग अविकारी बहुवचन रूपिम के दो संरूप हैं - "आँ" एवं "एँ" जो ध्वन्यात्मक संदर्भों से प्रतिबन्धित हैं।

ख) रूपिम के दो प्रकार माने जाते है :

2.4.1 **मुक्त रूपिम** : मुक्त रूपिम वह है जो वाक्य में अकेले या अलग से या स्वतंत्र रूप से आ सकें। यह अन्य रूपिमों के साथ भी प्रयोग में आ सकते हैं। उदाहरण : सुन्दर, राजा, माता, पिता, मुख।

2.4.2 बद्ध रूपिम : वह रूपिम हैं, जो वाक्य में स्वतंत्र रूप से न आ सकें । प्रयोग के स्तर पर जिन्हें सदैव किसी अन्य रूपिम से जुड़ना पड़े । उदाहरण के लिए हिन्दी शब्द **मनुष्यता** में मनुष्य एक मुक्त रूपिम है तथा **-ता** प्रत्यय एक बद्ध रूपिम । **-ता** प्रत्यय वाक्य में स्वतन्त्र रूप से नहीं आ सकता । प्रत्यय एवं उपसर्ग मध्य सर्ग इसी प्रकार के रूपिम माने जाएगे ।

2.5 निष्कर्ष

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष यह निकलता है कि शब्द की संरचनात्मक इकाईयाँ मूलतः वे संरचनात्मक तत्व हैं जो शब्द को अर्थ तत्व तथा व्याकरणिक तत्व प्रदान करते हैं । संस्कृत परंपरा में ये प्रकृति एवं प्रत्यय के रूप में परिभाषित है तथा आधुनिक भाषा वैज्ञानिक परम्परा में इन्हें रूप, रूपिम, संरूप के रूप में देखा जाता है । शब्द इन्हीं अवयवों के संयोग से निर्मित होता है ।

तृतीय अध्याय

शब्द संरचना की प्रक्रियाएँ : उत्पादकता

3.1.1 **प्रत्यययोजन** : जैसा की नाम से स्पष्ट है प्रत्यययोजन संरचना की वह प्रक्रिया है जिसमें मूल शब्द (प्रकृति अथवा रूपिम) में प्रत्यय (एक अन्य रूपिम) का योजन हो । प्रकार्य के आधार पर प्रत्यय दो भागों में विभाजित किये जाते है ।

1. रूपसिद्धि अथवा विभक्ति प्रत्यय
2. व्युत्पादक प्रत्यय

विभक्ति प्रत्यय : विभक्ति प्रत्यय योजन नये शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया नहीं है बल्कि ये प्रक्रिया वाक्य में शब्द के प्रकार्य के अनुरूप शब्द को रूप प्रदान करती है । मूलांश के अर्थ में विभक्ति प्रत्यय परिवर्तन नहीं लाते ।

उदाहरण :

क) लड़का भोजन करेगा ।

ख) लड़की भोजन करेगी ।

दोनों ही वाक्यों में हिन्दी के क्रियारूप **'कर'** के भिन्न-भिन्न रूप प्रकट होते हैं । शब्द "करेगा" एवं "करेगी" में मूलांश एक ही है, क्रिया 'रूप' कर जिसका अर्थ क्रिया का सम्पादन है । दानों शब्दों के अन्य प्रत्यय अलग-अलग हैं । "-गा" "-गी" । यदि इन दोनों शब्दों का अर्थ के आधार पर विश्लेषण करें तो निम्नलिखित विश्लेषण होता है ।

करेगा	करेगी
'कर' क्रिया रूप	'कर' क्रिया रूप
भविष्यकाल	भविष्यकाल
एकवचन	एकवचन
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग

इस विश्लेषण से ये स्पष्ट है कि, दोनों शब्द रूपों में मात्र एक अर्थमूल्य "लिंग" का अन्तर है अन्यथा ये एक ही अर्थ संप्रेषित करते हैं । मूल क्रिया "कर" के साथ जो अन्य तत्व यों जुड रहे हैं वे कर्ता के वचन, लिंग एवं क्रिया के संपन्न होने के लिए हैं । इन तीन तत्वों में से दो (एकवचन तथा भविष्यत काल) शब्दों - करेगा एवं करेगी - में समान हैं । भविष्यतकाल सूचक प्रत्यय हिन्दी में -ग है, तथा एकवचन प्रत्यय*[1] हिन्दी में क्रिया में काल, वचन, लिंग आदि के योजन का क्रम है ।

क्रि + काल + [लिंग / वचन]

अतः वाक्य क एवं ख में क्रमशः दिए गए क्रिया शब्द "करेगा" तथा "करेगी" के रूप निम्न प्रकार से व्युत्पादित होंगे :–

क) कर + ग + पुलिंग एक वचन प्रत्यय-आ = करेगा

ख) कर + ग + स्त्रीलिंग एक वचन प्रत्यय-ई = करेगी

यहाँ **कर** एवं **गा** के मध्य **ए** स्वर पुरुष का सूचक है । इस प्रकार **क** एवं **ख** वाक्यों के क्रिया रूपों में रूप का अन्तर व्याकरणिक प्रकार्य के कारण है तथा मूलांश **कर** का प्रकार्य (क्रिया) एवं अर्थ एक ही है । सारांश यह है कि विभक्ति प्रत्यय मूलांश में रूपसिद्धि तत्व हैं जो मूलांश में अतिरिक्त व्याकरणिक सूचना जोड़ते हैं ।

इसी प्रकार हिन्दी शब्दों लड़कों, किताबों में "-ओं" प्रत्यय मूलांश को बहुवचन रूप प्रदान करता है और यह कारकीय प्रत्यत्य संयोगार्थ संपन्न होता है । प्रत्यय लगाकर वाक्य के किसी घटक को वाक्य रचना के अनुरूप बनाने की प्रक्रिया ही रूपसिद्धि या विभक्ति कहलाती है । जैसे काल, वचन, लिंग इत्यादि के स्तर पर, उदाहरण

जाऊँगा जाऊँगी

---

1. हिन्दी वाक्य विन्यास नियमों के अनुसार क्रिया वाक्य की किसी न किसी संदर्भ के लिंग वचन लेती है ।

लड़का लड़की

शेर शेरनी

ये शब्द में जुड़कर नये शब्द को नया रूप देते हैं तथा किसी भी शब्द के शब्दिक रूपिम या मूल शब्द में अर्थ परिवर्तन किए बिना शब्द को अतिरिक्त व्याकरणिक सूचना प्रदान करते हैं । उदाहरण पढ़ते - पढ़ो - पढ़ ।

ऊपर के उदाहरण में मूल प्रकृति **पढ़** है और विभिन्न विभक्ति रूप इसको विविध रूप प्रदान करते हैं । जो विशिष्ट संदर्भ में विशिष्ट अर्थतत्व प्रदान करते हैं । विभक्ति **रूप** में मूल प्रकृति अर्थ की दृष्टि से एक ही रहते हैं ।

व्युत्पादक प्रत्यय : विभक्ति प्रत्यय के समान व्युत्पादक प्रत्यय भी मूलांश (मूल शब्द) अथवा शब्द में जुड कर शब्द रूप निर्मित करते हैं परन्तु इनका प्रकार्य सर्वथा भिन्न है । यह किसी भी शब्द का व्याकरणिक वर्ग परिवर्तित करने के साथ उसके अर्थतत्व में भी परिवर्तन लाते हैं । उदाहरण

बच्चा बचपन

ऊपर के उदाहरण में **बच्चा** रूप में **-पन** प्रत्यय जुड़ता है तो **बच्चा** से बचपन बनता है । व्युत्पादक प्रत्यययोजन प्रक्रिया में शब्द का रूप वर्ग बदल जाता है । जातिवाचक संज्ञा शब्द बच्चा है - पन प्रत्यय के योग से भाववाचक संज्ञा बन जाता हैं । जैसे सुन्दर शब्द विशेषण है और अगर इसमें **-ता** अथवा **-पन** और -ई प्रत्यय जोड़ दें तो सुंदरता, सुन्दरपन और सुन्दरी आदि संज्ञा श्ब्द बन जाते हैं । इन शब्दों का व्याकरणिक वर्ग परिवर्तित हो जाता है ।

अत: विभक्ति प्रत्यय जहाँ मूल शब्द को मूलार्थ बनाए रखते हुए वाक्य में प्रयोग के लिए आवश्यक व्याकरणिक तत्त्व प्रदान करते हैं वहीं व्युत्पादक प्रत्यय शब्द का रूप एवं वर्ग परिवर्तन कर

एक नया शब्द निर्मित करते हैं । इन दोनों प्रकार के प्रत्ययों में एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि विभक्ति प्रत्यययोजन से सभी व्याकरणिक संदर्भों में शब्द का मूल अर्थ एक ही रहता है परन्तु व्युत्पादक प्रत्यययोजन से शब्द का अर्थ बदल जाने की संभावना भी रहती है ।

विभक्ति प्रत्यय तथा व्युत्पादक प्रत्यय में दूसरा महत्वपूर्ण अंतर यह है कि जिस मूलांश में विभक्ति प्रत्यय जुड जाते हैं उनमें फिर कोई अन्य प्रत्यय जोड़ने की संभावना नहीं रहती । उदाहरण के लिए हिन्दी संज्ञा शब्द **नौकर** में यदि विकारी बहुवचन विभक्ति प्रत्यय का योजन किया जाए तो वह **नौकरों** बन जाता है । इसके पश्चात् इसमें किसी अन्य प्रकार के प्रत्यय जैसे **-पन**, -ई इत्यादि का योजन सम्भव नहीं है ।

नौकर + विकारी बहुवचन प्रत्यय = नौकरों (विभक्ति प्रत्यय)

नौकरों + पन = नौकरोंपन

जबकि

नौकर + ई = नौकरी

नौकरी + बहुवचन = नौकरियाँ

सम्भव है । अतः व्युत्पादकप्रत्यययोजन के बाद भी शब्द में विभक्ति प्रत्यय जोड़े जा सकते हैं ।

विभक्ति प्रत्ययों एवं व्युत्पादक प्रत्ययों के मूलांश में योजन की प्रक्रिया ही प्रत्यय योजन कहलाती है । अतः शब्द संरचना की प्रत्यय योजन प्रक्रिया निम्न प्रकार से होती हैं

मूल शब्द	+	प्रत्यय
(रूपिम अथवा प्रकृति)		(रूपिम)

इस प्रक्रिया में प्रत्यय मूलशब्द के किसी भी भाग में जुड सकते हैं । मूलशब्द के पूर्वभाग में

जुड़ने पर इन्हें उपसर्ग (Prefix) कहा जाता है, मध्य में जुड़ने पर मध्यसर्ग (Infix) तथा अन्त में जुड़ने पर प्रत्यय (Suffix) कहा जाता है ।

3.1.2 **समासीकरण** : शब्द संरचना की एक अन्य महत्वपूर्ण प्रक्रिया समासीकरण है । दो या दो से अधिक शब्दों से बने शब्दों को समास कहते हैं तथा शब्दों के योजन की इस प्रक्रिया को समासीकरण । इस प्रक्रिया में शब्दों के परस्पर संबंध के आधार पर उनके मध्य के विभक्ति तथा कारक प्रत्ययों का लोप हो जाता है एवं ये शब्द परस्पर जुड़कर एक अन्य शब्द का निर्माण करते हैं । उदाहरण के लिए राजा का पुत्र = राजपुत्र, जहाँ चार राहों का मिलन हो - चौराहा । इस प्रक्रिया से निर्मित नयें शब्द के अंत में विभक्ति प्रत्यय जुड़ते हैं । इस प्रक्रिया में जब दो या अधिक शब्द जोड़े जाते हैं तब उनमें संधि के नियमों का पालन भी होता है । सामासिक शब्दों का संबंध व्यक्त कर दिखाने की रीति को विग्रह कहते हैं । किसी भी सामासिक शब्द में विभक्ति लगाने का प्रयोजन हो तो उसे समास के अंतिम शब्द में जोड़ते हैं । समास के मुख्य चार भेद होते हैं, जिन दो शब्दों में समास होता है उनकी प्रधानता अथवा अप्रधानता के विभाग तत्वों के आधार पर निर्धारित होते हैं । अव्यव समास में आयोजित किए शब्दों में प्रथम को प्रधानता मिलती है । कर्मधारय में द्वितीय को, द्वन्द्व में दोनों समान होते हैं तथा बहुव्रीहि में समास में प्रयुक्त किसी भी शब्द को प्रधानता न मिलकर एक तीसरा अर्थ प्रकट होता है ।

जैसे "इन्द्र का धनुष" = इन्द्रधनुष उदाहरण में इन्द्र एक मूल व स्वतंत्र शब्द है और **धनुष** भी स्वतंत्र शब्द है । इन दोनों शब्दों के परस्पर विभक्ति संबंध के लोप के पश्चात् हुए योग से **इन्द्रधनुष** शब्द बनता हैं । इन्द्रधनुष का अर्थ **इन्द्र** तथा **धनुष** शब्दों के अलग-अलग अर्थों से सर्वथा भिन्न है ।

समास के मुख्य रूप से पाँच भेद होते हैं ।

जिस समास में पहला शब्द प्रधान होता है और जो समूचा शब्द क्रियाविशेषण अव्यय होता है उसे अव्ययी भावसमास कहते हैं । उदाहरण : यथविधि, प्रतिदिन, यथाशक्ति, प्रतिमान ।

जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं । इस समास में पहला शब्द बहुधा संज्ञा अथवा विशेषण होते हैं । तथा इस प्रकार के समासों के शब्दों में परस्पर कर्ता एवं संबोधन कारक छोड़कर अन्य कारक संबंध होता हैं । उदाहरण : ईश्वरदत्त, रसोईघर, हथकड़ी, देशभक्ति आदि ।

कर्मधारय समास में विशेषण भाव सूचित होता है । उदाहरण : पीताम्बर, पूर्वकाल, महाजन, परमानंद, सुंदरलाल आदि ।

जिस समास में समाहार प्रधान रहता है और दोनों शब्द अपने आप में स्वतंत्र अर्थ रखते हैं उसे द्वन्द्व समास कहते हैं । उदाहरण : माता-पिता, गाय-बैल, सुख-दुख आदि ।

द्विगुसमास में पहला शब्द संख्या वाचक होता हैं । इसमें संख्या प्रधान होती हैं । उदाहरण चौराहा, चारमीनार आदि ।

बहुव्रीहिसमास - में कोई भी पद व शब्द प्रधान नहीं होता और जो अपने पदों से भिन्न किसी संज्ञा का विशेषण होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं । उदाहरण अनंत (नहीं है अंत जिसका अर्थ ईश्वर) चन्द्रमौली (चन्द्र है सिर पर जिसके अर्थात् - शिव) दशानन (दस सरों वाला रावण) ।

3.1.3 द्विरुक्तीकरण - शब्द संरचना की इस प्रक्रिया में मूल व प्रकृति शब्द एक से अधिक बार लिया जाता है । यह द्विरुक्ति की प्रक्रिया समासीकरण से मिलती जुलती प्रतीत होती हैं परन्तु प्रकार्य में यह उससे भिन्न है । समासीकरण एवं द्विरुक्ति दोनों ही प्रक्रियाओं में एक से अधिक शब्दों की प्रकृति का योजन होता हैं । परंतु समासीकरण में जैसे राजपुत्र, यहाँ समासीकृत शब्द राजा एवं पुत्र दो अलग-अलग शब्द हैं परंतु, द्विरुक्ति में एक ही प्रकृति शब्द योग होने वाले शब्द अलग-अलग होते हैं इनकी पुनरावृत्ति होती है । उदाहरण के लिए हिन्दी शब्द दिनोंदिन धीर-धीरे इत्यादि । शब्द संरचना की यह प्रक्रिया हिन्दी में है ।

शब्द - संरचना की प्रमुख प्रक्रियाओं का उल्लेख ऊपर किया गया है । इनमें से भी पहली दो ही प्रक्रियाएँ हैं जो प्राधनतः हिन्दी में पाई जाती है । तीसरी प्रक्रिया से बने कुछ शब्द हिन्दी में मिलते हैं परन्तु यह प्रक्रिया बहुतायत में हिन्दी में लागू होती प्रतीत नहीं होती । कई बार भाषाओं में द्विरुक्ति प्रक्रिया प्रायः अर्थ के स्तर पर बलाघात लाने के लिए प्रयोग की जाती है ।

इस अध्याय में शब्द संरचना संबंधित कुछ विषयों पर संक्षिप्त चर्चा की गई है । इस चर्चा का प्रधान लक्ष्य प्रस्तुत शोध के मूल विषय की पृष्ठभूमि बनाना है, अतः शब्द की परिभाषा शब्द की संरचनात्मक इकाईयाँ, शब्द संरचना की प्रक्रियाएँ आदि विषयों पर यहाँ चर्चा करके अगले अध्याय का आधार तैयार किया गया है ।

3.2 शब्द संरचना संबंधी कुछ महत्वपूर्ण कार्यों की समीक्षा

शब्द संरचना को लेकर एक लम्बी परंपरा हैं । शब्द भाषा की एक महत्वपूर्ण इकाई है अतः इसके विभिन्न पक्षों जैसे रूप, संरचना, अर्थ - तत्व इत्यादि पर अनेकों दिशा-निर्देश हेतु कार्य हुए हैं । इन सभी अध्ययनों को यहाँ समेट पाना सम्भव नहीं हैं । अतः इनमें से कुछ प्रमुख कार्यों की समीक्षा नीचे प्रस्तुत हैं ।

उरमान क्वीन (Orman Quine 1965) ने अपनी पुस्तक "Word and Object" में भाषा व शब्दों का अध्ययन किया, truth, the Intermination of Sentences and ways of learning words आदि कुछ विषयों पर चर्चा इस पुस्तक में मिलती है । किन्तु कोई स्पष्ट सैद्धांतिक दृष्टिकोण प्राप्त नहीं होता ।

सी एस लूईस (C.S. Lewis 1972) ने अपनी पुस्तक Studies in Words में शब्द के भावात्मक पक्ष पर कार्य किया और बताया कि किस प्रकार भाषा में भावात्मक शब्दों का आगमन होता हैं ।

आँद्रे देरिच (Andre Deritsch 1977) ने अपनी पुस्तक The Word We Use में शब्द संरचना तथा शब्द कोश के विस्तार (Word formation and extention of vocabulary) पर काम किया । यहाँ पर इन्होंने शब्द के विस्तृत रूप को बताया, शब्द का रूप, कैसे परिवर्तित होता है, कैसे बनता है, आदि विषयों पर चर्चा की है ।

नाईडा (Nida 1970) ने अपनी पुस्तक Morphology - The Descriptive Analysis of Words. (रूप विज्ञान शब्द का वर्णनात्मक विश्लेषण) में संरचनात्मक भाषा विज्ञान के सैद्धांतिक आधारों पर शब्द संरचना के विभिन्न पक्षों जैसे शब्द की संरचनात्मक इकाईयाँ, संरचनात्मक प्रक्रियाएँ, परिवर्तन की दिशाएँ इत्यादि की संरचना पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक प्रस्तुत की । नाईडा की पुस्तक न केवल रूपविज्ञान में अपितु शब्द संरचना के सामान्य क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है ।

पी.एच. मेथीयूस (P.H.Mathews 1978) ने भी Morphology - An Introduction to the Theory of Word Structure, में शब्द संरचना पर बात की है । यह पुस्तक रूपांतरण प्रजनन व्याकरण के सैद्धांतिक ढाँचे में लिखी हुई है । शब्दों की संरचना के विभिन्न पक्षों को इसी दृष्टिकोण से देखा गया है, तथापि यह एक ही सैद्धांतिक ढाँचे में पूर्णतः सीमित नहीं है । अन्य सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों को यहाँ बराबर ध्यान में रखा गया है ।

जोसफ एच. (Joseph. H 1976) ने अपनी पुस्तक Universals of Human Languages में Word Structure विश्व की विभिन्न भाषाओं को लेकर उन सब के भाषावैज्ञानिक तत्वों को लेते हुए बड़े ही विस्तार से नये अवययों को सामने रखा है ।

आधुनिक भारतीय चिन्तन में शब्द संरचना को लेकर नये प्रयास बहुत ही कम दृष्टिगत होते हैं । इस क्षेत्र में हो रहे कार्यों की दो दिशाएँ स्पष्ट हैं । एक संस्कृत व्याकरणिक परम्परा में भारतीय भाषाओं की व्याख्या हैं, और दूसरा आधुनिक भाषाविज्ञान की पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित

अवधारणाएं लेकर विभिन्न भारतीय भाषाओं की शब्द संरचना के वर्णनात्मक अध्ययन ।

कामता प्रसाद गुरु (**हिन्दी व्याकरण,** 1972) के अनुसार शब्द - साधन व्याकरण के उस विभाग को कहते हैं जिसमें शब्दों के भेद, रूपांतर और व्युत्पति का निरूपण किया जाता हैं । गुरु कहते हैं कि एक से अधिक अक्षरों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं । शब्द के साथ जुड़ने वाली सार्थक ध्वनि को शब्दांश मानते हुए उन्होंने बताया कि जो शब्दांश शब्द के आगे जोड़ा जाता है उसे उपसर्ग, जो शब्द के मध्य जुडता है उसे मध्यसर्ग और जो शब्द के अंत में जुडता है उसे प्रत्यय कहते हैं ।

डॉ. किशोरी लाल वाजपाई (1981) ने अपनी पुस्तक "**शब्द मीमांसा**" में संस्कृत से शब्द ग्रहण करने की पद्धति आदि पर ही अपना अध्ययन केन्द्रित किया है । दूसरे अर्थों में इन्होंने शब्द के तत्सम, तद्‌भव व विदेशी रूपों का विस्तार किया हैं ।

भोलानाथ तिवारी (1982) ने अपनी पुस्तक "**हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास**" में हिन्दी के शब्द भण्डार पर अपना कार्य किया जिसमें तत्सम्, तद्‌भव, समास, प्रत्यय, उपसर्ग आदि व्याकरणिक अवयवों को केन्द्र में रखकर बताया कि भाषा में इनका उपयोग व इनका आगमन कैसे होता है । प्रत्यय व उपसर्ग के योग से शब्दों के वर्ग परिवर्तित हो जाते हैं । तथा कैसे ये शब्द अपने संदर्भ के अनुकूल विस्तृत व संकुचित हो जाते हैं । उन्होंने इन सबकी बड़े विस्मृत ढंग से चर्चा की ।

प्रो. रामाश्रय मिश्र व डॉ. नरेश मिश्र (1982) ने अपनी पुस्तक **भाषा व भाषा विज्ञान में शब्द विज्ञान के अंतर्गत** भाषा व शब्द, शब्द व्युत्पति व परिभाषा, शब्द समूह, शब्द समूह वर्गीकरण, हिन्दी शब्द समूह, शब्द समूह में परिवर्तन के कारण आदि कुछ विषयों पर चर्चा की । जिसमें शब्द के संकुचित व विस्तृत रूप को लिया गया । इस अध्ययन में क्रिया, विशेषण आदि व्याकरणिक वर्गों पर हिन्दी के संदर्भ में विस्तृत चर्चा मिलती है ।

प्रो. वान्द्रियौज की मूल संस्कृत पुस्तक का अनुवाद जगवंश किशोर बलवीर (1982) ने किया, जिसमें शब्द कोश का स्वरूप व उसका विस्तार, व्युत्पति शास्त्र के उच्चरित शब्दों का सामसिक व विशिष्ट अर्थ आदि पर अध्ययन किया और मस्तिष्क में शब्द संबंध, शब्दों का **प्रकार्य, शब्दावली की गणना आदि पर विचार किया । इस पुस्तक में भाषा विश्लेषण का एक** सैद्धान्तिक ढाँचा प्रस्तुत किया गया है । इन सब से यह पता चलता है कि इन्हेंने शब्द के पर्याय को ज्यादा महत्व दिया । शब्दों के अर्थ में परिवर्तन कैसे होता है, विशेषीकरण, और साधारणीकरण द्वारा शब्दों के अर्थों में परिवर्तन, सामान्य अर्थ विज्ञान के संविधान के संबंध में लिया और इसे एक कार्यालय रूप दिया । शब्द कोश के परिवर्तन के सामाजिक कारण, नवीन शब्दों की सृष्टि के रहस्य को लिया, ये नवीन शब्द कार्यालयीन भाषा में प्रयोग हो रहे हैं ।

प्रो. अमरनाथ पाण्डेय ने (1982) अपनी पुस्तक **शब्द शब्द विमर्श** में शब्दार्थ विवेचन अनेक रूपों वाले शब्द और शब्द के इतिहास पर कार्य किया ।

डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया (1986) ने **शब्द श्री** पुस्तक में शब्द अध्ययन व शिक्षण में देशज, संकर, विदेशी आदि शब्दावली पर चर्चा की, प्राकृत पिंगल की तुलना उन्होंने आधुनिक हिन्दी से की । इन्होंने शब्द के ऐतिहासिक पक्ष को ज्यादा महत्व दिया ।

डॉ. ब्रजमोहन ने (1988) अपनी पुस्तक **शब्द चर्चा** में संज्ञा प्रकरण के क्रिया प्रकरण के संदर्भ में प्रत्येक शब्द को इस के अनुसार लेकर इन के परिवर्तन व अर्थ को लेकर चर्चा की हैं ।

डॉ. विजयपाल सिंह ने (1978) **सामान्य हिन्दी** में शब्द व शब्दों का वर्गीकरण बड़े ही विस्तृत रूप से किया जहाँ उन्होंने शब्द के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि को लेकर अपने युग्म बनाये हैं ।

डॉ. नरेश मिश्र ने अपनी पुस्तक **हिन्दी शब्द समूह** के विकास पर कार्य किया, जिसमें उन्होंने फिर

उन्हीं तत्सम्, तद्भव, संकर, विदेशी पारिभाषिक शब्दों को केन्द्र में रखकर उन्हीं का विस्तार किया ।

ऊपर दिए गए अधिकतर अध्ययनों का केन्द्र हिन्दी भाषा की शब्द सम्पदा है । अत: इनमें से अधिकतर विद्वानों ने शब्द को लेकर की चर्चा, शब्द के निर्माण में तत्सम्, तद्भव, संकर, प्रत्यय, उपसर्ग और विभक्ति प्रत्ययों की भूमिका पर केन्द्रित रखा है । विभिन्न व्याकरणिक अवयव किस प्रकार "मूल शब्द" के पूर्व, अंत अथवा मध्य में जुडकर शब्द निर्माण करते हैं ये भी इन अध्ययनों में मिलता है । शब्द अपने विषय व क्षेत्र के अनुसार किस प्रकार अपना रूप परिवर्तित कर लेते हैं, यह भी इन अध्ययनों में चर्चित है ।

इस प्रकार हिन्दी में शब्दों के निर्माण में प्रयोग होनेवाले विभिन्न घटकों अथवा अवयवों के विषय में तो पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है । परन्तु शब्द संरचना का एक अन्य पक्ष है इन अवयवों की उत्पादकता से संबंधित जिस पर कहीं भी चर्चा नहीं मिलती । प्रस्तुत शोध इसी विषय से संबंधित है ।

3.3 उत्पादकता : चाम्स्की के भाषाविज्ञान के क्षेत्र में आगमन के बाद भाषा का एक महत्वपूर्ण पक्ष जो विभिन्न चर्चाओं का विषय बना वह है भाषा की सृजनात्मकता । भाषा में नये रूप एवं प्रयोगों के आने का एक बहुत बड़ा कारण भाषा की सृजनात्मक क्षमता ही है । सृजनात्मकता से संबंधित प्रश्न उठता है, भाषा की उत्पादकता से । उत्पादकता की बात भाषा के संरचनात्मक अवयवों एवं प्रक्रियाओं के संदर्भ में उठती है । भाषा के संदर्भ में उत्पादकता से क्या तात्पर्य हैं ? भाषा में इसकी क्या भूमिका है ? तथा भाषा में यह किस रूप में प्रस्तुत होती है ? आदि कुछ प्रश्न है जिन पर विचार कर लेना शायद यहाँ अनुचित नहीं होगा । प्रस्तुत शोध का शीर्षक से स्पष्ट है इस शोध का केन्द्र विषय शब्द की उत्पादकता से संबंधित है ।

पिछले कुछ वर्षों में व्युत्पादक रूप विज्ञान का केन्द्र विषय संरचनात्मक नियमों एवं प्रक्रियाओं की **उत्पादकता** हो गया था । भाषाविद् भाषा की विभिन्न संरचनात्मक इकाइयों की उत्पादकता के

विषय में चर्चा करते रहे है तथा भाषा में उत्पादकता को एक महत्वपूर्ण स्थान भी दिया गया। परन्तु केन्द्रीय विषय होने पर भी उत्पादकता की परिभाषा तथा इस से संबंधित कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्चा कम ही मिलती है। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य **बायर** (1988) का है। उन्होंने अपनी पुस्त 'Introducing Linguistic Morphology' में इसे परिभाषित करने का प्रयास किया तथा भाषा में उत्पादकता से संबंधित कुछ विषयों पर विस्तार से विचार भी किया।

बायर के अनुसार भाषा में उत्पादकता से संबंधित दो महत्वपूर्ण बाते हैं - **पहली** यह कि उत्पादकता एक **समकालीन** अवधारणा है, तथा **दूसरी** - भाषा में **उत्पादकता पूर्ण** या **शून्य** के स्तर पर नहीं देखी जाती है अपितु **कम** तथा **ज्यादा** की सीमा में होती है।

बायर द्वारा दी गई इन दोनों ही बातों को स्पष्ट करने के पूर्व शायद भाषा में **उत्पादकता** को समझ लेना आवश्यक होगा। भाषा में **उत्पादकता** भाषा व्यवस्था के संदर्भ में भाषा की कुछ संरचनात्मक इकाइयों एवं प्रक्रियाओं पर ही केन्द्रित की जाती हैं। कोई संरचनात्मक प्रक्रिया तभी उत्पादक मानी जाती है, जब वह भाषा में नये-नये शब्दों को उत्पादति या निर्मित कर सके। उदाहरण के लिये हिन्दी में पुल्लिंग संज्ञा द्योतक - उत्पादक प्रत्यय - **आनी** प्रत्यय के योग से स्त्रीलिंग द्योतक संज्ञा बनती हैं।

जैसे

पंडित - पंडितानी

गुरू - गुरूवानी

नौकर - नौकरानी - आदि

पुल्लिंग से स्त्रींलिक बनाने की यह प्रक्रिया हिन्दी में किसी अन्य भाषा से आए नये संज्ञा-शब्द भर भी लागू हो सकती हैं। उदाहरण

मास्टर - मास्टरानी

टीचर	-	टीचरानी
प्रोफेसर	-	प्रोफेसरानी
डॉक्टर	-	डॉक्टरानी - इत्यादि

उत्पादकता भाषा का वह तत्व है जो भाषायी नियमों को नए संदर्भों में लागू कर नए रूपिमों को जन्म दे सके । सामान्यत: किसी भी नियम या संरचनात्मक प्रक्रिया का नए संदर्भों में प्रयोग हो पाना उसके उत्पादक होने का प्रमाण माना जाता है । परन्तु संरचनात्मक प्रक्रियाओं की उत्पादकता के अध्ययन का महत्त्व व्युत्पादक प्रत्ययों के संदर्भ में अधिक माना जाता है । विभक्ति प्रत्यय से ज्यादा प्रकृति उत्पादक होते है क्योंकि उनका प्रकार्य किसी वर्ग-विशेष के शब्दों की वाक्य विन्यासात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप रूपसिद्धि करना होता है । अत: जो भी शब्द वाक्य में एक विशिष्ट भूमिका निबाहता है उसके साथ आवश्यकतानुसार अपेक्षित विभक्ति प्रत्यय सहजता से जुड़ जाते हैं । ऐसी स्थितियों में नये शब्द की संरचना में अपेक्षित ध्वन्यात्मक परिवर्तन भी घटित होते हैं ।

उदाहरण :

मशीन	-	मशीनों
टाबू	-	टाबुओं में

हिन्दी की संज्ञा शब्दों में संज्ञा के लिंग के आधार पर वचन प्रत्यय जुड़ते हैं*1 जिनका अविकारी तथा विकारी रूप अलग-अलग होते है :

पुलिंग संज्ञा शब्द

अविकारी		विकारी	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लड़का	लड़के	लड़के	लड़कों

1. हिन्दी की संज्ञाओं में लिंग निर्धारित की समस्या भाषाविदों के लिए एक रोचक समस्या बनी हुई है और यद्यपि, इस दिशा में कई कार्य हुए हैं (Kelloge, Srivastav) फिर भी कोई निश्चित नियम अभी तक उभर कर नहीं आया हैं ।

घोड़ा	घोड़े	घोड़े	घोड़ों
मटका	मटके	मटके	मटकों
पौधा	पौधे	पौधे	पौधों
पेड़	पेड़	पेड़	पेड़ों
सेब	सेब	सेब	सेबों

स्त्रीलिंग

नदी	नदियाँ	नदी	नदियों
पंखुड़ी	पंखुड़ियाँ	पंखुड़ी	पंखुड़ियों
बिल्ली	बिल्लियाँ	बिल्ली	बिल्लियों
लता	लताएँ	लता	लताओं
आँख	आँखें	आँख	आँखों

जब भी हिन्दी में किसी अन्य भाषा से कोई संज्ञा शब्द ग्रहण किया जाता है तो उसका लिंग निर्धारित हो जाता है*2 तथा उसी आधार पर उसमें वचन प्रत्यय का योग होता है । यही योग अंग्रेजी से ग्रहण किए गए संज्ञा शब्दों में भी देखने को मिलता है । उदाहरण :

पुलिंग	ट्रक	ट्रक	ट्रक	ट्रकों
	कंप्यूटर	कंप्यूटर	कंप्यूटर	कंप्यूटरों
	कैमरा	कैमरे	कैमरे	कैमरों
स्त्रींलिंग	बस	बसें	बस	बसों
	ट्रेन	ट्रेनें	ट्रेन	ट्रेनों

2. हिन्दी की संज्ञाओं में लिंग निर्धारित की समस्या भाषाविदों के लिए एक रोचक समस्या बनी हुई है और यद्यपि, इस दिशा में कई कार्य हुए हैं (Kelloge, Srivastav) फिर भी कोई निश्चित नियम अभी तक उभर कर नहीं आया हैं ।

इसी प्रकार हिन्दी में क्रिया शब्दों में काल एवं पक्ष संबंधी तत्व भी सदैव जुड़ेंगे अतः उस सीमा तक वे भी **पूर्ण** उत्पादक होते हैं ।

इस आधार पर विभक्ति प्रत्यय पूर्णतः उत्पादक माने जाते हैं ।

दूसरी ओर व्युत्पादक प्रत्ययों का भाषा में प्रकार्य भिन्न होने के कारण इनकी उत्पादकता की मात्रा भी भिन्न होती है । ये शब्दों के वर्ग परिवर्तन तथा नए शब्द निर्माण का प्रकार्य निबाहते हैं फलतः इनके लागू होने में कुछ प्रतिबन्ध तथा नियम हो सकते है और ये प्रत्यय कभी भी पूर्णतः उत्पादक नहीं होते । भाषा में उत्पादकता की दृष्टि से अध्ययन का केन्द्र व्युत्पादक प्रत्यय ही होते हैं । तथा यहाँ उत्पादकता को लेकर चर्चा इसी संदर्भ में होगी ।

उत्पादकता की समकालीनता से क्या तात्पर्य है ? भाषा में "उत्पादकता" को अधिक गहराई से समझने के लिए "बायर" द्वारा दिए गए दोनों कथनों पर चर्चा की जा सकती है ।

उत्पादकता की समकालीनता के विषय में व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि भाषा की किसी भी संरचनात्मक इकाई की उत्पादकता काल के बिन्दु विशेष पर ही पहचानी जा सकती है तथा यह भाषा **समकालीन** रूप में ही परिलक्षित होती है ।*3 दूसरे शब्दों में किसी भी भाषा में किसी भी प्रक्रिया की उत्पादकता की चर्चा काल के एक विशेष बिन्दु के संदर्भ में ही होनी चाहिए । भाषाओं में काल विशेष के संदर्भ में कुछ नियम उत्पादक होते हैं, जो कालांतर में भाषा के सामान्य नियम बन जाते हैं । कई बार ये नियम सामान्य बनकर भाषा में अपनी उत्पादकता खो बैठते हैं । यह कहा जा सकता है कि भाषाओं के सामान्य नियम इतिहास की किसी कालबिन्दु में उस नियम की उत्पाकदता का परिणाम हो सकता है । अतः कालबिन्दु विशेष में उत्पादक रूपिम यदि आज अपनी उत्पादकता खो बैठा है । इससे यह पता चलता है कि भाषा में सामान्य नियम प्रायः उस भाषा के किसी कालबिन्दु में एक उत्पादक नियम का परिणाम हैं । परन्तु एक और बात जो इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है, वह यह कि, यह भी

3. 'बायर' पृ.सं 89, 1988

कोई आवश्यक नहीं कि हर उत्पादक नियम कालांतर में सामान्य हो जाए । उदाहरण के लिए अंग्रेजी में भाववाचक संज्ञाएँ बनाने वाल - "th" प्रत्यय इतिहास में काल के किसी बिन्दु विशेष पर शायद उत्पादक था ।

उदाहरण : greenth, growth, coolth, width (बायर 1958, 59-60), इत्यादि अंग्रेजी भाषा के कुछ शब्द है ।

कालान्तर में यह प्रत्यय अपनी उत्पादकता खो बैठा । तथा आज blackth ideas एक हस्यास्पद अथवा मनोरंजक प्रयोग चाहें हो परन्तु भाषा में गम्भीरता से नहीं लिया जाता । यह अंग्रेजी भाषा में एक सामान्य नियम भी नहीं माना जाता । फलतः यह कहा जा सकता है कि सामान्य नियम उत्पादक नियम का परिणाम हो सकते हैं परन्तु उत्पादक नियम सामान्य नियम में ही परिवर्तित हो यह आवश्यक नहीं ।

उत्पादक नियमों का एक अन्य परिणाम यह भी हो सकता है कि वह भाषा में सामान्य बनकर उत्पादक भी बने रहें - अर्थात् अपनी उत्पादकता को खोएँ नहीं । उदाहरण के लिए हिन्दी में 'वाला' रूपिम । पानीवाला, दूधवाला, पुस्तकवाला, यह "वाला" प्रत्यय किसी भी व्यावसाय शब्द के संदर्भ में जुड़कर एक विशेष कारक शब्द का निर्माण करता है जो संबंध वाचक तत्त्व धारण करता है । यह "वाला" प्रत्यय हिन्दी में यद्यपि एक सामान्य नियम है फिर भी अपनी उत्पादकता बनाए हुए है । अतः समकालीन संदर्भ में भी यह उत्पादक है । इसकी उत्पादकता का एक अच्छा उदाहरण इस प्रत्यय का विज्ञापनों में मिलता है जैसे क्वालिटीवाला, स्वीटवाला, होटलवाला, इत्यादि । इस प्रकार किसी भी नियम की समकालीनता उत्पादकता के संदर्भ में महत्वपूर्ण होती है ।

उत्पादकता के संदर्भ में (पहले दी गई) दूसरी बात जो महत्त्वपूर्ण है वह यह कि भाषा में उत्पादकता की मात्रा "कम" या "ज्यादा" के पैमाने पर होनी चाहिए । भाषा में किसी भी प्रक्रिया का

प्रयोग किसी और प्रक्रिया के प्रयोग की तुलना में **कम** व **ज्यादा** होता हैं। इसीलिए भाषा विशेष में कोई भी प्रक्रिया उत्पादक है अथवा नहीं, यह निश्चित अंकों में निर्धारित कर पाना कठिन है। अर्थात् भाषा के किसी भी नियम के विषय में यह दावा नहीं हो सकता कि वह शत प्रतिशत उत्पादक है, या वह 45% उत्पादक है। किसी भी नियम को अलग से लेकर उसकी उत्पादकता की सीमा का निर्धारण कर पाना कठिन ही नहीं, असम्भव है। अतः यदि भाषा विशेष के किसी नियम अथवा प्रक्रिया की उत्पादकता की सीमा को जानना है तो उसे किसी अन्य प्रक्रिया अथवा नियम की तुलना में देखना होगा। अर्थात् एक प्रक्रिया की उत्पादकता की पहचान सदैव किसी अन्य प्रक्रिया के संदर्भ में ही हो सकती है। सारांश यह है कि भाषा में उत्पादकता को देखने के लिए तुलनात्मकता की अवधारणा जरूरी हैं। Productivity is "not all" or "nothing" (बायर, पृ. सं.57, 1988) अर्थात् किसी भी प्रक्रिया की उत्पादकता सौ प्रतिशत व शून्य प्रतिशत में नहीं देखी या नापी जा सकती है, अपितु वह **कम** अथवा **ज्यादा** के नाप में देखी जा सकती हैं।

इस बिन्दु पर एक अन्य प्रश्न जो उठ खड़ा होता है वह यह कि भाषा में उत्पादकता नापने का पैमाना क्या है ? अथवा हो सकता है ? जैसा कि ऊपर कहा गया है भाषा में उत्पादकता की मात्रा नापना बहुत कठिन है और किसी भी उत्पादक इकाई या किसी भी प्रक्रिया को पूर्णतः उत्पादक कह पाना भी उतना ही कठिन है।

भाषाई प्रक्रियाओं की उत्पादकता की मात्रा का अध्ययन करने के लिए कोई निश्चित पद्धति नहीं मिलती। इस दिशा में अध्ययन के लिए एक संभव पद्धति यह है कि भाषा में किसी भी प्रक्रिया को नए संदर्भों में लागू करके उसका परीक्षण किया जाए। इस अध्ययन में भी हिन्दी के कुछ व्युत्पादक प्रत्ययों का इसी पद्धति से अध्ययन किया गया है।

भाषा में कोई भी प्रक्रिया पूर्णतः उत्पादक कभी नहीं होती अतः अध्ययन आंशिक उत्पादक (Semi - Productive) का होता है। परन्तु, यह कहना भी गलत होगा कि व्युत्पादक रूपिम कभी

भी पूर्ण उत्पादक नहीं होते । इसलिए पूर्ण उत्पादकता को पुनः परिभाषित करना भी महत्वपूर्ण हो जाता हैं ।

उत्पादकता के संदर्भ में एक अन्य महत्वपूर्ण बात **संभव संरचनाओं** की हैं । भाषा में किसी भी शब्द के "होने" की बात या न होने की बात उठ सकती हैं । शब्द के प्रायः किसी भी शब्द के भाषा में **होने** की बात भाषाविशेष के कोश में सूचीगत होने के आधार पर प्रमाणित होती है । परन्तु यह आवश्यक नहीं की कोश में दिए गए सभी शब्द भाषा में प्रचलित भी हों । दूसरी ओर इन सूचियों में वे शब्द भी सम्मिलित नहीं किये जाते जो कुछ उत्पादक प्रक्रियाओं के कारण **सम्भव शब्द** होते हैं । **सम्भव** शब्द वे शब्द होते हैं जो भाषा में प्रयोग में न हों । परन्तु एक उत्पादक प्रक्रिया जिनको जन्म दे सके । उदाहरण के लिए हिन्दी में -ता, -पन आदि प्रत्ययों के योग से कुछ शब्दों का निर्माण किया जा सकता है जैसे यथार्थता, महानुभावता, गहरापन, कहानीपन, इत्यादि । यह प्रत्यय यद्यपि हिन्दी में प्रचलित प्रयोग में नहीं हैं परन्तु यह हिन्दी के संभव शब्द हो सकते हैं ।

संभव - शब्द भाषा के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है । भाषाओं के शब्द भंडार सदैव बढ़ते रहते हैं । नए शब्द पुरानों की पंक्ति में शामिल हो अपना अलग स्थान बना लेते हैं अथवा किसी पुराने शब्द का स्थान ले लेते हैं । समाज एवं संस्कृति के विकास के साथ नए तथ्य, नई अवधारणाएँ, नए अनुभव मनुष्य के सामने आते हैं । इन नई अभिव्यक्तियों के लिए नए शब्दों की आवश्यकता पड़ती है । इस स्थिति में अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण कर लेने के अतिरिक्त मनुष्य अपनी भाषा की संरचना के उत्पादक तत्वों के माध्यम से नए शब्द गढ़ लेता है । नए शब्दों के निर्माण एवं प्रयोग की यह प्रक्रिया सृजनात्मक साहित्यकार प्रचुर मात्रा में करते हैं । परन्तु आम प्रयोगकर्ता भी इस प्रक्रिया से अनभिज्ञ नहीं होता । भाषा में ये नए शब्द संभव शब्दों की श्रृंखला से ही निकल कर आते हैं ।

उत्पादकता का एक अन्य पक्ष और भी है । वह है किसी विशेष नियम की उत्पादकता का भाषा में सामान्य स्तर पर प्रस्तुत होने का अथवा व्यक्ति विशेष तक सीमित रहने का ।

सामान्य स्तर पर कोई भी प्रक्रिया उत्पादक तब कहलाती है, जब भाषाई समुदाय का कोई भी व्यक्ति उसे प्रयोग कर सके । किसी भी भाषाई संदर्भ में वह सृजनशील हो सके । दूसरी ओर किसी भाषाई समुदाय के एक सृजनशील व्यक्ति के लिए कोई भी प्रक्रिया उत्पादक हो सकती हैं । व्यक्ति विशेष के लिए उत्पादक प्रक्रिया सामान्यतः भाषा में उत्पादक नहीं मानी जाएगी । इस प्रकार व्यक्ति विशेष की उत्पादकता को भाषा की उत्पादकता से अलग मानना चाहिए । व्यक्ति विशेष की उत्पादकता साहित्यिक भाषा में प्रस्तुत किसी सामान्य प्रक्रिया की उत्पादकता सामान्य भाषा में भी दिखती है । उदाहरण के लिए साहित्य के क्षेत्र में अर्थ के संदर्भ में मुक्तिबोध द्वारा प्रयुक्त ब्रह्मराक्षस शब्द एक विशिष्ट अर्थ (बुद्धि जीवी), रखता है जो उसके सामान्य अर्थ (राक्षस विशेष) से भिन्न है । हिन्दी में keyboard कुंजी पटल, keynote address उदघाटन भाषण, Telecom prod - संचार सम्प्रेषण इसके उदाहरण है ।

अतः सृजनात्मक साहित्य में व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयुक्त नए शब्द भाषा की सामान्य उत्पादकता से भिन्न माने जाने चाहिए ।

अब तक की चर्चा से निम्न बातें स्पष्ट हो जाती हैं ।

क) बायर के अनुसार उत्पादकता समकालीन होती है ।

ख) उत्पादकता आपेक्षिक है, इसका तात्पर्य कम व ज्यादा से है, तथा तुलनात्मक होती है ।

ग) भाषा में उत्पादकता संभव शब्दों का निर्माण करती है ।

इस बिन्दु पर शायद उत्पादकता की प्रक्रिया को परिभाषित कर लेना महत्वपूर्ण होगा । जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि किसी भी प्रक्रिया की उत्पादकता को पूर्णतः जान पाना कठिन है । प्रायः विद्वान भाषा में जब उत्पादकता की सीमा को देखना चाहते हैं तो इसकी कोई निश्चित मात्रा देख पाना कठिन होता है । यही समस्या खड़ी होती है किसी भी प्रक्रिया के पूर्णतः उत्पादक होने का निर्णय करने में ।

बायर (1988) के अनुसार पूर्ण उत्पादकता को दो तरह से परिभाषित किया जा सकता हैं ।

क) कोई भी प्रक्रिया पूर्ण उत्पादक तभी मानी जाएगी जब वह भाषा के हर संभव मूलशब्द पर लागू हो सके ताकि वह मूल शब्द व्याकरणिक वर्ग के आधार पर परिभाषित हों जैसे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि ।

ख) कोई भी प्रक्रिया पूर्ण उत्पादक तब होगी जब वह भाषा के किसी भी प्रासंगिक अथवा संबंधित मूल शब्द पर लागू हो सके तथा यह मूल शब्द कुछ विशिष्ट सीमाओं में परिभाषित हों । (बायर 1988, पृ.76)

संबंधित साहित्य में कोई उत्पादक प्रक्रिया कभी भी पूर्णतः लागू नहीं होती । यह विषय दो शीर्षकों के अन्तर्गत चर्चित है । बायर के अनुसार ये दोनों ही शीर्षक इस प्रकार हैं । पहला उत्पादकता की सीमाएँ (Limitations on Productivity) तथा दूसरा - "आंशिक उत्पादकता (Semi - Productivity) भ्रामक हैं । (बायर 1988, पृ.71)

पहले के संदर्भ में बायर का मत है कि भाषा में किसी भी प्रक्रिया की उत्पादकता के संदर्भ में कोई भी निर्णय लेने से पहले यह आवश्यक है कि किसी भी मूल शब्द की पहचान कर ली जाए । ऐसा न करने पर उस प्रक्रिया की उत्पादकता भ्रामक हो सकती है । दरअसल परिभाषा के संदर्भ में यह माना जाता है कि किसी भी रूपात्मक प्रक्रिया की सीमाओं को बताने के लिए उस पर लागू कुछ प्रतिबंधों को बता देना पर्याप्त है । परन्तु ऐसा नहीं है । जब कोई रूपात्मक प्रक्रिया किसी भी मूल शब्द पर लागू होती है, तो उसके लागू होने में कई प्रकार के प्रतिबंध हो सकते हैं । उनको विस्तार से बताना बहुत विस्तृत व कठिन होता है । फलतः यह मान लेना कि प्रक्रिया - विशेष हर संदर्भ में लागू होगी गलत है । कोई भी उत्पादक प्रक्रिया भाषा विशेष में प्रस्तुत वर्ग विशेष के सभी मूल शब्दों पर लागू हो यह संभव नहीं हैं । अतः हर उत्पादक प्रक्रिया की कुछ सीमाएँ होती हैं । उन सीमाओं एवं प्रतिबधों के अंदर ही उसे उत्पादक कहना चाहिए । उदाहरण के लिए अंग्रेजी में विभक्ति प्रत्यय "S"

and "ing" किसी भी क्रिया में जुड़ सकते हैं और उत्पादक होते हैं । परन्तु इनके प्रयोग के प्रतिबंध वाक्य के अन्य संदर्भों पर आधारित हैं । इस प्रकार यह विन्यासात्मक प्रतिबन्ध हैं । -"S" प्रत्यय एकवचन, अन्य पुरुष तथा आवृत्तिमूलक के पक्ष के संदर्भ में ही जुड़ेगा जबकि -"ing" के साथ वचन तथा पुरुष के प्रतिबंध नहीं है । कोई भी संरचनात्मक प्रक्रिया जिन मूल शब्दों पर लागू होती है उन मूल शब्दों पर लगे प्रतिबंध अर्थ-संबंधी व रूप-संबंधी हो सकते हैं । अपने प्रतिबंधों की सीमाओं में पूर्णतः लागू होनेवाला प्रत्यय इन सीमाओं में पूर्ण - उत्पादक माना जाएगा ।

आंशिक उत्पादकता (Semi-productivity) प्रायः तब मानी जाती है जब यह किसी भी भाषा में प्रतिबंधों के अन्दर भी हर मूल पर लागू न हो । इसके आंशिक होने के कुछ कारण हैं ।

क) किसी प्रतिबन्ध के कारण किसी रूपात्मक प्रक्रिया के लिए यह मूल शब्द उपलब्ध न हों ।

ख) प्रक्रिया ही उत्पादक न रही हो ।

ग) सम्भव मूल शब्द होने पर भी, उत्पादक प्रक्रिया होने पर भी, कोई शब्द निर्माणीय न हो सकें ।

आंशिक उत्पादकता विभक्ति रूपों एवं व्युत्पादक रूपिमों की उत्पादकता में अंतर स्पष्ट करने वाला महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है । कोई भी प्रक्रिया यदि किसी मूल पर लाग हो सकती है और वह लागू होती तो वह संदर्भ विशेष में पूर्ण उत्पादक है । उदाहरण के लिए हिन्दी में भाववाचक संज्ञा बनाने वाले -ता प्रत्यय संस्कृत ततसम शब्दों में ही लगते हैं । इस प्रतिबंध की सीमा में यह प्रत्यय पूर्णतः उत्पादक हो सकता है । दूसरी ओर जब कोई प्रक्रिया संभावना तो रखती हो परन्तु हर संभव संदर्भ में प्रयोग नहीं हो तो वह आंशिक उत्पादक कहलायेगी ।

3.4 निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्शतः कहा जा सकता है कि शब्द संरचना की प्रक्रियाएँ, सामान्य रूप से भाषा में उपस्थित रहती हैं, परन्तु इन में मूल परिवर्तन उन के परिवर्तन एवं विषय परिवर्तन से होता हैं । उत्पादकता एवं शब्द संरचना एक दूसरे पर आधारित हैं । शब्द की संरचना से ही उत्पादकता का महत्व बढ़ता हैं । अतः भाषा में उत्पादकता का होना आवश्यक हैं, इसी उत्पादकता के कारण, भाषा के नव-नव शब्द रूप निर्मित होते हैं ।

चतुर्थ अध्याय

उत्पादकता की प्रक्रिया : हिन्दी के उत्पादक रूपिम

चतुर्थ अध्याय

उत्पादकता की प्रक्रिया : हिन्दी के उत्पादक रूपिम

4.0 प्रस्तावना

हिन्दी शब्द संरचना के अंतर्गत अनेक घटक आते हैं । कभी ये घटक समास के रूप में, प्रत्यय के रूप में, उपसर्ग के रूप में और कभी ये मध्यसर्ग के रूप में भाषा की संरचना प्रक्रिया को और भी सृजनात्मक बनाते हैं । उसी सृजनात्मक प्रक्रिया में आकर भाषा में नवीन शब्दों का निर्माण करते हैं और भाषा के व्युत्पादक, अर्थद्योतक और संबंध द्योतक आदि विभिन्न प्रकार्यों को संपन्न करते हैं । जब ये विभिन्न प्रकार्य भाषा में पूर्ण रूप से अपना स्थान बनाकर भाषा की प्रक्रियाओं को आगे ले जाना चाहते हैं, उस समय भाषा सृजनात्मक बनती हैं, परन्तु प्रस्तुत अध्याय में भाषा की उत्पादकता और उसके संदर्भों पर विचार करना लक्ष्य रहा है । हिन्दी के उत्पादक रूपिम क्या हैं, ये रूपिम किस संदर्भ में उत्पादक हो सकते हैं, उनकी उत्पादकता की सीमा क्या है, और हिन्दी शब्दों व रूपिमों की उत्पादकता क्या हो सकती हैं, क्या ये रूपिम प्रयोजन मूलक हिन्दी के संदर्भ में उपयोगी हो सकते हैं या नहीं, और अगर ये उपयोगी होंगें, तो क्या ये आधुनिक परिवेश में कहाँ तक सफल होंगें आदि पर भी विचार किया गया हैं । यहाँ पर प्रत्यय, मध्यसर्ग और उपसर्ग, शब्द संरचना की प्रक्रिया को किस तरह भाषा नियोजन और उत्पादकता की सीमा में रखते हैं यह भी विचार्य हैं ।

भाषा में उत्पादकता की प्रक्रिया का मूल श्रेय शब्द संरचना की प्रक्रिया में प्रत्यययोजन, समासीकरण और द्विरुक्ति को ही जाता हैं ।

4.1 उत्पादकता की प्रक्रिया : रचना व प्रयोग की दृष्टि से रूपिम के दो प्रकार हो सकते हैं ।

1. मुक्त रूपिम
2. बद्ध रूपिम

4.1.1 मुक्त रूपिम : वाक्य में किसी भी शब्द का वह स्वतंत्र अर्थवान रूप हैं, जिसे विभाजित करने पर उस का अस्तित्व सुरक्षित नहीं रहता, यह वाक्य में पूर्ण रूप से स्वतंत्र होता हैं ।

उदाहरण : आम, पेड़, पत्थर ये मुक्त रूपिम किसी के संयोजन के बिना भी अपना अर्थ व रूप दोनों सुरक्षित रखते हैं ।

4.1.2 बद्ध रूपिम : यह रूपिम विभक्ति अथवा प्रत्यय का रूप हैं, जो किसी भी मुक्त रूप से मिलकर उसके अर्थ में परिवर्तन लाता हैं । बद्ध रूपिम अपने आप में पूर्ण नहीं होता । इसी कारणवश यह अर्थवान नहीं हैं । परन्तु जब यह मुक्त रूपिम के साथ जुड़ता हैं तो यह बहुत कुछ बदलाव कर सकता हैं । इसी बद्ध रूपिम को उत्पादकता की सीमा पर भी पहुँचा सकते हैं ।

एक शब्द रूप में कई रूपियों का योग सम्भव हैं । वितरण की अवधारणाओं को ध्यान में रखकर शब्द रूप रचना को भाषा वैज्ञानिकों ने रूप के दो भेद किये हैं ।

1. एक रूपिमिक
2. बहु रूपिमिक

एकरूपिमिक : जिसमें केवल एक ही रूपिम रहता हैं । यह रूपिम मुक्त भी हो सकता हैं और बद्ध भी । दोनों प्रकार के वैसे रूप जिसमें मात्र एक ही रूपिम हो, एक रूपिमिक रूप कहे जायेंगें ।

उदाहरण: प्राण, घट, प्रेम, रंग आदि ।

बहुरूपिमिक : रूप जिसमें एक से अधिक रूपिम हों, इस बहुरूपिमिक के मुख्यतः दो भेद हैं ।

1. मिश्र
2. यौगिक

मिश्र बहुरूपिम : इस के अन्तर्गत वे रूप आते हैं, जिनमें एक अथवा एक से अधिक बद्ध रूपिम तो हो, किन्तु एक से अधिक मुक्त रूपिम न रहें ।

4. **यौगिक बद्धरूपिमिक** : इस के अन्तर्गत वे रूप आते हैं, जिनमें एक से अधिक मुक्त रूपिम हो ।

उपर्युक्त दोनों रूप ऐसे हैं, जिसमें कम से कम एक मुक्त रूपिम अवश्यक रहता हैं, जिस रूप रचना में एक से अधिक बद्ध रूपिम हों, परन्तु मुक्त रूपिम बिलकुल ही न हों, ऐसे रुपिमों को "साधित मुख्य शब्द" भी कहा जाता हैं ।

रूपिम

एक रूपिमिक

बहुरूपिमिक

साधित मुख्य शब्द
बद्ध (एक से अधिक)
मुक्त (एक भी नहीं)

मिश्र

(मुक्त एक+बद्ध
एक से अधिक)

यौगिक

मुक्त (एक से अधिक)
बद्ध एक

अर्थातः रचना व प्रयोग की दृष्टि से रूपिमों के विवरण के आंशिक तत्व को देखा गया हैं, इस का विवेचन आगे दिया गया हैं ।

4.2 रूपिम वितरण

4.2.1 एक रूपिमिक मुक्त रूपिम : जिस में एक मुक्त रूप अथवा एक या अधिक बद्ध रूपिम ।

उदाहरण : प्राण, डर, पढ़, यह, कृष्णा ।

4.2.2. एक रूपिमिक बद्ध रूपिमिक : दो प्रकार के हो सकते हैं ।

1. पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग
2. पर प्रत्यय या प्रत्यय

(क) पूर्व प्रत्यय : जो रूप व शब्द के आरम्भ व आदि में जुड़ते हैं ।

जैसे : अ,अन,अल,कु,दु,बि,पर,स,सु.... आदि । जैसे दुर्बल, कुपुत्र, परतंत्र

(ख) पर प्रत्यय : जो रूप व शब्द के अंत में जुडते हैं ।

जैसे : अक, आइन, आई, आंडी, आत, इन, हम, औत, यी, ता, दार.... आदि ।

उपर्युक्त पूर्व प्रत्यय और परप्रत्यय अर्थवान नहीं हैं, अर्थ के लिए, जब ये मुक्त रूप के साथ जुडेंगें तब ये नये-नये शब्दों का निर्माण करेंगे ।

जैसे :

मुक्त रूप : पुत्र

पूर्व प्रत्यय : सु + पुत्र = सुपुत्र

अर्थ - अच्छा पुत्र

मुक्त रूप : सुंदर

पर प्रत्यय : ता

सुन्दरता

मुक्त + बद्ध

4.2.3 **बहु रूपिम** : एक से अधिक रूपिम होते हैं । यह दो भागों में विभक्त हो सकता हैं ।

1. **मिश्र** : मुक्त और बद्ध दोनों तरह के रूपिम हो सकते, परन्तु यह नियम हैं कि सिर्फ एक मुक्त रूप हों, अन्य बद्ध, हिन्दी भाषा में पाये जानेवाले इनके कुछ रूप यहाँ प्रस्तुत है :–

1. मुक्त+बद्ध= मुक्त+परप्रत्यय

 = जन+ता - जनता

 = जात+ईय - जतीय

 = कथन+अन - कथन

2. बद्ध+मुक्त- पूर्वप्रत्यय+मुक्त

 = सु+यश - सुयश

 = अ+नीति - अनीति

 = स+पूत - सपूत

3. मुक्त+बद्ध+बद्ध -

 = भारत+ईय+ता = भारतीयता

 = लच+ईला+पन- लचीलापन

4. बद्ध+मुक्त+बद्ध - पूर्व प्रत्यय+मुक्त+परप्रत्यय

 वि+भिन्न+ता - विभिन्नता

 अ+योग्य+ता - अयोग्यता

 प्रति+बंध+इत - निबंधित

5. बद्ध+बद्ध+मुक्त -

= अधि+आ+देश = अध्यादेश

= अ+स+फल = असफल

= सु+आ+गत = स्वागत

= दुः+परा+जय = दुष्पराजय

6. बद्ध+मुक्त+बद्ध+बद्ध -

= प्र+दर्श+अन+ई = प्रदर्शनी

= उप+योग+इन इ+ता = उपयोगिता

= प्रा+देश+इक+ता = प्रादेशिकता

= परि+वर्ज+अन+ईय = परिवर्जनीय

7. बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध -

अ+सम+पूर्ण+ता = असम्पूर्णता

अ+स+फल+ता = असफलता

अ+नि+यम+इत = अनियमित

8. बद्ध+बद्ध+बद्ध+बद्ध

= उत्+तर+उत्+तर = उत्तरोत्तर

9. बद्ध+बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध -

सु+वि+अत+स्थ+इत = सुव्यवस्थित

उत्+तर+अधि+कार+ई = उत्तराधिकारी

10. बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध+बद्ध

अ+वि+श्वास + स्वस+अनीय+ता = अविश्वसनीयता

अ+सम्+विधि+विध+अन+इक = असंवैधानिक

उपयुक्त मिश्र बहुरूपिमिक शब्दों में 10 प्रकार के तत्व हैं, जो एक ही मूल रूप या मुक्त रूप के साथ मिलकर ना ना प्रकार के नये शब्दों की संरचना कर रहे हैं ।

4.2.4 **यौगिक बद्धरूपिमिक :** इस प्रक्रिया में बद्ध हो चाहे न हों, किन्तु मुक्त रूप एक से अधिक अवश्य रहते हैं, कुछ रूप इस प्रकार के —

1. मुक्त+मुक्त = राष्ट+पिता

नभ+चर

रथ+यात्रा

2. मुक्त+मुक्त+बद्ध = शत+अब्द+ई = शताब्दी

भारत+वास+ई = भारतवासी

अंश+काल+इक = अंशकालिक

3. मुकत+बद्ध+मुक्त = वन+उप+वन - वनोपवन

सम्+वाद+दाता = संवाददाता

4. मुक्त+मुक्त+मुक्त = सत्+चित्+गय = सच्चिन्मय

सम+द्वि+बाहु = समद्विबाहु

5. मुक्त+मुक्त+मुक्त+मुक्त = गिरि+धर+गो+पाल = गिरिधर गोपाल

6. मुक्त+मुक्त+मुक्त+बद्ध = नन्द+आत्ता+गो+पाल = नन्दात्मजा

बहु+रूप+दर्श+ई = बहुरूपदर्शी

7. मुक्त+मुक्त+बद्ध+बद्ध = एक+स्वन+इम+इक = एकस्वनिमिक

बहु+रूप+दर्श+ई – बहुरूपदर्शी

8. मुक्त+बद्ध+बद्ध+मुक्त = स्थ+अन+इम+इक - एकस्वनिमिक

= रुद्र+उप+नि+षद - रुद्रोपनिषद

9. मुक्त+बद्ध+मुक्त+मुक्त+ = दित्+य+अंशु+माला+ = दिव्यांशुमाला

10. मुक्त+मुक्त+बद्ध+मुक्त+ = सत्+चित+आ+नन्द्र = सच्चिदानंद

त्रि+लोक+ई+नाथ = त्रिलोकनाथ

11. बद्ध+मुक्त+मुक्त+बद्ध = प्र+गति+शील+ता = प्रगतिशीलता

अ+हिंसा+वाद+ई = अहिंसावादी

प्रति+किया+वाद+ई = प्रतिक्रियावादी

12. बद्ध+मुक्त+बद्ध+मुक्त = वि+चार+अनु+भूति = विचारनुभूति

नि+आय+आ+लय = न्यायालय

13. बद्ध+मुक्त+मुक्त = आ+धार+शिला = आधारशिला

आ+नन्द+शिखा = आनन्दशिखा

14. मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध = सत्य+आ+ग्रह+इन+ई = सत्याग्रही

शब्द+अनु+शास+अन = शब्दानुशासन

15. बद्ध+बद्ध+मुक्त+मुक्त = उप+नि+वेश+वाद = उपनिवेशवाद

16. मुक्त+मुक्त+मुक्त+मुक्त+मुक्त = सम+द्वि+बाहु+त्रि+भुज = समद्विबाहुत्रिभुज

सम+त्रि+बाहु+त्रि+भुज = समत्रिबाहुत्रिभुज

17. मुक्त+मुक्त+बद्ध+बद्ध+मुकत = महा+महा+उप+अधि+आय = महामहोपाध्याय

18. मुक्त+बद्ध+मुक्त+मुक्त+बद्ध मन:+वि+ज्ञान+वाद+ई = मनोविज्ञानवादी

शिव+सम्+कल्प+आत्म+क = शिवसंकल्पात्मक

19. बद्ध+मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध = अनू+शास+अन+मूल+क = अनुशासनमूलक

परि+वर्त+अन+शील+ता = परिवर्तनशीलता

20. मुक्त+बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध = गुरु+त्च+आ+कर्ष+अन = गुरुत्चाकर्षण

महत्+त्व+आ+कांक्ष+ई = महत्वाकांक्षी

21. बद्ध+बद्ध+मुक्त+मुक्त+मुक्त = आ+अप+स्तम्ब+धर्म+सूत्र = आपस्तम्बधर्मसूत्र

22. बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध+मुक्त = सु+आ+गत+अधि+अक्ष = स्वागताध्यक्ष

23. मुक्त+मुक्त+बद्ध+बद्ध+बद्ध = रूप+स्वन+इम+इक+ई = रूपस्वनिमिक

24. मुक्त+मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध = स्व+छन्द+ता+वाद+ई = स्वच्छन्दवादी

अधः+हस्त+अ+क्षर+ई = अधोहस्ताक्षरी

25. बद्ध+मुक्त+बद्ध+बद्ध+मुक्त = वि+जय+अभि+उप+आय = विजयाभ्युपाय

26. बद्ध+मुक्त+मुक्त+मुक्त+बद्ध = सु+गंध+त्रि+फल+आ = सुगंधत्रिफला

27. मुक्त+मुक्त+मुक्त+बद्ध+मुक्त = भाषा+काल+कम+वि+ज्ञान = भाषाकालकमविज्ञान

28. मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध+बद्ध = शीत+ल+अष्ट+म+ई = शीतलाष्टमी

29. बद्ध+बद्ध+मुक्त+मुक्त+बद्ध = अ+नि+चित+अर्थ+ई = अनिश्चितार्थी

अभि+प्र+आय+अत्म+क = अभिप्रायात्मक

30. बद्ध+मुक्त+मुक्त+बद्ध+बद्ध = उभ+अय+लिंग+ई+ता = उभयलिंगिता

31. मुक्त+मुक्त+मुक्त+बद्ध+मुक्त+मुक्त+बद्ध =

शब्द+रूप+प्र+क्रिया+आत्म+क = शब्दरूप प्रक्रियात्मक

32. मुक्त+मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध =

रूप+तान+इम+वि+ज्ञान+ई = रूपतानिमविज्ञानी

33. मुक्त+मुक्त+बद्ध+बद्ध+बद्ध+मुक्त =

वृहत्+अरण्य+अक+उप+निष+द = वृद्धारण्यकोपनिषद

34. मुक्त+मुक्त+बद्ध+बद्ध+मुक्त+मुक्त =

मनः+भाव+अभि+वि+अक्ति+वाद = मनोभावाभिव्यक्तिवाद

35. मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध =

सत्+अ+सत्+वि+वेक+इनी = सद्सद्विविवेकिनी

36. बद्ध+मुक्त+बद्ध+मुक्त+मुक्त+बद्ध =

सम्+आज+वि+ज्ञान+वाद+ई = समाजविज्ञानवादी

37. मुक्त+मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध+मुक्त =

वृन्दा+वन+वि+हार+ई+लाल = वृन्दावनबिहारीलाल

38. मुक्त+मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध+बद्ध =

पर+मुख+अप+ईक्ष+ई+ता = परमुखापेक्षिता

39. मुक्त+बद्ध+बद्ध+मुक्त+मुक्त+बद्ध =

वाक्य+वि+नि+आस+आत्म+क = वाक्यविन्यासात्मक

40. बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध =

अ+स+मान+ता+बोध+क = असमानताबोधक

41. बद्ध+मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध+बद्ध =

वि+रह+उत्+कण्ठ+इत+आ = विरहोत्कण्ठिता

42. मुक्त+बद्ध+मुक्त+मुक्त+बद्ध+बद्ध =

नव+उत्+मेष+शाल+इन+ई = नवोन्मेषशालिनी

43. मुक्त+बद्ध+मुक्त+मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध =

अवर+प्र+मण्डल+पद+अधि+कार+ई = अवरप्रमण्डलपदाधिकारी

44. बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध =

उत्+वर+या+ई+त्त्व+हीन+ता = उत्तरादायित्वहीनता

45. बद्ध+मुक्त+बद्ध+मुक्त+मुक्त+बद्ध+बद्ध =

आ+चार+आ+दर्श+बोध+इन+ई = आचार्यदर्शबोधिनी

46. बद्ध+मुक्त+बद्ध+मुक्त+बद्ध+बद्ध+मुक्त =

अनू+कर+अण+मूल+क+ता+वाद = अनूकरणमूलकतावाद

4.2.5 **साधित मुख्य शब्द :** प्रस्तुत शब्दों में मूल शब्द या मुक्त रूप नहीं रहता पर एक से अधिक बद्ध रूप रहते हैं ।

बद्ध+बद्ध = उत्+तर = उत्तर

= उत्+तम = उत्तम

= सम्+प्रति = सम्प्रति

4.3 सम्बन्धतत्व के आधार पर रूपिम

भाषाविज्ञन में, विभिन्न अर्थतत्वों के आपस में संबध दिखानेवाले तत्व को संबंध तत्व कहते हैं । ये

संबंधतत्व शब्दों व रूपों में जुड़कर भाषाई व्याकरणिक कोटियों में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं । हिन्दी भाषा की आकृति व प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, संबंधतत्व 7 प्रकार के हैं ।

1. सामासिक रूप
2. प्रत्यययोजन
3. आभ्यन्तर परिवर्तन
4. शून्य रूप
5. स्वतंत्र रूप
6. शब्द क्रम
7. द्विवरावृति

4.3.1 सामासिक रूप :

सामासिक रूप उस रूपमीय प्रक्रिया का अंग हैं, जिसमें दो अथवा दो से अधिक रूपों के परस्पर योग से एक नवीन रूप का निर्माण होता हैं । ये रूप समानार्थी भी हो सकते है और भिन्नार्थी भी, परस्पर संबंध बतलानेवाले दो या दो से अधिक शब्दों के योग-प्रत्यय का लोप हो जाता हैं, तथा योगविहीन मुक्त शब्दों को मिलाकर स्वतंत्र शब्द निर्मित हो जाता हैं, ऐसे निर्मित शब्दों में सामासिक रूप सन्निहित होता हैं । इस तरह सामासिक रूपों की रचना के लिए दो या दो से अधिक शब्दों का योग अपेक्षित हैं । सामासिक रूप की रचना के लिए कम से कम दो मुक्त रूपों का योग अत्यन्त आवश्यक हैं ।

हिन्दी भाषा में विभिन्न पदविभागों के योग से निर्मित सामासिक रूपों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं ।

1. संज्ञा+संज्ञा = संज्ञा

    पन+घट = पनघट

    मधु+कंठ = मधुकंठ

2. संज्ञा+संज्ञा = विशेषण = पुण्य+आत्मा – पुण्यात्मा

    माखन+चोर – माखनचोर

3. संज्ञा+संज्ञा = अव्यय – रोज+रोज – रोजरोज

श्याम+सबेरे – शामसबेरे

4. संज्ञा+विशेषण – संज्ञा – प्राण+प्रिय – प्राणप्रिय

नंद+लाल – नंदलाल

5. संज्ञा+विशेषण – विशेषण – जन्म+अंध – जन्मांध

शोक+आतुर – शोकातुर

6. संज्ञा+क्रिया – विशेषण – घर+फोड – घरफोड ना

मन+चला – मनचला

7. संज्ञा+क्रिया – अव्यय – दिन+भर = दिनभर

मन+भर = मनभर

8. संज्ञा+क्रिया – संज्ञा – पत+झड़ – पतझड़ "ना"

नभ+चर – नभचर

9. संज्ञा+अव्यय – संज्ञा – जल+जात – जलजात

हिम+पात – हिमपात

10. संज्ञा+अव्यय – अव्यय – आदेश+अनुसार – आदेशानुसार

वचन+अनुकुल – वचनानुकुल

11. विशेषण+संज्ञा – विशेषण – नील+कंठ – नीलकंड

पूज्य+पाद – पूज्यपाद

12. विशेषण+संज्ञा – संज्ञा – त्रि+लोचन – त्रिलोचन

श्याम+धन – श्यामधन

13. विशेषण+विशेषण – संज्ञा – श्याम+सुन्दर – शयामसुन्दर

भिष्ट+मिप्रय – भिष्टप्रिय

14. विशेषण+विशेषण – विशेषण – प्रियदर्शी – प्रिय+दर्शी

न्यून+अधिक – न्यूनाधिक

15. विशेषण+क्रिया – विशेषण – अध+पका – अधपका

अध+जला – अधजला

16. विशेषण+विशेषण = अव्यय – लाल+पीला – लालपीला

17. क्रिया+संज्ञा – संज्ञा – चल+चित्र – चलचित्र

18. क्रिया+क्रिया – संज्ञा – देखा+देखी – देखादेखी

लूट+मार – लूटमार

19. क्रिया+संज्ञा – विशेषण – हस+मुख – हसमुख

20. क्रिया+क्रिया – विशेषण – लिया+दिया – लियादिया

पढ़ा+लिखा – पढ़ालिखा

21. क्रिया+क्रिया – क्रिया – रोया+गाया – रोयागाया

देखा+सुना – देखासुना

22. क्रिया+क्रिया – अव्यय – आते+जाते – आतेजाते

हसते+बोलते – हसतेबोलते

23. अव्यय+संज्ञा – अव्यय – यश+शक्ति – यशशक्ति

यथा+साध्य – यथासाध्य

24. अव्यय+क्रिया = अव्यय – आज+भर – आजभर

25. अव्यय+अव्यय = अव्यय – आज+कल – आजकल

यहाँ+वहाँ – यहाँवहाँ

4.3.2 <u>प्रत्यययोजन</u> :

इस के अन्तर्गत मूल रूप के साथ बद्ध रूपिम के योग से प्रत्यययोजन का प्रचलन होता हैं । प्रत्यय वस्तुतः बद्ध रूपिम हैं, यह प्रत्यय प्रतिपादिक व धातु से मिलकर अपना अर्थ बना लेता हैं । प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं ।

1. पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग)   2. मध्य प्रत्यय   3. पर प्रत्यय (प्रत्यय)

1. **पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग) :**

धातु या प्रतिपादिक के पूर्व में जो रूपिम जुड़ता हैं, उसे पूर्व प्रत्यय कहते हैं । इसे पारम्परिक व्याकरण में उपसर्ग भी कहते हैं ।

तत्सम उपसर्ग : संस्कृत उपसर्ग

1. **अति :** (अधिक, परे, उसपार) – अतिकाल, अतिरिक्त, अतिरंजन, अतिमानव आदि
यह संस्कृत तत्सम उपसर्ग हैं ।

2. **अधि :** (श्रेष्ठ, मुख्य, ऊपर) अधिपति, अधिकार, अधिकरण, अधिराज, अधिदेव आदि
यह संस्कृत तत्सम उपसर्ग हैं ।

3. **अनु :** (पीछे, समान, छोटा) अनुक्रमण, अनुचर, अनुस्वार, अनुशासन, अनुभाग आदि
यह संस्कृत तत्सम उपसर्ग हैं ।

4. **अप :** (बुरा, अभाव, हीन) उपकीर्ति, अपमान, अपशब्द, अपराध
यह संस्कृत तत्सम उपसर्ग हैं ।

5. **अभि :** (ओर, पास, सामने) अभिमुख अभिप्राय, अभिलाषा आदि
यह भी संस्कृत तत्सम उपसर्ग हैं ।

6. अव : (नीच, हीन, अपकर्ष) अवगत, अवगुण, अवनति, अवतार आदि

यह भी संस्कृत तत्सम उपसर्ग हैं, यह हिन्दी के अवगुन इत्यादि शब्दों में मिलता हैं ।

7. **आ :** (समेत, अल्पता, सहित, विपरीत आकर्षण) आकर्षण, आजन्म, आशंका, आभास, आजीवन,

8. **उत** : (ऊपर, ऊंचा, श्रेष्ठ) उत्कर्ष, उत्कंठ, उत्तम, उत्पत्ति,

9. **उप:** (समान, समीप, सहायक) उपनयन, उपनाम, उपकुल, उपवन, उपदेश, आदि

10. **दुर/दुस** : (बुरा, कठिन, दुष्ट) दुर्गम, दुर्लभ, दुस्तर, दुराचार, दुष्कर आदि

11. **नि** - (अन्दर, नीचे, बड़ा) निदर्शन, निपात, नियम, निरूपण, निगूढ़, नियम आदि

12. **निर/निस** : (निषेध, बाहर) निर्गत, निर्णय, निर्बल, निरपराध, आदि

13. **परा** - (उल्टा, पीछे, परे) पराक्रम, पराजय, पराभव, आदि

14. **परि** – (आसपास, पूर्ण, दोष-कथन) परिक्रमा, परिपूर्ण, परिपक्व, परिश्रम आदि

15. **प्र** : (अधिक, आगे, ऊपर) प्रबल, प्रताप, प्रकाश प्रख्यात, प्रचार आदि

16. **प्रति** : (निरुद्‌ध, सामने, हरएक) प्रतिकूल, प्रत्यक्ष, प्रतिवाद, प्रतिकार, प्रतिदिन आदि

17. **वि** : (विशेष, भिन्न, विरोध) विदेश, विवाद, विभाग, विशुद्ध आदि

18. **सम्/सं** : (पूर्ण, अच्छा, साथ) संतोष, संगम, सम्मान, संस्कार, संयोग आदि

19. **सु** : (अच्छा, सहज) सुकर्म, सुपुत्र, सुलभ, सुगम आदि

20. **अ/अन्** : (अभाव, निषेध) इस उपसर्ग में स्वरादि शब्दों के पहले "अ" के स्थान में "अन्" हो जाता है, और "अ्न" के "न्" में आगे का स्वर मिल जाता हैं ।

उदा: अकारण, अधर्म, अभाव, अशक्त,
अनीति, अनेक आदि ।

21. **अधस्/अध** : (भीतर, नीचे) अधोगति, अधोमुख, अध:पतन आदि

22. **अंतर/अन्त** : (भीतर) अन्तरार्ष्ट्रिय, अन्त:पुर, अत:करण आदि

23. **कु/का/कद** : (बुरा) कुकर्म, कुयोम, का पुरुष, कदाचार आदि

24. **चिर** : (बहुत, देर का) चिरकाल, चिराचु, चिरकुमार, चिरंजीवी आदि

25. **न** : (अभाव) नपुसंक, नास्तिक, नक्षत्र, आदि

26. **पुरस** : (सामने) पुरस्कार, पुरोहित आदि

27. **पुनर/पुनः** -: (फिर) पुनर्विवाह, पुनर्जन्म, पुनरुक्ति आदि

28. **पुरा** : (पहले) पुरातन, पुरावृत, पुरातत्व आदि

29. **पूर्व** : (पहला) पूर्वपक्ष, पूर्वनिश्चित आदि

30. **बहिर/बहि** : (बाहर) बहिष्कार, बहिर्गमन, बहिद्वार, बहिर्गत

31. **वहु** : (अधिक) बहुमत, बहुमूल्य, बहुवचन, आदि

32. **स** : (सहित) सफल, सजीव, सफल, सगोत्र आदि

33. **सत्/सद्** : (अच्छा) सत्पुरुष, सत्कर्म, सदाचार, सदव्यवहार आदि

34. **सह** : (साथ) सहोदर, सहपाठी, सहचर, सहज आदि

35. **स्व** : (अपना, निजी) स्वतंत्र, स्वदेशी, स्वराज्य, स्वकर्म आदि

36. **स्वयं** : (अपने आप, खुद) स्वयंसेवक, स्वयंवर, स्वयंभू आदि

37. **पर** : (अन्य) परदेशी, पराधीन आदि

38. **तत्** : (वही) तत्काल, तन्मय, तल्लीन, तत्सम आदि

तद्भव उपसर्ग : (हिन्दी उपसर्ग)

1. **अध** – (आधा) संस्कृत में अर्द्ध – आधा, अधपक्का, अधकच्चा, अधजला, अधखिला आदि

2. **उन** – संस्कृत में ऊन (कम,थोड़ा) उनसाठ, उनीस, उन्तीस आदि

3. **दु** – (दो) संस्कृत में दवौ – दुपट्टा, दुगुणा, दुमुहां आदि

4. **बिन** – (बिना, अभाव) बिनबोया, बिनव्याहा,

5. **भर** – (भरा,पूरा) भरपूर, भरपेट, भरसक आदि

6. उ – (भरा हुआ) उनींद, उऋण

7. **औं** – संस्कृत में (अव) (नीचे, हीन) औतार, औगुन, औहाट आदि

8. **नि** – संस्कृत में निर्/निः (रहित) निडर, निकम्मा, निहत्या, निपूता

यह "नि" उपसर्ग, तत्सग उपसर्ग में "भीतर/नीचे" अर्थ के साथ शब्द में प्रयुक्त होता हैं । जैसे निरूपण, पर यह "नि" हिन्दी उपसर्ग हैं, यह अभाव रहित अर्थ में आता हैं । यह तत्सक में भी और, तद्भव दोनों में अलग-अलग अर्थ लेकर, शब्द में प्रयोग होता हैं ।

9. **अ/अन** : यह उपसर्ग भी दोनों तत्सम व तद्भव में, एक ही अर्थ के साथ प्रयोग होता हैं । यह हिन्दी का उपसर्ग हैं । (अभाव, नहीं) – अचेतन, अटल, अनमोल, अनसूनी आदि ।

10. **स-/सु** : यह उपसर्ग भी दोनों तत्सम व तद्भव में एक ही अर्थ के साथ प्रयोग होता हैं । (अच्छा, सहित) सपूत, सुजान, सुघड़, सचेत आदि ।

विदेशी उपसर्ग :

1. **अल** – यह उर्दू उपसर्ग हैं, हिन्दी शब्दों के साथ प्रयुक्त होता हैं। (निश्चित) अलगरज़, अलबिदा, अलबत्ता आदि ।

2. **ऐन** – यह उर्दू उपसर्ग हैं, हिन्दी शब्दों के साथ प्रयुक्त होता हैं। (ठिक) ऐनवक्त, ऐनमौका, ऐनजवानी आदि

3. **कम** – (थोडा) कमजोर, कमसमझ, कमउम्र आदि

4. **खुश** – (अच्छा) खुशमिज़ाज, खुशकिस्मत आदि

5. **गैर** – (दूसरा, भिन्न, अन्य) गैरहाजिर, गैरमुल्क, गैरकानूनी आदि

6. **दर** – (में) दरमियान, दरअसल, दरहकीकत

7. **ना** – (अभाव, कमी) नापसंद, नादान, नासमझ नाखून आदि

8. **फ़िल** – यह फारसी उपसर्ग है (में) फिलहाल

9. **फ़ी** – (प्रति) फी आदमी, फी समय आदि (उपसर्गवत् प्रयुक्त विशेषण शब्द बनाता)

10. **ब** – (अनुसार, ओर) बदसूरत, बनाम, बदौलत बइजलास आदि

11. **बद** – (बुरा) बदनीयत, बदबू, बदनाम

12. **बा** – (अनुसार, सहित) बाकायदा, बत्तमीज़, बाजाप्ता

13. **बिला** –(बिमा) बिलाकसूर, बिलानागा, बिलाशक

14. **बे** – (बिना) बेचारा, बेरहम, बेचैन, बेहोश

15. ला – (बिना, अभाव, सीमा का पार) लापरवाह, लाजवाब, लापता, लाचार, लावारिस

16. **सर** – (मुख्य) सरताज, सरपंच, सरदार

17. **हम** – (साथी) हमउम्र, हमदम, हमदर्द

18. हर – (प्रत्येक) हररोज, हरघड़ी, हरएक, हरकोई आदि ।

(यह उपसर्ग, उपसर्गवत् विशेषण शब्द भी बनाता हैं ।)

मध्य प्रत्यय : मूल शब्द के मध्य में आकर जब संबंधत्तव एक स्वतंत्र शब्द निर्माण कर लेते हैं, उन प्रत्ययों को मध्यप्रत्यय कहते हैं । शब्द में मध्य प्रत्यय जुडने सें, पूर्ण रूप से ध्वनि परिवर्तन होता है ।

उदाहरण :

-अक =चल – चालक

-इ =दशरथ – दाशरथी

-इक =धर्म – धार्मिक

-ऊ =चल – चालू

-ई =सुमित्र – सौमित्र

-एय =गंगा – गांगेय

-य =मधुर – माधुर्य

उपयुक्त प्रत्ययों में "इक" प्रत्यय ज्यादा मात्रा में प्रचलित व चर्चित हैं ।

परप्रत्यय : (प्रत्यय) : धातु या प्रतिपादिक के अन्त में जो बद्ध रूपिम जुड़ते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं ।

कृदन्त प्रत्यय :

प्रत्यय	मूल शब्द	- प्रत्यय से जुडे शब्द
- अ	- चल(ना)	- चाल
- अक्कड़	- पी(ना)	- पियक्कड़
- अंत	- रट(ना)	- रटंन्त
- आ	- मर(ना)	- मरा
- आई	- लड(ना)	- लड़ाई
- आऊ	- खा(ना)	- खाऊ
- आक	- पैर(ना)	- पैराक
- आका	- सड़(ना)	- सडाका
- आन	- उठ(ना)	- उठान
- आप	- मिल(ना)	- मिलाप
- आपा	- पूज(ना)	- पूजापा
- आव	- पड़(ना)	- पड़ाव
- आवना	- डर(ना)	- डरावना
- आसा	- रो(ना)	- रुआसा
- आस	- नींद	- नींदास
- आहट	- कड़ुवा	- कडवाहट
- आवनी	- डर(ना)	- डरावनी
- आवा	- भूल(ना)	- भूलावा
- आवट	- लिख(ना)	- लिखावट
- ई	- रेत(ना)	- रेती
- इन	- बरेठ(ना)	- बरेठिन
- इयल	- अड़ना	- अडियल
- इया	- गठ(ना)	- गठरिया

- ऐया	- काट(ना)	- कठैया
- एर	- बस(ना)	- बसेरा
- एरा	- निबट(ना)	- निबटारा
- ऐत	- नाच(ना)	- नचैत
- ओड़	- हंस(ना)	- हंसोड़
- औता	- चुका(ना)	- चुकौता
- औती	- चुका(ना)	- चुकौती
- औटी	- कस(ना)	- कसौटी
- औना	- खेल(ना)	- खिलौना
- औनी	- मिय(ना)	- मिचौनी
- औवल	- भूझ(ना)	- भुझौवल
- क	- फाड़(ना)	- फाटक
- गी	- दे(ना)	- देनगी
- त	- बच(ना)	- बचत
- ता	- कर(ना)	- करता
- न	- रह(ना)	- रहन
- नी	- हो(ना)	- होनी
- ती	- घट(ना)	- घटती
- वैया	- गा(ना)	- गवैया
- ऊ	- खा(ना)	- खाऊ

तद्धित प्रत्यय :

- आ	- बोझ	- बोझा
- आई	- भला	- भलाई

- आईद	- घिन	- घिनाईद
- आका	- धम	- धमाका
- आन	- लंबा	- लंबान
- आना	- राजपूत	- राजपूताना
- आनी	- पंडित	- पंडितानी
- आर	- सोना	- सुनार
- आरा	- बनिज	- बविजारा
- आरी	- पूजा	- पूजारी
- आयत	- पंच	- पंचायत
- आल	- ससुर	- ससुराल
- आला	- शिवालय	- शिवाला
- आली	- दीपावली	- दीवाली
- आलु	- कृपा	- कृपालु
- आलू	- झगड़ा	- झगड़ालू
- आस	- नींदं	- निदास
- आसा	- रोना	- रुआसा
- आहट	- चिकना	- चिकनाहट
आ-ई	- दशरथ	- दाशरथी
- ई	- तेल	- तेली
- इन	- मुंशी	- मुंशियाइन
- इया	- दुख	- दुखिया
- ईला	- रंग	- रंगीला
- इक	- वर्ष	- वार्षिक
- ऊ	- ढाल	- ढालू

- उआ	- गेरु	- गेरुआ
- एय	- गंगा	- गांगेय
- एरा	- सांप	- सपेरा
- ऐत	- लठ	- लठैत
- एड़ी	- गांजा	- गंजेड़ी
- ऐला	- बन	- बनैला
- औती	- बूढ़ा	- बुढौती
- औटा	- काजर	- कजरौटा
- औती	- बाप	- बपौती
- क	- धम	- धमक
- जा	- भाई	- भतिजा
- अटा	- काला	- कलूटा
- टी	- बहू	- बहूटी
- डा	- चाम	- चमड़ा
- डी	- पंख	- पंखड़ी
- त	- रंग	- रंगत
- ता	- मित्र	- मित्रता
- ना	- घिन	- घिनौना
- नी	- चांद	- चांदनी
- पा	- बूढ़ा	- बुढापा
- पन	- काला	- कालापन
- य	- मधुर	- माधुर्य
- री	- कोठा	- कोठरी
- रु	- पंखी	- पंखेरु

- ला	- आगे	- अगला
- ली	- खाज	- खुजली
- वाल	- प्रयाग	- प्रयागवाल
- वाला	- टोपी	- टोपीवाला
- वान्	- धन	- धनवान
- सा	- हाथी	- हाथीसा
- त्व	- गुरु	- गुरुत्व
- वंत	- धन	- धनवंत
- हा	- पानी	- पनिहा
- हरा	- दो	- दुहरा
- हारा	- लकड़ी	- लकड़हारा
- हार	- होना	- होनहार

विदेशी प्रत्यय :

आना	- जुर्माना, सालाना, धराना
खाना	- छापाखाना, दवाखाना, डाकखाना
खोर	- चुगुलखोर, घुसखोर, गमखोर
गर	- जादूगर, कारीगर, सौदागर
गिरी	- बाबूगीरी, चमचागीरी, कुलीगीरी
चा	- बगीचा, चमचा, गलीचा
ची	- मसालची, तबलची, बावरची
दान/दानी	- कमलदान, पीकदान, धूपदानी
दार	- ईमानदार, इज्जतदार, दूकानदार
नवीस	- नकलनवीस, अर्जीनवीस

बन्द/बन्दी - कमरबन्द, हदबन्दी, बिस्तरबन्द

बाज - दगाबाज, कबूतरबाज

वान - दरवान, गाडीवान, इक्कावान

कृदन्त और तद्धित दोनों में समान प्रत्यय

- अ
- आई
- आका
- आन
- आस
- आसा
- आहट
- आव
- ई
- इन
- इया
- ऊ
- एरा
- ऐत
- औता/औती
- औटा/औटी
- ओती
- क
- हा

- त
- ता
- न
- ना
- नी
- वां

इन पर व पूर्व प्रत्यय के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी प्रत्यय हैं जो मूल रूप के पहले ही लग जाते हैं ।

1. पूर्व प्रत्यय + परप्रत्यय + मूल शब्द
2. पूर्व प्रत्यय + परप्रत्यय + पर प्रत्यय + मूल शब्द
3. पूर्व प्रत्यय + पूर्व प्रत्यय + मूल शब्द
4. पर प्रत्यय + पर प्रत्यय + मूल शब्द
5. पूर्व प्रत्यय + पूर्व प्रत्यय + पर प्रत्यय + शब्द
6. पूर्व प्रत्यय + पूर्व प्रत्यय + पर प्रत्यय + पर प्रत्यय + शब्द
7. पूर्व प्रत्यय + पूर्व प्रत्यय + पूर्व प्रत्यय + पर प्रत्यय + शब्द

4.3.3 **आभ्यन्तर परिवर्तन** : इसे आन्तरिक परिवर्तन भी कहा जाता हैं । अर्थ व रूप में प्रायः सामानता होते हुए भी कुछ ध्वनियों में यदि अन्तर या परिवर्तन हो जाता हैं, मूल शब्द से निकलनेवाले रूप को आभ्यन्तर परिवर्तन की संज्ञा दी जाती हैं । ये आभ्यन्तर परिवर्तन शब्द व रूप में तीन प्रकार के होते हैं ।

1. स्वर परिवर्तन
2. व्यंजन परिवर्तन
3. आमूल परिवर्तन

1. स्वर परिवर्तन :

अ) आरम्भ में स्वर - परिवर्तन

उदाः शिव - शैव

पुर - पौर

आ) मध्य में स्वर परिवर्तन

उदाः संज्ञा से विशेषण

अभिनव - अभिनेय

इ) अन्त में स्वर परिवर्तन

संज्ञा से विशेषण

ख्याति - ख्यात

पक्ष - पक्षी

ई) लिंग/वचन से प्रभावित –

प्यार/प्यारा/प्यारी/प्यारे

ठंढ़े/ठंढ़ा/ठंढ़ी/ठंढ़

उ) आदि व अन्त में स्वर परिवर्तन

संज्ञा – विशेषण

पृथा – पृथ

मुनी – मौन

क्रिया से संज्ञा

चाटना – चटनी

ऊ) मध्य व अन्त में स्वर परिवर्तन

क्रिया से संज्ञा

उड़ना – उड़ान

ढलना – ढलान

ख) व्यंजन परिवर्तन :

अ) आरम्भ में व्यंजन परिवर्तन –

स – स

यमुना – जमुना

आ) मध्य में व्यंजन परिवर्तन –

सं से वि

आधात – आहत

सं से सं

प्रकट – प्रगट

इ) अन्त में व्यंजन परिवर्तन –

सं – वि

गणन – गणक

पूजन – पूज्य

स्वर तथा व्यंजन दोनों के मिले-जुले रूप से भी संबंधतत्व द्योतित होता हैं, -

1. आदि में स्वर तथा अन्त में व्यंजन

सं – वि

मोक्ष – मुक्त

भय – भीत

2. मध्य में स्वर तथा अन्त में व्यंजन परिवर्तन –

सं – वि

उदय – उदित

आश्रय – आश्रित

3. अन्त में स्वर तथा व्यंजन परिवर्तन –

क्रिया से सं

रंगना – रंगत

खपना – खपत

4. आरम्भ में स्वर तथा अन्त में स्वर सहित व्यंजन परिवर्तन :

सं से वि

पानी – पेय

शक्ति – शाक्त

5. मध्य में स्वर तथा अन्त में स्वर सहित व्यंजन परिवर्तन :

क्रि – सं

मिलना – मिलाप

सं से वि

महत्ता – महान्

3. आमूल परिवर्तन :

आन्तरिक परिवर्तन द्वारा निर्मित शब्द की रूप रचना में जब ऐसा अन्तर दृष्टिगत हो जिसमें मूल और परिवर्तित रूप में कोई ध्वन्यात्मक समता नहीं रहें, अर्थात् परिवर्तित रूप सर्वथा नवीन दिखाई पड़े तो तेसे परिवर्तित रूप को आमूल परिवर्तन कहते हैं ।

उदा : जाना – गया

(वर्तमान – भूतकाल)

उपयुक्त शब्दों में किसी भी तरह की ध्वन्यात्मक समता नहीं हैं, ये काल का बदलाव हैं, परन्तु यह सत्य है कि "गया" शब्द का मूल रूप "जाना" हैं, यह तत्व व इन शब्दों को ऐतिहासिक रूप में प्रयोग किया जाने लागा ।

4.3.4 शून्य रूप

शब्द जब रूप में प्रयुक्त होता है तो उसमें विभक्तियों का योग अत्यंत आवश्यक हैं, बिना किसी विभक्ति के योग के शब्द वाक्य में प्रयुक्त हो ही नहीं सकता हैं । जहाँ पर विभक्ति स्पष्ट नहीं होती वहाँ शून्य रूपिम के योग की परिकल्पना कर ली जाती हैं । हिन्दी के एकवचन संज्ञा शब्दों को बहुवचन बनाने के लिए उनमें बद्ध रूपिमों के योग का प्रचलन है । जैसे

बालक – बालकों – बालक+ओं

लड़का – लड़के – लड़का+ए

फिर भी हिन्दी में ऐसे बहुत सारे शब्द हैं, जिन्हें एकवचन से बहुवचन बनाने के समय उनके रूप में परिवर्तन नहीं होता ।

एक वचन	बहु बवचन
जय	जय
मान	मान
तोष	तोष

उपयुक्त बहुवचन शब्द जय, मान, तोष की रचन दो रूपिमों के योग से हुई हैं, इन तीनों शब्दों में "शून्य" रूपिम का योग हुआ हैं, क्योंकि बहुवचन द्योतक ऐसा कोई शब्द होता ही नहीं जिसमें रूपरचनात्मक दृष्टि से मात्र एक रूपिम हों । भाषाविज्ञानियों ने "शून्य" रूपिम की परिकल्पना की हैं, और कहा हैं कि जहाँ एक वचन में शून्य प्रत्यय जुड़ता हैं, तब वह शब्द बहुवचन कहलाता हैं ।

उदाहरण :

मान – मान + शून्य = मान

शाप – शाप + शून्य = शाप

यश – यश + शून्य = यश

4.3.5 <u>स्वतंत्र शब्द</u> : हिन्दी में कुछ ऐसे स्वतंत्र रूप भी हैं, जो संबंधतत्व का काम करते हैं । हिन्दी के कारकीय परसर्ग – ने, को, में, से, का, पर ..... आदि, स्वतंत्र रूप हैं । वाक्यों में ये दो रूपों के बीच का संबंध अभिव्यक्त करते हैं, हिन्दी में विभक्तियों के योग के साथ-साथ कारकीय परसर्ग या स्वतंत्र रूपों की आवश्यकता भी होती हैं । कारकीय परसर्ग रूप भी हैं और रूपिम भी । हिन्दी में कारक के साथ निम्नलिखित परसर्ग प्रचलित हैं ।

कर्ता – ने

कर्म – को

करण – से

सम्प्रदान – के लिए, को

अपादान – से

संबंध – का

अधिकरण – में, पर

4.3.6 **शब्द क्रम :** रूपरचना में शब्दों का क्रम निश्चित होता हैं, यदि उसके क्रम में परिवर्तन का निर्देश कर दिया जाए तो उनके रूप और अर्थ में अंतर आ जाता हैं, क्योंकि शब्दों अथवा रूपों के क्रम में भी रूपिम सन्निहित रहता हैं । जैसे :

प्रवेशद्वार – द्वारप्रवेश

राजपुरोहित – पुरोहितराज

पदविभागों के अनुसार हिन्दी में शब्दक्रम के उदाहरण इस प्रकार हैं :–

संज्ञा – धर्मराज – राजधर्म

धर्मराज – युधिष्ठिर

राजधर्म – शाही धर्म

विशेषण - खट्ठामिठा – मीठाखट्ठा

खट्टा-मीठा – सुखदुख

मीठा-खट्टा – स्वाद विशेष

क्रिया – खाना-पीना

पीना-खाना

खाना-पीना – भोजन व जल ग्रहण करना

पीना-खाना – विशेष अर्थ द्योतक (शराबपान व मांसाहार)

वाक्य : इसी प्रकार वाक्य में भी शब्दों के क्रम बदल जाने के कारण अर्थ में परिवर्तन हो जाता हैं । जैसे :

साँप मेढ़क खाता हैं ।

मेढ़क साँप खाता हैं ।

अर्थात : भाषा व वाक्य के अन्तर्गत शब्द-क्रम का होना अति आवश्यक हैं ।

<u>द्विरावृति</u> : सम या विषम प्रातिपदिक अथवा रूपरचना की आवृति से संबंधतत्व का जो नया रूप सामने आता हैं, उसे द्विरावृति कहा जाता हैं । हिन्दी भाषा में आवृति के मुख्यतः दो रूप मिलते हैं ।

1. सम 2. विषम

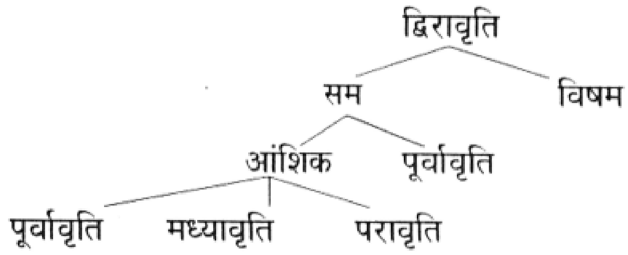

4.3.7 <u>सम द्विरावृति</u>

क) <u>आंशिक सम</u> : जब शब्द में कोई आंशिक ध्वनि ही आवृत हो तो उसे आंशिक द्विरावृति कहा जाता हैं । मूल अथवा प्रतिपदिक के केवल आदि, मध्य व अंतिम भाग की ध्वनि ही आवृत हो तो यह संबंधतत्व आंशिक सम के अन्तर्गत वर्गीकृत होता हैं । इसके भी तीन रूप हैं ।

1. **<u>पूर्वावृति</u>** : जब शब्द का केवल पूर्व रूप ही आवृत होकर प्राय : समान ध्वनियों का निष्पादन करे तथा उसके अंतिम अंश में किसी प्रकार की ध्वन्यात्मक समता नहीं रहें तो इसे पूर्वावृति कहा जाता हैं ।

काम - काज

दिल - दिमाग

उपयुक्त शब्द काम-काज में (का) ध्वनि तो आवृत हैं, किन्तु अंत की ध्वनि (म) और (ज) में समता नहीं है,

2. "**मध्यावृति** : जब आवृत शब्द में केवल मध्य भाग में ध्वन्यात्मक समता हो तथा इनके पूर्व और अन्त में कोई ध्वनि-साम्य न हो तो उसे मध्यावृति कहते हैं ।

सवाल-जवाब

उपयुक्त शब्द में मध्य में ध्वन्यात्मक समता हैं, पूर्व व अंत में नहीं हैं ।

3. **परावृति** : युग्म शब्द के केवल अंतिम भाग में ही ध्वनि-साम्य होने पर उसे परावृति की संज्ञा दी जाती हैं ।

कांट - छांट

रूखा - सूखा

उपयुक्त शब्दों में केवल अंत में ध्वन्यात्मक समता हैं, तथा, पूर्व व मध्य में नहीं हैं ।

4. **पूर्ण सम** : उच्चरित अंश जब पूर्ण रूप से आवृत हो जाए तो उसे पूर्णावृति कहते हैं ।

बार - बार

फट - फट

क्षण - क्षण

घर - घर

II. **विषम** : जब उच्चरित अंश किसी भिन्न प्रकार के उच्चरित अंश के साथ युग्म के रूप में व्यवहृत हो तो उसे विषम आवृति कहा जाता हैं, ऐसे युग्म शब्दों में कोई ध्वन्यात्मक समता नहीं रहती, हिन्दी भाषा में ऐसे आवृति अंश युग्म शब्द के रूप में मुक्त रूप से प्रचलित हैं ।

पढ़ी - लिखी

हार - जीत आदि

4.4 **हिन्दी के उत्पादक रूपिम** : भाषा संरचना में जहाँ भाषा के उत्पादक होने का तत्व हैं, तब

विभिन्न भाषिक इकाइयों को संदर्भ में लेना पड़ता हैं । विभिन्न भाषिक इकाइयों में व्यक्ति जो कुछ बोलता हैं, उसके किसी-न-किसी अर्थ की प्रतीति होती हैं, यह अर्थ किस रूप में किस संदर्भ में उपयोग हो रहा हैं, इस अर्थ की उपयोगिता के क्षेत्रों को ध्यान में रखकर उस शब्द की उत्पादक प्रक्रिया को प्रस्तुत कर सकते हैं । मानव के मानसिक प्रतीति का मूर्त रूप विभिन्न भाषिक इकाइयों से ही प्राप्त हो पाता हैं । सभी भाषिक इकाइयों को देखना इस शोध का संदर्भ नहीं हैं । परन्तु भाषा की जो महत्वपूर्ण इकाई "प्रत्यययोजन" हैं, वह किस संदर्भ में भाषा की उत्पादकता को बढ़ा सकती हैं, और वह प्रत्यय, किस तरह विभिन्न तत्वों से जुड़ता हैं, और यह जुड़कर किस तरह भाषा के व्याकरणिक कोटियों को बदलता हैं, इस का विवरण नीचे दिया गया हैं । किस तरह से मूल शब्द में प्रत्यय जुड़कर उस के संरचना को बदलता हैं, वह शब्द जिस में प्रत्यय जुड़ता है, वह कभी

1. संज्ञा से संज्ञा	2. संज्ञा से विशेषण	3. संज्ञा से क्रिया
4. विशेषण से विशेषण	5. विशेषण से संज्ञा	6. विशेषण से क्रिया
7. क्रिया से संज्ञा	8. क्रिया से विशेषण	9. क्रिया से क्रिया

में वर्ग परिवर्तन करता हैं और भाषा में विशेष अर्थ स्थापित करता हैं, इसी प्रक्रिया के द्वारा भाषा में उत्पादकता की संभावना और भी बढ़ जाती हैं ।

प्रत्यय रूपिम : भाषा व्यवस्था में मात्रा तथा गुण की दृष्टि से उपसर्गो की अपेक्षा प्रत्ययों का महत्व अधिक हैं, प्रकार्य की दृष्टि से प्रत्ययों के दो वर्गों में रखा जा सकता हैं ।

1. व्युत्पादक प्रत्यय　　　2. रूपान्तरक प्रत्यय

1. **व्युत्पादक प्रत्यय** : शब्द स्तर पर कार्य करनेवाले इन प्रत्ययों को परिवर्तक प्रत्यय या शब्द निर्माणक प्रत्यय भी कहा जाता हैं । व्युत्पादक प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं ।

1. प्रतीक परिवर्तक　　　2. वर्ग परिवर्तक

प्रतीक परिवर्तक : प्रत्यय संज्ञा शब्दों के लिंग में परिवर्तन लाते हैं, और कुछ प्रत्यय विशेषण शब्दों के तुलनात्मक स्वरूप में स्तर परिवर्तन । इस आधार पर इन्हें

(अ) लिंग परिवर्तक (आ) स्तर परिवर्तक

प्रत्यय कह सकते हैं

वर्ग परिवर्तक : यह प्रत्यय एक वर्ग के शब्दों को दूसरे वर्ग में परिवर्तित करते हैं। इस दृष्टि से ये पांच प्रकार के हैं।

1. कर्तृवाचक संज्ञा निर्माणक प्रत्यय
2. भावचाक संज्ञा निर्माणक प्रत्यय
3. लघुतासूचक संज्ञा निर्माणक प्रत्यय
4. स्वजनतावाची संज्ञा निर्माणक प्रत्यय
5. गुणवाचक विशेषण निर्माणक प्रत्यय

जब ये प्रत्यय मूल रूप के साथ जुडने के आधार पर वर्ग परिवर्तक प्रत्ययों के तीन भेद हो सकते हैं

क) तद्धित प्रत्यय ख) कृत प्रत्यय ग) उभय प्रत्यय

क) तद्धित प्रत्यय : ये प्रत्यय जो क्रिया-धातु के अतिरिक्त अन्य किसी मूल शब्द के पश्चात् जुड़ कर क्रिया के अतिरिक्त किसी अन्य तद्धित शब्द भेद का निर्माण करते हैं।

ख) कृत् प्रत्यय : ये प्रत्यय जो किसी क्रिया-धातु में जुड़ कर क्रियापद के अतिरिक्त किसी अन्य यौगिक शब्द भेद का निर्माण करते हैं।

ग) उभय क्षेत्रीय प्रत्यय : ये प्रत्यय नाम रूपिमों व क्रिया धातुओं के साथ जुड़ कर क्रिया शब्दों की रचना करते हैं। इन प्रत्ययों में से कुछ प्रत्यय नाम वर्ग के रूपिमों को क्रिया रूपों में परिवर्तित करते हैं, और कुछ प्रत्यय अकर्मक से सकर्मक आदि से प्रेरणार्थक रूप बनाते हैं।

2. <u>रूपान्तरक प्रत्यय</u> : वाक्य स्तर पर कार्य करने वाले इन प्रत्ययों की व्याकरणिक प्रत्यय या परिचालक प्रत्यय या रूप साधक प्रत्यय भी कहा जाता हैं । यह प्रत्यय मूल प्रकृति या व्युत्पन्न प्रकृति के शब्दों को पदों में रूपान्तरित करते हैं ।

<u>तद्धित प्रत्यय भेद</u> : विभिन्न तद्धित प्रत्ययों को उन के प्रकार्य के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में रखा जा सकता हैं ।

- आ	- पंडित	- पंडिता
- ई	- बाल	- बाला
	- शिष्य	- शिष्या
	- अध्यक्ष	- अध्यक्षा
	- पात्र	- पात्रा
- आईन	- ठाकुर	- ठकुराइन
	- पांडे	- पंडाइन
	- बनिया	- बनियाइन
	- लाला	- लालाइन
- आनी	- चौधरी	- चौधरानी
	- पंडित	- पडितानी
	- जेठ	- जेठानी
- इका	- लेखक	- लेखिका
	- यायक	- यायिका
	- उपदेशक	- उपदेशिका

	- नायक	- नायिका
- इन	- तेली	- तेलिन
	- धोबी	- धोबिन
	- चमार	- चमारिन
- इया	- कुत्ता	- कुतिया
	- बंदर	- बंदरिया
	- बूढ़ा	- बूढ़िया
- ई	- गधा	- गधी
	- बेटा	- बेटी
	- काका	- काकी
	- लड़का	- लड़की
- नी	- ऊंट	- ऊंटनी
	- सिंह	- सिंहनी
	- सियार	- सियारनी
	- तपस्वी	- तपस्विनी

2. **स्तर परिवर्तक तद्धित प्रत्यय :** ये प्रत्यय जो गुणवाचक विशेषण के साथ जुडकर तुलनात्मक दृष्टि से उन के स्तर में परिवर्तन पैदा करते हैं । जैसं : तर, -तम

- उच	- उच्चतर	- उच्चतम

- अधिक	- अधिकतर	- अधिकतम
- गुरु	- गुरुतर	- गुरुतम
- सुन्दर	- सुन्दरतर	- सुन्दरतम
- लघु	- लघुतर	- लघुतम

3. **भाववाचक तद्धिक प्रत्यय** : ये संज्ञा या विशेषण शब्दों में जुड़कर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं,

- आ	- झोंक	- झोंका
- आई	- चिकना	- चिकनाई
- आन	- ऊँचा	- ऊँचान
- ई	- बुरा	- बुराई
- पन	- पागल	- पागलपन
- हट	- कडवा	- कडवाहट
- आस	- मिठ्ठा	- मिठास
- आयत	- बहुत	- बहुतायत
- इख	- काला	- कालिख
- औती	- बड़ा	- बड़ौती
- ड़ा	- दुख	- दुखड़ा
- त	- रंग	- रंगत
- नी	- चांद	- चांदनी
- क	- ठण्ड	- ठण्डक
- आना	- बडा	- बडाना
- ठी	- कन	- कनैठी
- गी	- ताज	- ताजगी

- अ	- गर्व	- गौरव
- इमा	- लाल	- लालिमा
- ता	- सज्जन	- सज्जनता
- त्व	- सती	- सतीत्व
- य	- मधुर	- माधुर्य

4. **लघुतासूचक तद्धित प्रत्यय** : ये प्रत्यय संज्ञा शब्दों में जुड़कर लघुता/छोटेपन का बोध कराते हैं ।

- आ	- पिल्ला	- पिलुआ
- इया	- खाट	- खटिया
- ई	- पहाड़	- पहाडी
- ड़ी	- पंख	- पंखड़ी
- ड़ा	- मुख	- मुखड़ा
- वा	- बच	- बचवा
- ओला	- सांप	- सपोला
- क	- ढोल	- ढोलक
- ची	- बगा	- बगीची
- टा	- रोग	- रोगटा
- ली	- खट	- खटुली

5. **कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय** : ये प्रत्यय संज्ञा शब्दों में जुड़कर करनेवाले/बनाने वालों का बोध कराते हैं । व्यक्ति के व्यापार के द्योतक हैं ।

- आर	- सोने	- सुनार

- इया	- मुखन	- मुखनिया
- ई	- गंध	- गंधी
- उआ	- मच्छी	- मछुआ
- एरा	- सांप	- सपेरा
- वान	- गाडी	- गाडीवान
- वाल	- कोत	- कोतवाल
- वाला	- दूध	- दूधवाला
- हारा	- पानी	- पानीहारा
- ड़ी	- भाग	- भगेड़ी
- गर	- जादू	- जादूगर
- ची	- मशाल	- मशालची
- दार	- जमीन	- जमीनदार
- चारा	- घास	- घासचारा
- कर	- हित	- हितकर
- कार	- स्वर्ण	- स्वर्णकार
- धर	- हल	- हलधर

6. **सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय** : ये प्रत्यय संज्ञा में जुड़ कर विभिनन प्रकार के संबंधों/संतान का बोध कराते हैं ।

- आयन	- कोशल्या	- कौशल्यायन
- इ	- दशरथ	- दशरथि
- ई	- भाग	- भागीरथी
- ईय	- भारत	- भारतीय
- एच	- कुंती	- कौन्तेच

- अ	- विष्णु	- वैष्णव
- आल	- ससुर	- ससुराल
- औती	- हाथ	- हथौटी
- ज	- जल	- जलज
- जा	- भतीजा	
- एरा	- मामा	- ममेरा
- दान	- पान	- पानदान
- खाना	- डाक	- डाकखाना
- हर	- खण्ड	- खंडहर
- आना	- नजर	- नजराना
- का	- मां	- मैका
- ची	- घड़ा	- घडौची

उपयुक्त प्रत्ययों में – जहां पर संतान का बोध होता हैं,

कुन्ती - कौन्तेय

दशरथ - दाशरथि

राघव - राधेय

पांडु - पांडव

उपयुक्त सन्तान द्योतक प्रत्तयों में केवल प्रत्यय प्रकार्य नहीं कर रहा हैं, परन्तु शब्द की ध्वनि संरचना में परिवर्तन ला रहा हैं, यहाँ प्रत्यय से ज्यादा ध्वनि व्युत्पादित हैं ।

7. <u>**गुणवाचक तद्धित प्रत्यय**</u> **:** ये प्रत्यय नाम शब्दों में जुड़कर गुण का बोध कराते हैं ।

- आ	- प्यास	- प्यासा
- आऊ	- पंडित	- पंडिताऊ
- इयल	- दढ़ि	- दढ़ियल
- ई	- खून	- खूनी
- ऊ	- पेट	- पेटू
- ईला	- रंग	- रंगिला
- वर	- नाम	- नामवर
- आहा	- उत्तर	- उतराहा
- ऐल	- रखरा	- रखरैल
- ऐया	- हार	- हारैया
- ऐत	- नाच	- नचैत
- एला	- सौत	- सौतेला
- ऐला	- विष	- विषैला
- ला	- आगे	- अगला
- वाल	- दिल्ली	- दिल्लीवाल
- वाला	- श्याम	- श्यामवाला
- हर	- भृत	- भुतहर
- हरा	- रूप	- रूपहरा
- हा	- भुत	- भुतहा
- दार	- माल	- मालदार
- आना	- दोस्त	- दोस्ताना
- गीम	- गम	- गमगीन
- नाक	- दर्द	- दर्दनाक
- बान	- मेहर	- मेहरबान

- बन्द	- मोर्चा	- मोर्चाबन्द
- मन्द	- दौलत	- दौलतमन्द
- वर	- ताखत	- ताखतवर
- वार	- भाषा	- भाषावार
- सार	- सुर	- सुरसार
- गार	- मदद	- मददगार
- बाज	- दगा	- दगाबाज
- आलू	- दया	- दयालु
- इक	- समाज	- सामाजिक
- इत	- तरंग	- तरंगित
- इष्ठ	- पाप	- पापिष्ठ
- इष्ट	- स्वाद	- स्वादिष्ट
- ईय	- भारत	- भारतीय
- ईन	- ग्राम	- ग्रामीण
- तन	- पुराना	- पुरातन
- मय	- शांति	- शांतिमय
- य	- कण्ठ	- कंठय्
- मान	- श्री	- श्रीमान
- वान्	- धन	- धनवान
- ल	- श्याम	- श्यामल
- वी	- तपस्या	- तपस्वी
- वन्त	- दया	- दयावन्त

8. <u>**क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय**</u> : ये प्रत्यय शब्दों में जुडकर क्रम का बोध कराते हैं और ये

संख्यावाचक विशेषणों के साथ जुडकर आते हैं ।

- ला	- पहला
- सरा	- दूसरा
- था	- चौथा
- ठा	- छठा
- तां	- पांचवां
- म	- पंचम
- तीय	- तृतीय
- थ	- चतुर्थ
- ठ	- षष्ठ
- गुना	- दुगना

9. <u>सादृश्यवाचक तद्धित प्रत्यय</u> : ये प्रत्यय संज्ञा/विशेषण/क्रिया में जुडकर सादृश्य का बोध कराते हैं ।

- सा	- आप	- आपसा
- वत्	- पुत्र	- पुत्रवत्

10. <u>अव्यय निर्माणक तद्धित प्रत्यय</u> : ये अव्यय शब्दों के अतिरिक्त शब्दों में जुडकर अव्ययों का निर्माण कराते हैं ।

- हां	- यहाँ
- ओं	- घंटों
- न	- अन्दाजन
- इन	- प्रकारेण
- चित्	- किंचित

- तः	- विशेषतः
- तया	- पूर्णतया
- था	- सर्वथा
- दा	- सर्वदा
- धा	- दुविधा
- शः	- क्रमशः
- पूर्वक	- विधिपूर्वक
- ब	- अब
- स	- ऐसा
- सा	- वैसा

कृत् प्रत्यय भेद : प्रकार्य के आधार पर कृत् प्रत्ययों के तीन भेद हो सकते हैं ।

1. संज्ञा निर्माण
2. विशेषण निर्माण
3. क्रिया विशेशण निर्माण

1. संज्ञा निर्माण कृत् प्रत्यय : इन प्रत्तयों के योग से विभिन्न संज्ञा शब्दों का निर्माण होता हैं । इन प्रत्ययों को इन के प्रकार्य के आधार पर चार वर्गों में रखा जा सकता हैं ।

क) भाववाचक संज्ञा निर्माण कृत् प्रत्यय

ख) कर्तृवाचक संज्ञा निर्माण कृत् प्रत्यय

ग) कारण/साधनवाचक संज्ञा निर्माण कृत् प्रत्यय

घ) कर्मवाचक संज्ञा निर्माण कृत् प्रत्यय

क) भाववाचक संज्ञा निर्माण कृत् प्रत्यय : ये प्रत्यय भाव क्रिया व्यापार का बोध करानेवाले शब्द का

निर्माण करते हैं ।

- अंत	- भिडंत	
- अन	- लग	- लगन
- आ	- छाप	- छापा
- आन	- उड़	- उड़ान
- आप	- मिल	- मिलाप
- आव	- बहना	- बहाव
- आवट	- रुक	- रुकावट
- आवा	- पछताव	- पछतावा
- आस	- खुल	- खुलासा
- इ	- कृष	- कृषि
- ई	- हंस	- हंसी
- एरा	- निबटारा	- निबटेरा
- औती	- चुनाव	- चुनौती
- त	- खप	- खपत
- ती	- बढ़	- बढ़ती
- न	- चल	- चलन
- ना	- मर	- मरना
- नी	- कर	- करनी
- वट	- मिल	- मिलावट
- हट	- चिल्ला	- चिल्लाहट

ख) <u>कृतवाचक संज्ञा निर्माण कृत् प्रत्यय</u> : ये प्रत्यय क्रिया व्यापार के करने वाले संज्ञा शब्दों का बोध कराते हैं ।

- अक	- पाठ	- पाठक
- अन	- साध	- साधन
- ई	- कम	- कमी
- तृ	- कर्ता	
- आ	- भूंजा	
- का	- उच्च	- उच्चका
- र	- झालर	

उपयुक्त प्रत्यय विशेषणवत् शब्द होते हैं,

ग) <u>कारण/साधन वाचक संज्ञा निर्माण कृत् प्रत्यय</u> : ये प्रत्यय क्रिया-व्यापार के कारण/साधनवत् प्रयुक्त होनेवाले संज्ञा शब्दों का निर्माण करते हैं ।

- आ	- छोट	- छोटा
- आनी	- मथ	- मथानी
- ई	- रेत	- रेती
- ऊ	- झाड	- डाडू
- औटी	- कस	- कसौटी
- औना	- खेल	- खिलौना
- न	- बेल	- बेलन
- ना	- ओढ़	- ओढ़ना
- नी	- घोट	- घोटनी
- पा	- खुर	- खुरपा
- री	- कट	- कटारी

घ) <u>कर्मवाचक संज्ञा निर्माण कृत् प्रत्यय</u> : ये प्रत्यय क्रिया-व्यापार के कर्मवत् प्रयुक्त होनेवाले संज्ञा शब्दों

का निर्माण करते हैं ।

- औना	- बिड	- बिछौना
- ना	- ओढ़	- ओढ़ना
- नी	- ओढ़	- ओढ़नी

2. <u>विशेषण निर्माण क्रत् प्रत्यय</u> : इन प्रत्ययों के योग से भिन्न विशेषण शब्दों का निर्माण होता हैं ।

1. गुणवाचक विशेषण निर्माणक
2. कर्तृवाचक विशेषण निर्माणक
3. क्रियार्थी विशेषण निर्माणक

1. **<u>गुणवाचक विशेषण निर्माणक कृत् प्रत्यय</u>** : ये प्रत्यय विभिन्न गुणवाचक विशेषणें का निर्माण करते हैं ।

- आऊ	- बिकना	- बिकाऊ
- अनीय	- निन्दा	- निन्दनीय
- वना	- डर	- डरावना
- इया	- घटना	- घटिया
- वां	- कट	- कटवां
- उआ	- पड	- पडुआ
- त	- श्रृत	
- इत	- कथन	- कथित
- य	- निन्दा	- निन्द्य
- ई	- छली	

2. **<u>कर्तृवाचक विशेषण निर्माणक कृत् प्रत्यय</u>** : इन प्रत्ययों के योग से बने शब्दों से किसी प्राणी के

कर्तृव्य का बोध होता हैं । शब्द व्यवहार प्रक्रिया में ये विशेषण शब्द कर्तृ वाची होने के कारण संज्ञावत् भी प्रयुक्त होते हैं ।

- आक	- तैरना	- तैराक
- आका	- लडना	- लडाका
- आडी	- खेल	- खिलाडी
- आलू	- लजा	- लजालू
- इयल	- झडना	- सडियल
- इया	- धुन	- धुनिया
- आऊ	- खाना	- खाऊ
- एरा	- लुटरा	- लुटेरा
- ऐत	- लडना	- लडैत
- ऐया	- बैठना	- बिठैया
- ओड़	- हंस	- हंसोड
ओड़ा	- भाग	- भगोड़ा
- ओरा	- चटोर	- चटोरा
- क	- मार	- मारक
- अक्कड	- घूमना	- घूमक्कड़
- ना/नी	- रोना	- रोनी
- वाला	- पढने	- पढनेवाला
- वेया	- गायक	- गवैया
- सार	- मिलन	- मिलनसार
- हार	- होन	- होनहार
- हारा	- रख	- राखनहारा

3. **क्रियार्थी विशेषण निर्माणक कृत् प्रत्यय** : इन प्रत्ययों के योग से बने शब्द क्रिया-व्यापार का बोध कराने के साथ विशेषण का काम भी करतें हैं । इन प्रत्ययों के योग से शब्द निर्माण की प्रक्रिया शब्द स्वर की न होकर पदबन्ध स्तर की होती हैं, पदबन्ध स्तरीय ये शब्द असमापिका क्रिया के सूचक होते हैं, प्रकार्य के आधार पर इन्हें दो वर्गों में रख सकते हैं ।

क) वर्तमान कालिक कृदन्त निर्माणक कृत प्रत्यय : इन प्रत्ययों के योग से बने शब्द वर्तमान कालिक असमापिका क्रिया के रूप में विशेषण का कार्य करते हैं,

-ता/-ती/-ते

दौड़ता लड़का

उड़ती चिडिया

भूंकते कुत्ते

ख) भूतकालिक कृदन्त निर्माणक कृत प्रत्यय : इन प्रत्तयों के योग से बने शब्द भूतकालिक असमापिका क्रिया के रूप में विशेषण का कार्य करते हैं ।

- आ/-ई/-ए

पढ़ा - लिखा आदमी

पढ़ी - लिखी औरत

पढ़े - लिखे लोग

क्रियार्थी क्रियाविशेषण निर्माणक कृत् प्रत्यय : इन प्रत्ययों के योग से बने शब्द क्रिया-व्यापार का बोध कराने के साथ क्रिया-विशेषण का कामं भी करते हैं । इन प्रत्ययों के योग से शब्द निर्माण की प्रक्रिया शब्द स्तर की न होकर पदबन्ध स्तर की होती हैं । पदबन्ध स्तरीय ये शब्द असमापिका क्रिया के सूचक होते हैं । प्रकार्य के आधार पर इन्हें चार वर्गों में रख सकते हैं ।

क) **पूर्वकालिक कृदन्त निर्माणक कृत् प्रत्यय :** क्रिया धातु+कर के योग से पूर्वकालिक कृदन्त का निर्माण होता हैं ।

- कर, - के

पानी में रह कर मगर से बैर

ख) **तात्कालिक कृदन्त निर्माणक कृत् प्रत्यय :** क्रिया धातु + ते शब्द रख कर तात्कालिक का निर्माण होता हैं ।

मैं यहाँ रहती हूँ

ग) **अपूर्णता सूचक कृदन्त निर्माणक कृत् प्रत्यय :** क्रिया धातु + ते के योग से अपूर्ण क्रिया सूचक कृदन्त का निर्माण होता हैं ।

- ते

मेरे रहते तुम्हे चिन्ता की आवश्यकता नहीं

वह मरते - मरते बची हैं ।

ख) **अकर्मक से सकर्मक धातु निर्माणक क्रिया :** क्रियाएँ प्रयोग के अनुसार अकर्मक तथा सकर्मक दोनों होती है । कुछ व्युत्पन्न अकर्मक से सकर्मक क्रियाओं के युग्म ।

जुतना – जोतता

लेटना – लिटाना

सूखना – सूखाना

मरना - मिटना

ग) **प्रेरणार्थक निर्माणक क्रिया :** मूल व सरल धातु में "-आ-ला" जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया का निर्माण होता हैं, और "-वा" (-ला/-लवा) जोड कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनती हैं ।

- बैठ	- बिठा	- बिठाना
- सो	- सुला	- सुलवा

- पी - पिला - पिलवा

- देख - दिखा - दिखवा

उभय क्षेत्रीय प्रत्यय भेद : प्रकार्य के आधार पर इन प्रत्ययों को तीन वर्गों में रखा जा सकता हैं ।

क) नाम धातु निर्माणक क्रिया

ख) अकर्मक - सकर्मक धातु निर्माणक क्रिया

ग) प्रेरणार्थक निर्माणक क्रिया

क) **नाम - धातु निर्माणक क्रिया** : कुछ विशिष्ट संज्ञा/सर्वनाम शब्दों से जो क्रिया धातु बना ली जाती हैं, उसे नाम धातु कहते हैं, इस परम्परा में कभी-कभी कुछ शब्दों के साथ ध्वनि परिवर्तन भी हो जाता हैं ।

संज्ञा शब्दों से –

लाज – लजा – लजाना

लहर – लहरा – लहराना

रिस – रिसा – रिसाना

विशेषण शब्दों से –

गर्म – गरमा – गरमाना

सुस्त – सुस्ता – सुस्ताना

4.5 **निष्कर्ष** : उत्पादकता की प्रक्रियाः हिन्दी के उत्पादक रूपिम में यह निष्कर्ष है कि रूपिम भाषा का वह रूप हैं, जहाँ से भाषा "रूप" के रूप में प्रस्कलित होती हैं, यह भाषाई रूप विभिन्न प्रकार के घटकों में प्रस्तुत होते हैं, और भाषा को सृजनात्मक व उत्पादक बनाते हैं । रूपिमों की उत्पादकता कुछ प्रक्रियाओं पर आधारित हैं, मुक्त रूपिम व बद्ध रूपिम । मुक्त रूपिम स्वतंत्र होते हैं और अर्थबोधक

भी, बद्ध रूपिम, अर्थहीन होते हैं, परन्तु जब ये मुक्त रूपिम से जुडते हैं तब अर्थवान व स्वीकृत होते हैं । यह रही रूपिमों के अर्थ की बात, जब रूपिम में उपसर्ग व प्रत्यय का योग होता हैं, तब इन रूपिमों की उत्पादकता भाषा के अंतर्गत फैल जाती हैं, और इन्हीं उपसर्ग व प्रत्यय के योग से, रूप, रूपिम नवनिर्मित रूप को जन्म देते हैं, नये रूप का जन्म होना ही उत्पादकता हैं, भाषा में उत्पादकता कुछ मानदण्डों पर निर्धारित होती हैं, जैसे, रूप कहाँ तक उत्पादक होंगे, किस क्षेत्र में इन की उत्पादकता ज्यादा होती हैं और जब ये उत्पादक होते है तो इन में कौनसा उपसर्ग व प्रत्यय उत्पादकता को और भी आगे बढता हैं, और यह उत्पादकता भाषा के अंतर्गत पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से किस सीमा तक उत्पादक बन सकती हैं आदि ।

रूपिम कुछ संबंध तत्वों पर आधारित होते हैं, ये संबंधतत्व रूपिमों व भाषा में एक क्रम बनाये रखते हैं, इन्हीं सम्बन्धतत्वों के आधार पर रूपिमों का निर्धारण होता हैं और उन की उत्पादकता को परखा जाता हैं ।

जैसे :

एक मुक्त रूपिम हैं "घर" जब इस "घर" रूप में बद्ध रूपिम का योग होगा तब यह घर शब्द – डाक घर, दूध घर, चिडिया घर आदि

नये-नये रूपों को नीर्मित करता है और ये नवनिर्मित शब्द भाषा के अंतर्गत अच्छी तरह घुल-मिल जाते हैं ।

शोध का कार्य यही है कि किस तरह से ये रूपिम, कभी प्रत्ययों व कभी उपसर्गों व कभी मध्यसर्गों की सहायता से उत्पादक हो पायेंगे, और ये किस तरह भाषाई रूप में प्रस्तुत होंगे ।

उदा :

"वाला" जो प्रत्यय रूपिम हैं, इस आधुनिक युग में बहुत उत्पादक होगा, पहले से यह उत्पादक

था ही परन्तु केवल हिन्दी भाषा के अंतर्गत । परन्तु आज इस की उत्पादकता अंग्रेजी भाषा में भी फैल गई हैं, जैसे –

Kwality - wall's/wala (क्वालिटीवाला)

Icecream - wall's/wala (आइसक्रीमवाला)

Catering wala/wall's (कैटरिंगवाला)

इस तरह से रूपिमों को भी उत्पादक बनाने का प्रयत्न किया जायेगा, ऐसे कुछ रूपिम भी भाषा के अंतर्गत हैं, और उत्पादक भी हैं । परन्तु हम इन्हें नहीं पहचान सकेंगे, इन रूपिमों का अध्ययन करकें, इस भाषा के अनुकूल ही रूपिमों को उत्पादक बनाने का प्रयत्न करेंगे । इस तरह का प्रयोग करना भाषा के लिए एक बडी चुनौती हैं और इस तरह के प्रयोग से रूपिमों की सम्भावनाएँ हैं । उत्पादकता की और भी अग्रसर होगी ।

पंचम अध्याय

संज्ञा संबंधी उत्पादक रूपिम प्रयोजनमूलक आयाम

पंचम् अध्याय

संज्ञा संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम

5.0 प्रस्तावना

हिन्दी में संस्कृत से स्वीकृत तथा अन्य स्त्रोतों से स्वीकार किए गए रूपिमों के आधार पर प्रयोजनमूलक संज्ञा या अन्य शब्दों का निर्माण आधुनिक युग में अनवरत रूप से किया जा रहा है । प्रोक्तिमूलक विषय इन रूपिमों की क्षमता के निर्धारक एवं निर्णायक बनते हैं । विभिन्न प्रोक्तियों में खासकर विज्ञान तथा प्रशासनिक अनुशासनों से संबंधित शब्दावली में अनेक मुक्त एवं बद्ध रूपिमों की उत्पादकता उभर कर आ रही है । इसी दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में उत्पादक रूपिमों की पहचान एवं उनकी सृजनात्मक क्षमता पर अनशीलन हेतु तीन प्रमुख अनुशासनों को स्वीकार किया गया है । ये है :

1. वनस्पति विज्ञान
2. प्रशासनिक शब्दावली
3. बैंकिंग शब्दावली

इनकी संज्ञा वर्ग की तकनीकी शब्दावली एवं विषय प्रतिपादक की भाषा के निरिक्षण से उनमें प्रयुक्त पारिभाषिक संज्ञा उत्पादक रूपिमों का एक सजीव रूप प्रकट होता है । इस रूप का अनुशीलन और विश्लेषन प्रस्तुत अध्याय का लक्ष्य है । प्रस्तुत अध्याय में पारिभाषिक एवं सांकेतिक शब्दावली का संज्ञा के रूप में ही विश्लेशण किया जाएगा । यद्यपि यहाँ पर शब्द समूह को दृष्टि में रखकर उनके अन्तर्गत विशेषण व क्रिया शब्दों को भी एक जगह रख दिया गया है, यह भी सांकेतिक एवं पारिभाषिक शब्द की अवधारणा को सृजन के संदर्भ में परखने के लिए ही किया गया है । विशेषण

1. "वनस्पति विज्ञान शब्द कोश" डॉ. एस.के.तुली
2. "बृहत् प्रशासन शब्दावली" हिन्दी अंग्रेजी (वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) भारत सरकार
3. "बैंकों में हिन्दी का प्रयोग" सुरेश कांत

एवं क्रिया रूपों का विश्लेशण एवं अध्ययन षष्ठ अध्याय एवं सप्तम् अध्याय में, क्रमशः किया ज
ाएगा ।

5.1 आधुनिक तकनीकी पारिभाषिक संज्ञा शब्द : निर्माण एवं संरचना

प्रस्तुत विषय वनस्पति विज्ञान के संदर्भ में जो शब्द लिए गए हैं वह विषय के अनुकूल पारिभाषिक और बद्ध है । ये शब्द कोई विशेष शब्द नहीं है परन्तु हिन्दी एवं संस्कृत भाषा के मूल में जो शब्दों एवं रूपिम हैं उन्हीं रूपिमों से बनाए गए है, परन्तु जब यह विशेष रूप से अपना क्षेत्र बदलकर अन्य विशेष प्रयोक्ति के अंतर्गत आ जाते हैं' तब ये प्रयोक्ति विशेष के शब्द बन जाते हैं । सामान्य हिन्दी में इनका अर्थ कुछ रहता है । परन्तु जब वे ही शब्द तकनीकी एवं पारिभाषिक क्षेत्र में आ जाते हैं तब इन शब्दों का अर्थ प्रकार्य के आधार पर बदल जाता है और आवश्यकता अनुसार ये शब्द अपने में कभी उपसर्ग, मध्यसर्ग और प्रत्यय से युक्त होकर विषय के अनुकूल अपने आप को बना कर नए रूप में प्रस्तुत होते हैं । और विषयपरक संकल्पनाओं का वहन करते हैं । इन नए रूपों में प्रस्तुत होनेवाले रूपिमिक इकाईयों में उत्पादकता निहित होती है । सामान्य भाषा में मिलनेवाले जो शब्द सामान्य अर्थ बोधक है वे ही शब्द तकनीकी और पारिभाषिक क्षेत्रों की संकल्पना के लिए चुने जाते हैं । जो शब्द एक संकल्पना से लिया जाता है वह मात्र एक शब्द नहीं रहता परंतु एक तकनीकी शब्द बन जाता है । उससे अपेक्षा की जाती है कि वह सारी शब्दावली को उस एक शब्द के आधार पर उसी में समेट ले । प्रयुक्ति या विज्ञान का क्षेत्र अनेक संकल्पनाओं का क्षेत्र होता है । हर संकल्पना मात्र एक संकेतिक व तकनीकी शब्द से जुडी नहीं रहती, उसमें अनेक पारिभाषिक व तकनीकी शब्दों की आवश्यकता पडती है । इतना ही नहीं संकल्पना के साथ जुडा हुआ हर तकनीकी शब्द अकेला नहीं होता । उसका एक परिवार बनता जाता हैं । इस स्थिति में पारिभाषिक संकल्पना से जुड़े शब्द का एक शब्द परिवार निर्माण आवश्यक होता हैं । प्रयुक्ति या विज्ञान क्षेत्र का अवतरण जब एक स्त्रोत से दूसरी भाषा में होता हैं तो स्त्रोत भाषा स्थिति और लक्ष्य भाषा स्थिति से जुडकर चलना होगा जो एक प्रोक्ति का अंग बन जाता है । अब यह प्रोक्ति उस विषय के अनुकूल प्रोक्ति होती है । जिसमें सामान्य हिन्दी के शब्द ही उपसर्ग मध्यसर्ग और प्रत्यय की सहायता से उस प्रोक्ति का अंग बन जाते हैं और वे ही प्रोक्ति के शब्द तकनीकी और पारिभाषिक कहलाते हैं ।

5.2 वनस्पति विज्ञान : हिन्दी के उत्पादक रूपिम

वनस्पति विज्ञान जीव विज्ञान की एक शाखा है, मानव जीवन के साथ उसका संबंध हैं। मानव ने अपने निरीक्षण से इस शाखा को एक महत्वपूर्ण विज्ञान के रूप में अवतरित किया हैं। इस शाखा से संबंधित जो अनुसंधान हैं, वे नित विस्तृत होनेवाले हैं। इस क्षेत्र में जो वैज्ञानिक अनुसंधान है, वह विश्व व्यापी है, अनेक भाषा क्षेत्रों से यह कार्य सम्पन्न हो रहा हैं, इस विज्ञान को अंग्रेजी के माध्यम से अधिक विस्तार मिल रहा हैं। इस संदर्भ में यह भी कहा जा सकता है कि भारतीय उपखण्ड में आधुनिक विज्ञान व शास्त्र अंग्रेजी के माध्यम से ही प्राप्त किए जा रहे हैं, इतना ही नहीं इन शास्त्रों से प्राप्त ज्ञान व विज्ञान को सामान्य मानव तक पहुँचाने के लिए विभिन्न भाषाओं का सहारा लेना पड रहा हैं। तदर्थ हिन्दी एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में स्वीकृत हैं, इसीलिए यहाँ वनस्पति विज्ञान की तकनीकी व सांकेतिक शब्दावली को अध्ययनार्थ स्वीकार किया गया है। वनस्पति विज्ञान से संबंधित निम्न लिखित पारिभाषिक शब्द एवं उसी तरह की संकल्पना को व्यक्त करने के लिए हिन्दी में स्वीकृत शब्दावली दोनों के शब्दों के निर्माण में मान्य रूपों से स्वीकृत एवं उत्पादक रूपिमों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके साथ-साथ संपूर्ण शब्द समूह में सृजनता गढने की दृष्टि से साम्य को परखने के लिए कुछ रूपिमों के आधार पर नव पारिभाषिक शब्द निर्माण में उत्पादक रूपिम विश्लेषण उपयुक्त उदाहरणों से किया जा सकता है।

Abenture - अपसंवर्धन
Abhymenial - अपहाइमीनियमी
Abies - बलूत
Abietine - बलूती
Abiotic - जीवेतर
Abjoint - अपयोजन
Abjunction - अपयोजन
Ablactation - नति
Ablast - अकोरक
Abnodation - अपगांठन
Abortive - रुद्धवृद्धि
Abrus - ऐब्रस

Abscess	- विद्रधि
Abscised	- उत्पादित
Abscess layer	- विलग -परत
Abscission layer	- विलग - परत
Abscission	- विलगन
Aborption	- अवशोषण

उपर्युक्त उदाहरण वनस्पति विज्ञान के शब्दकोश से लिए गए है । यहाँ पर प्रत्येक अंग्रेजी शब्द के पहले "Ab" उपसर्ग जोडा गया है । इनमें से कुछ शब्द संज्ञा, विशेषण और क्रिया है । ये पूरे के पूरे शब्द तकनीकी और पारिभाषिक हैं । हिन्दी में "Ab" के स्थान पर "अप" उपसर्ग प्रयोग किया गया है ।

शब्द के निर्माण के संदर्भ में यह देख गया है कि कुछ शब्दों में "अप" रूपिम नहीं जोडा गया । जैसे :

Abies - बलूत

Abietine - बलूती

तबकि अंग्रेजी में "Ab" का प्रयोग हुआ है और हिन्दी में नहीं । अगर हम इन दोनों शब्दों में "अप" प्रयोग करके शब्द को गढे तो ये शब्द

अपबलूत

अपबलूती

बन सकते हैं । इस प्रकार करने से पहली बात जो उभरकर आती है वह यह है कि "Ab" और "अप" का क्रम बना रहेगा । यहाँ पर "अप" उपसर्ग और ऊत, ऊती, प्रत्यय 'बल' शब्द में प्रयोग करके उसे नव-निर्मित करके उत्पादक बना रहे हैं । बलूत यहाँ पर संज्ञा रूप है और बलूती विशेषण रूप है ।

उपयुक्त उदाहरण का दूसरा कारण यह हो सकता है कि पाठक जब भी "अप" एवं "Ab" उपसर्ग रूपिम को देखेंगे तब उनका अध्ययन भी आसान हो पाएगा । क्योंकि रूपिमों का क्रम बना रहेगा और उसे प्रयोग में लाने के लिए बडी सुविधा होगी ।

तीसरा कारण यह होगा कि जब "अप" एवं "Ab" सभी शब्दों में लगेगा भाषा विशेष के संदर्भ में तब इनकी उपयोगिता बढेगी और इनकी उत्पादक क्षमता भी अपने आप बढ जाएगी और ये वनस्पति विज्ञान शब्दावली के अंतर्गत उत्पादक एवं प्रोक्ति विशिष्ट बन जाएंगें जहाँ-जहाँ भी वनस्पति विज्ञान में "Ab" उपसर्ग का प्रयोग होगा वहाँ पर "अप" उपसर्ग प्रस्तुत शब्द में जुड जाएगा और शब्द को उस क्षेत्र के अनुकूल अर्थवान बनाएगा । इतना ही नहीं इस संकल्पना से संबंधित आगे, गढ़ी जानेवाली शब्दावली या शब्द परिवार के लिए एकात्मकता की दिशा भी मिलेगी ।

परन्तु उपर्युक्त शब्दों के अंतर्गत कुछ शब्द ऐसे भी है जहां पर अंग्रेजी में भिन्नता है परन्तु हिन्दी में उनका शब्द रूप विभिन्न शब्दों के लिए एक ही है । जैसे :

Abscised - विलगित

Absciss layer - विलगत परत

Abscission layer - विलगत परत

Abscission - विलगन

उपर्युक्त शब्दों को ध्यान से देखने पर यह दृष्टिगत होता है कि अंग्रेजी में "Scis" और हिन्दी में "लग" मूल शब्द है । उपर्युक्त शब्दों में "Absciss" और "Abscission" दोनों के लिए "विलग" शब्द का प्रयोग किया गया परन्तु जब हम "Abscission" को अलग से देखेंगे तो इसके लिए "विलगन" का प्रयोग किया गया । एक स्थान पर "विलग" और एक स्थान पर "विलगन" का प्रयोग होने से पाठक को शब्द का चयन करने में कठिनाई होगी । इसी कठिनाई से बचने के लिए मूल शब्द "लग" में विषय के अनुसार उपसर्ग एवं प्रत्यय रूपिमों का प्रयोग करेंगे तो इस कठिनाई से बच सकेंगे । "विलग" संज्ञा रूप है अर्थात्

विलगित – Abscised – ed – इत – वि – Ab

विलग – Absciss – s – – वि – Ab

विलगन – Abscission – ion – न – वि – Ab

विलगित मे "इत" प्रत्यय विलग में शून्य प्रत्यय और विलंगन में "न" रूपिम का प्रयोग हुआ है और सभी में "अप" उपसर्ग जोडने से

अप विलगित – Abscised

अप विलगन – Abscission

अप विलग – Absciss

शब्द रूप बनते हैं । इस प्रकार करने से क्रम भी बना रहेगा और भूल शब्द में सही रूप से उपसर्ग एवं प्रत्यय का योग होगा ।

उपर्युक्त शब्दों में यह भी देख जा सकता है कि जहाँ-जहाँ भी अंग्रेजी में "ion" रूपिम है वहाँ हिन्दी में "न" प्रत्यय का प्रयोग हुआ है । इस प्रकार की व्यवस्था से भाषा को समझने एवं उसके नव निर्मित रूपों को समझने में बड़ी आसानी होगी और वह बड़ी आसानी से दोनों तरह के शब्द रूपों को पहचान लेगा ।

अत: "अप" उपसर्ग हिन्दी भाषा के अंतर्गत बद्ध रूपिम है और यह संस्कृत उपसर्ग हैं । सामान्य हिन्दी में इसका अर्थ "बुरा" के संदर्भ में है । परन्तु जब यह वनस्पति विज्ञान के संदर्भ में प्रयुक्त होता है और शब्द में उपसर्ग का रूप धारण कर रूपिम के रूप में जुडता है तो इसका अर्थ परिवर्तित हो जाता है । कभी-कभी सामान्य हिन्दी में जो शब्द का अर्थ रहता है वही अर्थ प्रोक्ति विशेष तकनीकी एवं पारिभाषिक रूप में प्रयुक्त होती है और कभी परिवर्तित होती हैं । शब्दों का इस तरह परिवर्तित होना ही उत्पादकता कहलाता है । इसी वनस्पति विज्ञान के अंतर्गत एक और उदाहरण लिजिए ।

Foliaceous - पर्णिल

Foliage - पर्ण - समूह

Foliation - पत्रण

Folicolour	- पर्णवासी
Foliferous	- पर्णधारी
Folioid	- पर्णाभ
Foliola	- पर्णक
Foliose	- पर्णिल
Follicle	- फांलिकल
Folliform	- पर्णरूप
Folliparous	- पर्णद

उपर्युक्त शब्दों में "Foli" अंग्रेजी शब्द का आदि अंश है जो मुक्त है और "Foli" के स्थान पर "पर्ण" रूप को हिन्दी के उत्पादक रूपिम एवं शब्द का आदि रूप एवं उपसर्ग बनाया गया है । "पर्ण" उपसर्ग संस्कृतमूलक है और यह हिन्दी भाषा के अंतर्गत मुक्त रूपिम है । सामान्य हिन्दी में "पर्ण" का अर्थ द्यूत एवं जुआ है । परन्तु जब यह "पर्ण" वनस्पति भाषा विशेष बन जाता है । इसका अर्थ परिवर्तित हो जाता है । अगर वनस्पति विज्ञान को भाषाकृत प्रोक्ति मानेगें तब वे उस विशेष वनस्पति विज्ञान के अंतर्गत प्रोक्ति विशेष हो जाएगा । जैसे जैसे प्रोक्ति बदलती है भाषा एवं क्षेत्र बदलता है । ठीक उसी तरह शब्द का अर्थ भी परिवर्तित होता है ।

उपर्युक्त उदाहृत शब्दों में सभी जगह "पर्ण" मूल रूप है और अंग्रेजी में "Foli" मूल है । परन्तु यहाँ पर एक स्थान पर "Follicle" शब्द का लिप्यंतरण प्रस्तुत किया गया है । "Follicle" में भी "Foli" मूल में है । यहाँ पर शब्द के लिप्यंतरण के स्थान पर "पर्ण" मूल शब्द को लेकर उसे पर्णाकृत बना सकते हैं । फॉलिकल को हिन्दी में पणाकृत कह सकते है । फॉलिकल जो शब्द लिप्यंतरण है, इस तरह का परिवर्तन संपूर्ण वनस्पति विज्ञान में जहाँ-जहाँ पर "Foli" एवं "पर्ण" आएगा उसे भाषा एवं विषय के अनुकूल उसमें उपसर्ग एवं प्रत्यय जोड कर विस्तृत एवं संकुचित बना सकते हैं । तात्पर्य यह है कि जो शब्द लिप्यंतरित हैं उनके स्थान पर नये गढे शब्द प्रयोग में लाए जाऐगें । उन्हें अन्य शब्दों के समानांतर बना सकते हैं । जैसे Follicle **पर्णाकृत** बनाया है ।

उसी तरह से अगर हम दूसरे निम्न लिखित उदाहरण को देखेंगे ।

Perianth	- परिदल पुंज
perianthomania	- परिदल - पुंजाधिकय
Pericambium	- परिएधा
Pericarp	- फलभित्ति
Pericarpic	- परिफल क्षेत्र
Pericentral	- परिकेन्द्र
Perichaetium	- परिरंभ
Pericyst	- परिपुटी
Periderm	- परित्वक
Peridermium	- परिकला
Peridium	- कवकफलभित्ति
Perigone	- परिदलपुंज
Perigonial Bract	- पुसंह पन्न

जिसमें "Peri" के स्थान "परी" रूपिम उपसर्ग का उपययोग किया गया है । "परी" सामान्य हिन्दी भाषा के अन्तर्गत बद्ध रूपिम है और यह केवल उपसर्ग का काम करता है । यह संस्कृतमूलक उपसर्ग हैं ।

उपर्युक्त शब्दों में कई स्थानों पर "परि" रूपिम के स्थान पर अन्य शब्दों का प्रयोग किया गया है ।

Pericarp	- फलभित्ति
Peridium	- कवकफलभित्ति
Perigonal Bract	- पुसंह पन्न
Perinium	- बीजाणु परिभित्ति

Peripetalous	- दल परिगत
Periscope	- बीजाणुचोल
Perisistent	- आपाती
Perisicicolor	- आड्वर्णी

उपर्युक्त शब्दों में कई स्थानों पर "परि" रूपिम का प्रयोग नहीं किया गया । परन्तु यहाँ पर इसका उपयोग करकर नव निर्मित शब्द गढे जा सकते हैं । जैसे - उपलब्ध सामग्री में "Pericarp" के लिए "परिफल भित्ती" शब्द है । परन्तु वही "Pericarpic" के लिए "फलभित्ती" शब्द दिया है । तबकि "Pericarp" "Pericarpic" में कुछ ज्यादा अन्तर नहीं है । यहाँ पर अगर "फल भित्ती" के आगे "Peri" का प्रयोग करेंगे तब वह "परिफल भित्ती" बन सकता है । जहाँ-जहाँ भी "Peri" का उपयोग होगा वहा पर इसी वनस्पति भाषा विशेष में "Peri" का प्रयोग होगा वहाँ पर "परि" का प्रयोग करने से "परि" उत्पादक की कोटि में आ सकता है ।

उसी प्रकार "Periscope" को "बीजाणु चोल" नाम दिया गया अर्थात् यहा पर "Scope" का अर्थ "बीजाणु" है और "Peri" का अर्थ "चोल" । यहाँ "चोल" के स्थान पर "परि" का प्रयोग कर के "परि-बीजाणु - Periscope" बना सकते हैं ।

दूसरे संदर्भ में "Perigonal bract" के संदर्भ में "पूसंह पत्र" अर्थ दिया गया । यहाँ पत्र का अर्थ "Bract" के संदर्भ में है और "Perigonal" का अर्थ "पूसंह" के संदर्भ में है । यहाँ पर भी "परिसूह" शब्द गढा जा सकता हैं । इससे शब्द का नव निर्माण होगा और भाषा कृत के अन्तर्गत समानार्थक समरूपी उत्पादक रूपिम वनस्पति भाषा के क्षेत्र में उत्पादक होंगे ।

"Perisicicolor" और "Perisistent" के लिए "आण्डवर्णी" और "आपाती" अर्थ लिया गया । अर्थ के दृष्टिकोण से ये लिप्यांतरण सही है । परन्तु जब "परि" के क्रम में इसे रखेंगे तो इसका क्रम बदल जाएगा । किन्तु अगर इस शब्द के आगे "परि" का प्रयोग करके इसे "परि

आण्डवर्णी" और "परि आपाती" बना कर परि प्रक्रिया में चला सकते हैं । इस तरह के प्रयोग करने से क्रम के अध्ययन में सुविधा होगी और क्रम बना रहेगा और उत्पादकता के क्षेत्र में एक नया मोड होगा ।

उपर्युक्त जो शब्द है वे शब्द पारिभाषिक संज्ञाएं, पारिभाषिक विशेषण और परिभाषिक क्रियाओं के रूप है । जो पारिभाषिक संज्ञाएँ वाले शब्द हैं उन शब्दों को हम पारिभाषिक विशेषण और क्रिया रूपों में परिवर्तित कर सकते हैं । यह परवर्तिन शब्द की प्रकृति को ध्यान में रख कर किया जाता हैं । जो भी शब्द तकनीकी एवं पारिभाषित संज्ञा की विशेषता बताता है वह विशेषण द्योतक होता है । अर्थात् जहाँ पर भी त, ता, ती, आदि प्रत्यय जुडते हैं, मुख्यतर ऐसे शब्द विशेषण द्योतक होते हैं ।

पारिभाषिक संज्ञाएँ शब्दनिष्ठ होती हैं और ये संपूर्ण भाषा क्षेत्र में फैली रहती हैं । ऐसा नहीं कि केवल संज्ञा से ही क्रिया और विशेषण रूप बनते हैं, परन्तु भाषा इतनी लचीली है कि उस के अंतर्गत विशेषण और क्रिया रूपों से भी संज्ञा रूप बनते हैं ।

तात्पर्य यह है कि चाहे वह तकनीकी, पारभिाषिक, वैज्ञानिक या फिर सामान्य भाषा के शब्द हो सभी शब्द व्याकरण पद्धतियों को अपनाते हैं । उसी आधार पर भाषा में नये-नये शब्द उत्पादित होते हैं । हिन्दी की भी यही प्राकृतिक स्थिति हैं । वनस्पति विज्ञान के पारिभाषिक शब्दावलियों को देखते हुए उनमें जुडे उपसर्ग रूपिमों को आगे बढाते हुए, उसी तरह के और एक उदाहरण को देखिए ।

Semiamplexicaul	- अल्प स्वभालिंगी
Semi - apospory	- अर्ध - अपबीजाणुता
Semia - quatic	- अंश - जलीय
Semi - arboreal	- अंश - शाखीय
Semi - Arid	- अर्ध - शुष्क

Semi - Calyciform	- अर्ध - चषकरूप
Semi - cell	- काशिकार्ध
Semi - decandrus	- पंच - पु - केसरी
Semi - fenestrate	- अर्ध गवाक्षित
Semihastatus	- अर्धभालाकार
Seminiferous	- बीजधर
Semipermeable	- अर्धपरागम्य - झिली
Semivagrant	- अर्धजंगम

उपर्युक्त शब्द परिवार पर एक दृष्टि डालने से यह साफ नजर आता है कि अंग्रेजी शब्दों में "Semi" उपसर्ग सभी शब्दों में जुडे हैं। उसी तरह हिन्दी में "Semi" के स्थान पर "अर्ध" रूपिम का प्रयोग किया गया। "Semi" अंग्रेजी का बद्ध रूपिम है। अर्ध मुक्त रूपिम है। सामान्य भाषा में इसका अर्थ है यह "अर्ध" संस्कृत तत्सम है।

उपर्युक्त शब्दों में "Semi/अर्ध" का अर्थ समान है। यहाँ पर कुछ शब्दों में "अर्ध" के स्थान पर "अंश" लिया गया है। ये "अर्ध" और "अंश" एक दूसरे के पर्याय है। अधिकतर इन शब्दों में संज्ञाएँ रूप अधिक दिखाई देती है।

इन शब्दों में एक शब्द है "Semiaquatic" इसका अर्थ "अंशजलिय" दिया गया है। प्रस्तुत शब्द में अंश का अर्थ अर्ध के संदर्भ में है और "Quatic" का अर्थ पानी से है। अगर यहाँ पर अंश जलिय के स्थान पर अर्ध जलिय का प्रयोग करेंगें तो यह प्रयोग गलत नहीं होगा और यह वनस्पति विज्ञान में चल जाएगा। शब्द का इस तरह से चलना ही उत्पादकता कहलाता है। यहा ध्यान देने की बात है कि उत्पादक रूपिम की अवधारणा को स्पष्ट कर देना आवश्यक होगा। अनवरत प्रयुक्त करने से अवधारणाएँ बनती भी जाती है।

उन्हीं शब्दों में से अगर दूसरा शब्द "Semi cell" को देखेंगे इसका अर्थ हिन्दी में "कोशिकार्ध" है । कोशिक का अर्थ "Cell" के संदर्भ में है और यहाँ पर अर्ध का प्रत्यय के रूप में प्रयोग किया गया है । अगर हम इस अर्ध को प्रत्यय के स्थान से निकल कर उपसर्ग के स्थान पर ले आएगें, अर्थ वही रहेगा, मूल वही रहेगा केवल उच्चारण का आधार रह जाएगा और एक नव शब्द रूप निर्मित होगा । (अर्ध कोशिक अर्थात Semi Cell) भाषा के अन्तर्गत इस तरह का परिवर्तन करने से भाषा-विदों को एक तरह से सुविधा ही होगी परन्तु उनका नष्ट नहीं हो सकता । इस तरह करने से जो बार-बार एक विचार उभरकर आता है कि सभी जानते हैं कि पारिभाषिक शब्द स्मरण के लिए कठिन है और अगर हम शब्दों को इसी तरह से परिवर्तित कर एक क्रम में रखेंगे तो पारिभाषिक शब्द अच्छी तरह से स्मरण रखे जा सकते हैं ।

इसी के संदर्भ में और एक दूसरे शब्द "Seminiferous" शब्द के लिए "बीज घर" परिभाषिक शब्द दिया गया है । इसमें अंग्रेजी में तो "Semi" का प्रयोग है । परन्तु हिन्दी में "अर्ध" का नहीं । अगर इसे बीजघर से "अर्ध बीजघर" बना दें तो कोई गलत नहीं होगा । परन्तु यह प्रयोग की दृष्टि से और भी उत्पादक होगा । आज के इस आधुनिक युग में जहाँ प्रत्येक वस्तु को संकुचित किया जा रहा है और उसे छोटे-छोटे मानदण्डों पर रखा जा रहा है, वहाँ पर व्यक्ति भी पारिभाषिक भाषा से यही अपेक्षा रखता है कि वह सरल और समझने योग्य हो । अगर थोडा बहुत पारिभाषिक और तकनीकी क्षेत्र में प्रत्यय और उपसर्ग की सहायता से शब्दों को अन्तरण कर लेंगे तो कोई फर्क नहीं होगा यदि इससे भाषा कुछ कठिन लगे । ऐसा करने से पारिभाषिक भाषा में लयात्मकता उत्पन्न होगी और ये जो नए शब्द निर्मित होते हैं, वे शब्द उत्पादक बन सकते हैं । जैसा कि संज्ञा से विशेषण, विशेषण से क्रिया और प्रत्यय से उपसर्ग, उपसर्ग से प्रत्यय । इस तरह के परिवर्तन से ही भाषा एवं शब्द उत्पादक होते हैं ।

अब तक चार उदाहरणों का विश्लेषण किया है । जहाँ पर केवल शब्दों में उपसर्ग जुडे हुए थे । मूल वही था और उपसर्गो का हेर-फेर किया जा रहा था । आगे के उदाहरणों में इसी वनस्पति भाषा के क्षेत्र में प्रत्ययों का अध्ययन करेंगें कि किस तरह से प्रत्यय अपनी भूमिका एक पारिभाषिक

क्षेत्र में निभाते हैं ।

उत्पादक प्रत्यय		मूल	प्रत्यय
Annular	- वलयाकार	- वलय	- आकार
Annulus	- वलय	- वलय	—
Annulose	- वलयित	- वलय	- ईत
Annulet	- वलयिका	- वलय	- ईका

उपर्युक्त शब्दों में प्रत्यय योजन हुआ है । अर्थात् प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है । उपर्युक्त उदाहरणों में मूल शब्द "Annu" और हिन्दी में "वलय" मूल में है । इस "वलय" मूल शब्द में कमी-आकार प्रत्यय जोडते हैं कभी ईत् प्रत्यय जोडते हैं और कभी इका प्रत्यय जोडते हैं । इससे शब्द -

1. वलयाकार 2. वलयित
3. वलइका 4. वलय

शब्दों का निर्माण होता है । वलय संज्ञामूलक पारिभाषिक है । इससे विशेषण और क्रिया शब्द भी निर्मित हो सकते हैं । इस तरह से एक पारिभाषिक शब्द जो वनस्पति विज्ञान के संदर्भ में है उसमें सामान्य हिन्दी के प्रत्यय जुड रहे हैं और शब्द को भाषा विशेष के अन्तर्गत उसे संकल्पित कर उत्पादक बनाया जा सकता है ।

वलय एक संस्कृत शब्द है और अंग्रेजी में "Annular" का अर्थ वार्षिक के संदर्भ में है । परन्तु जब यह वनस्पति विज्ञान के भाषा विशेष पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं तो इनका अर्थ परिवर्तित हो जाता है । केवल यही नहीं इन शब्दों में हिन्दी के किसी भी तरह के प्रत्यय और उपसर्ग जोड कर एक नए रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं । विभिन्न प्रकार के प्रत्यय और उपसर्ग जोडने से शब्द का स्तर एवं वर्ग भी बदल जाएगा । तात्पर्य यही कि मूल वही रहेगा, उसका रूप अैर प्रकार्य अलग हो जाएगा । इस तरह का होना भाषा में सृजनात्मकता को उत्पन्न करना है ।

इसी कोटि का एक और उदाहरण लीजिए जहाँ पर विभिन्न प्रकार के प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है । मूल तो वही है । प्रत्यय के जुडने से उसका प्रकार्य एवं रूप बदल गया है ।

Base – आधार

Basal – आधारिका

Basalia – आधारिका

Basalis – चिंबुकाधार

उपर्युक्त उदाहरणों में "Base/आधार" मूल शब्द है । ये दोनों शब्द रूप मुक्त रूपिम है और आधार हिन्दी का शब्द है । दोनों भाषाओं में दोनों शब्दों का अर्थ एक ही है । अर्थात् "Base" का आधार और आधार का "Base" ।

इस आधार शब्द में कभी इत् प्रत्यय जुड रहा है कभी इका प्रत्यय जुड रहा है और कभी ईता प्रत्यय जुड रहा है । जहाँ अंग्रेजी में "al, lia, lis" प्रत्यय जुड रहे हैं । उपर्युक्त उदाहरण में "Basal" और "Basalia" दोनों शब्द रूपों के लिए "आधारिका" एक ही शब्द दिया गया है और दोनों में "इका" प्रत्यय जोडा है । तबकि दोनों शब्दों के अर्थ में अन्तर है । इसमें अगर विभिन्न प्रत्यय को जोड पाए तो अर्थ की दृष्टि से और प्रयोग की दृष्टि से बहुत सुविधाजनक होगा । जैसा -

1. Base – आधार   2. Basal – आधारित

3. Basalia – आधारिका   4. Basalis – आधारचिंबू

इस प्रकार करने से इन सब का आर्थिक भेद स्पष्ट हो जाएगा । भाषा और शब्दों में लयात्मकता बढेगी । जरूरी नहीं कि केवल इत् ईका और त् प्रत्यय शब्द के अन्त में जोडे । अन्य प्रत्ययों को भी इन संदर्भ के अनुसार शब्द में जोड सकते हैं । अतः इत्, ईका, ईत, ईया आदि प्रत्यय हिन्दी के दोनों तदधित् एवं कृदन्त शब्दों में जुडते हैं और ये सभी के सभी प्रत्यय बद्ध" रूपिम है । इसका मूल

स्त्रोत संस्कृत भाषा है परन्तु हिन्दी भाषा में ये इतना घुल-मिल गए हैं कि उनका प्रयोग अधिक हिन्दी भाषा में प्रचलित है । इसी श्रृंखला में प्रत्यय योजन के और एक उदाहरण को ले सकते है ।

Fruit – फल

Fructiparous – फलधारी

Fructification – फलन

Fructiferous – फलद

उपर्युक्त शब्दों में "Fruit/फल" मूल शब्द है । दोनों का अर्थ भी समान है और दोनों के दोनों भी संज्ञा रूपी पारिभाषिक मूल रूप है । उपर्युक्त शब्दों में - आरी, -न,-द प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है जबकि अंग्रेजी में केवल - ous और - ion प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है । इससे हट कर और भी प्रत्ययों का प्रयोग हो सकता है जैसे –

1. फलिन्द – इनद	2. फलसी – सी
3. फलनित – इत	4. फलाधी – आधी

उपर्युक्त उदाहरणों में विभिन्न प्रकारों के प्रत्यय हैं । इनका प्रयोग किसी भी क्षेत्र में अनुकूल परिस्थितियों में, सही परिस्थितियों में किया जा सकता है । इस प्रकार के प्रयोग से भाषा का वर्ग भी बदल जाता है और इन शब्दों का संज्ञा के स्थान पर संज्ञा, विशेषण के स्थान पर विशेषण और क्रिया के स्थान पर क्रिया का प्रयोग होता है । किन्तु उपर्युक्त उदाहरणों में जो प्रत्यय जुडे हैं वे है

1. फलधारी – आरी   2. फलन – न   3. फलद – द

ये प्रत्यय भाषा विशेष के अन्तर्गत ही नहीं परंतु समुच्चय भाषा में उत्पादित है । ये प्रत्यय हिन्दी के दोनों कृदन्त व तद्धित शब्द रूपों में जुडते हैं (-द) प्रत्यय विदेशी प्रत्यय है (-न) हिन्दी का प्रत्यय है और (-आरी) संस्कृत प्रत्यय है । इन प्रत्ययों के देखने से यह और भी स्पष्ट हो जाता है

कि किस तरह से संस्कृत, हिन्दी व विदेशी प्रत्यय किन्हीं भी शब्द रूपों में जुडकर अपने आपको उत्पादित करते हैं । "फल" संज्ञा रूप है । किसी भी भाषा एवं क्षेत्र में इसका रूप संज्ञा ही रहेगा । इस संज्ञा रूप में प्रत्यय के योग से ही वर्ग परिवर्तन हो सकता हे और वर्ग परिवर्तन से ही उत्पादकता और भी खरी हो जाती है ।

इसी क्षेत्र के संदर्भ में और उदाहरणों की श्रृंखला में और एक उदाहरण को देखा जा सकता है जहाँ पर अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी में लिप्यंतरण किया गया है । जबकि उन शब्दों के लिए वनस्पति विज्ञान में पहले से हिन्दी शब्द प्रस्तुत है जैसे –

1. Corotenoid – कॉर्टनॉयड
2. Corotenols – कॉरोटीनील्स/पर्णपीताभ
3. Corotene – पर्णपीतक

यहाँ पर Corotenoid और Corotenols का लिप्यंतरण किया गया जबकि corotene के लिए पर्ण पीतक शब्द का प्रयोग किया गया । सभी तीनों शब्दों के मूल में "coro" शब्द है । इसी मूल शब्द को ध्यान में रखकर –

1. Corotenoid – पर्णाक

पर्णाक शब्द नवनिर्मित शब्द है । भाषा विशेष के नियमों को ध्यान में रखकर ही इसका निर्माण किया गया है । क्योंकि Corotene के लिए पर्ण पीतक शब्द वनस्पति विज्ञान में स्वीकृत इसी के आधार पर ही पर्णाक शब्द बनाया गया है । अगर इन तीनों शब्दों को

1. Corotene 2. Corotenoid 3. Corotenols

भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने से इन शब्दों में तीन प्रकार के रूपिमों का योग मिलता है । जैसे Coro उपसर्ग रूपिम है ।

te - मध्यसर्ग रूपिम है ।

ne, noid, – प्रत्यय रूपिम हैं ।

इन्हीं से Corotene, Corotenoid, Corotenols शब्द रूप बने हैं । इसीसे हिन्दी में Coro के स्थान पर पर्ण का प्रयोग किया गया है । यह मुक्त रूपिम है और संस्कृतमूलक है । यहाँ पर "पी" मध्यसर्ग का काम

1. पर्णाक 2. पर्ण पीताम 3. पर्ण पीतक

कर रहा है । अर्थात् यहाँ पर एक ही शब्द में उपसर्ग, मध्यसर्ग और प्रत्यय जुडे हैं और इन्हीं के योग से शब्द एकाग्रत है और यह ध्यान में रखा जाता है शब्द के आवश्यकतानुसार भाषा वैज्ञानिक इन्हीं रूपिमों का चयन करके भाषा को सृजनात्मक और उत्पादक बनाते हैं ।

पर्ण मुक्त भी है और संज्ञा रूपी शब्द भी है और अनेक संदर्भों में उपर्युक्त होता है । भाषा चाहे कितनी भी विस्तृत क्यों न हो शब्दों से भी भरी क्यों न हो परन्तु प्रत्येक शब्द और रूपिमिक ईकाइयों से संयुक्त होते हैं । वनस्पति विज्ञान के और एक उदाहरण को देखेंगे जहां पर तीनों उपसर्ग मध्यसर्ग और प्रत्यय के योग से शब्द गढा गया है ।

Neomorphology – नवआकारिका

Neomutationist – नव उत्परिवर्तनवादी

Neophyte – नवोद्भिद

Neotaxonomy – नववर्गिकी

उपर्युक्त उदाहरणों में कहने को मात्र "Neo/नव" उपसर्ग शब्द में जुडा है परन्तु यह उपसर्ग मूल शब्द भी है । अंग्रेजी में यह बद्ध रूपिम है और हिन्दी में यह मुक्त रूपिम है और कभी-कभी यह शब्द

रूप का काम भी करता है । सामान्य हिन्दी में और पारिभाषिक शब्दावली में इसका अर्थ "नया" के संदर्भ में ही है । यहीं पर यह स्पष्ट दिखाई देता है कि यह "नव" शब्द कहीं पर उपसर्ग, कहीं पर शब्द रूप, और कहीं पर रूपिम का प्रकार्य करता है । शब्द एक परन्तु प्रकार्य अनेक ।

Neomutation – नव उत्परीवर्तनवादी

प्रस्तुत शब्द में भाषा के तीनों रूप मिलते हैं । जैसे -

Neo – नव

Mutation – परिवर्तन

Ist – वादी

इस शब्द में "नव" उपसर्ग है, उत् मध्यसर्ग है और परिवर्तन मूल शब्द है और वादी प्रत्यय है । इस शब्द को और भी खण्डित कर सकते है । "नव" को शब्द रूप में रख सकते हैं । Mutation को स्वतन्त्र शब्द में अगर लें तो यहाँ पर Mutat/परिवर्त शब्द का मूल रूप हो गया और tion/न प्रत्यय हो गया ।

अर्थात् Neomutation को अगर विभाजित करेंगे तब –

मूल शब्द – Mutat – परिवर्त

उपसर्ग – Neo – नव

मध्यसर्ग – उत् – उत्

प्रत्यय – Ist – tion – न, वादी

अर्थात् एक उपसर्ग "नव" Neo

एक मध्यसर्ग "उत्" –

दो प्रत्यय - न – tion

- वादी – Ist

अर्थात् शब्द हुआ नवउत परिवर्तन वादी – Neomutationsit इस शब्द में सभी का योग हुआ है । अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा के संदर्भ में शब्द व रूप चाहे कौनसा भी रहे उस शब्द रूप को हमारी संकल्पनात्मक और संकल सुविधा के लिए उसमें रूपिमों का प्रयोग करके उसे विभिन्न भाषाई संदर्भ में प्रयुक्त कर लेते हैं । उसे सामान्य भाषा से उठाकर पारिभाषिक भाषा के अन्तर्गत ले आते हैं और विभिन्न प्रोक्तियों में उसका प्रयोग करते हैं ।

अर्थात् यहाँ शब्द को छिन्न-भिन्न करने का तात्पर्य यह है कि शब्द में छुपे हुए वैयाकरणीक तत्वों को बाहर निकालना उसे भाषाई स्तर पर परखना । शब्दों को भाषा में गढना और फिर से उसे इन्हीं वैयाकरणिक और सकंल्पनात्मक तत्वों से मिलाना और उसे विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित करना । ऐसा करने से शब्द बहुत बंधे जाते हैं और परखे जाते हैं । इस पद्धति में जो शब्द नव-निर्मित होते हैं वे शब्द उत्पादकता की कोटि पर पहुँच जाते हैं । परन्तु इन सभी पद्धतियों में मूल शब्द वहीं का वहीं रहता है । इस में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं आता है ।

<u>वनस्पति विज्ञान के कुछ उत्पादक रूपिम</u> - वनस्पति विज्ञान के कोश में कुछ और उत्पादक रूपिम मिले हैं । उनकी सूची इस प्रकार है ।

Acicularis	– Aci	- सूचीमान	- सूची
Adeniform	– Adeni	- ग्रंथिरूप	- ग्रंथि
Aeroaquatic	– Aero	- वायुजलीय	- वायु
Anisocytoses	– Aniso	- असमकोशिकता	- असम
Antidromal	– Anti	- प्रतिगामी	- प्रति
Bibracteate	– bi	- द्विसहपत्री	- द्वि
Conopodium	– cono	- शंकुपाद	- शंकु
Cytoplasur	– cyto	- कोशिकाद्रव्य	- कोशि
Dodecagynom	– dode	- द्वादश जायांगी	- द्वाद
Ectoderm	– Ecto	- ब्राम्हा त्वचा	- ब्राम्हा

Endome	– Endo	- अंतरोम	- अंत
Epicome	– Epi	- आधिशंकु	- आधि
Fibrelayer	– Fibre	- तंतुस्वर	- तुतु
Gametangion	– Gamete	- युग्मकधानी	- युग्म
Gametoid	– Gamete	- अंकुशाभ	- अंकु
Hemicleistogamy	– Hemi	- अर्ध निमील	- अर्ध
Heterologous	– Heter	- विषम जात	- विषम
Intravitamdye	– Intra	- अंत सजीव गणक	- अंत
Isopolar	– iso	- समध्रुवी	- सम
Leafscale	– leaf	- पर्णदाग	- पर्ण
Limnacider	– limna	- सरोवर	- सरो
Macrophase	– macro	- बृहत् भक्षकाणु	- बृहत्
Mesochete	– Meso	- मध्यच्छद	- मध्य
Micoaplanospore	– Micro	- लघु अचल बीजाणु	- लघु
Monanturs	– Mono	- एकपुष्पी	- एक
Oliganthous	– oli	- अल्पपुष्पी	- अल्प
Pentamerous	– penta	- पंचभागी	- पंच
Phyllid	– phyll	- पर्णिका	- पर्ण
Phytology	– phyto	- पादप विज्ञान	- पादप
Polyandrous	– poly	- बहुपुकेसरी	- बहु
Quadiart	– quadli	- चतु जलिका	- चतु
Rammeons	– ram	- शाखीय	- शाख
Septulum	– sep	- पटिका	- पट
Tetraploid	– tetra	- चर्तुगणित	- चतु
Whosted	– whost	- चक्करदार	- चक्क

5.3 प्रशासनिक शब्दावली

पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावली की संकलन करते हुए जहाँ विषय को यहाँ तक लाया है, इसका मूल्य आधार आज का इस परिवत्तित वातावरण और कुछ शब्दावली के नये निर्माण से संबंधित है इन सभी में रूपिम व्यवस्था और उसे उत्पादक बनाने की क्षमता के आधार पर उसके प्रकार्य पर चिंतन एवं विश्लेषण किया है ।

पहले की सामग्री में विज्ञान क्षेत्र को देखा था जहाँ पर कई रूपिमों को विश्लेषित किया था । इस शोध के संदर्भ में एक और क्षेत्र देखेंगे जो बहुत ही प्रचलित एवं परिशिष्ट है वह है प्रशासनिक शब्दावली (Administrative) ।

कार्यालयों में हिन्दी की शब्दावली का प्रयोग आरंभ हो जाने के बाद हिन्दी के शब्द रूपों के संदर्भ में कई तरह के उतार चढ़ाव आये है । इनको सुनिश्चित पारिभाषिक शब्दावली तो प्राप्त कराई गई थी परंतु विभिन्न प्रयोक्ति क्षेत्रों में प्रांतीय दबाव अथवा प्रयोग बाहुल्य के कारण विभिन्न प्रकार की शब्दावली भी प्रयुक्त होने लगी इसीसे कई तरह के संबंधित क्षेत्र कठिनाई उठा रहे हैं । प्रशासनिक शब्दावली भी हिन्दी के परिभाषिक शब्दों के प्रयोग में समरूपता का अभाव सबसे बड़ी समस्या हो चुकी थी । इस का कारण यह था कि शब्दावली निर्माण की प्रारंभिक अवस्था में कई हिन्दी भाषी राज्यों तथा विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से अपनी-अपनी शब्दावली का निर्माण और प्रयोग आरंभ कर दिया था । फलस्वरूप एक ही अंग्रेजी शब्द के लिए अनेक पर्याय जो हिन्दी में है प्रयोग में आने लगे । उदाहरण : 1. Supply - पूर्ति - आपूर्ति, संभरण, मुहैया आदि शब्दों का प्रयोग किया गया । 2. Director - निर्देशक, निदेशक, संचालक आदि । इस प्रकार के प्रयोगों से शब्द में स्थिरता नहीं रहती हैं । पारिभाषिक शब्दावली का प्रमुख लक्षण यह है कि एक शब्द के लिए एक शब्दरूप एवं अर्थ होना चाहिए । जहाँ पर वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने विधि की शब्दावली को छोडकर अन्य सभी ज्ञान विज्ञान विषयों की पारिभाषिक शब्दावली के विकास और मानकीकरण का दायित्व सरकार ने सौंपा है वहाँ पर अन्य विषयों के साथ-साथ प्रशासनिक शब्दावली के मानकीकरण और प्रयोग की समरूपता का कार्य भी आरंभ कर दिया है । विभिन्न प्रकार के आयोगों ने इसके लिए कार्य

किये है और इस तरह से आयोग ने कई प्रशसनिक शब्दों को बृहत प्रशासन शब्दावली (अंग्रेजी - हिन्दी संस्करण) संशोधन के आधार पर शब्द संग्रह किये गए । यह प्रशासनिक शब्दावली भारत सरकार की ओर से प्रस्तुत की गई है । इसी शब्दावली का अध्ययन करके इन्हीं शब्दों में से कुछ उदाहरणों को लिया गया । इन उदाहरणों को वयाकरणिक आधारों पर विश्लेषण किया गया ।

इस तरह यहाँ पर उदाहरण के रूप में कुछ शब्द लिए गये हैं इन शब्दों में कहीं पर उपसर्ग, मध्यसर्ग, प्रत्यय जुडे हुए है और कहीं पर यह शब्द संज्ञारूपी है, विशेषण रूपी है और कहीं पर क्रिया रूपी हैं ।

निम्न लिखित प्रशासनिक शब्दावली के उदाहरण इस प्रकार से है –

Resume – पुनः आरम्भ करना

Re-purchase – पुनः क्रय

Re-examination – पुनः परीक्षा

Re-examine – पुनः परीक्षा लेना

Re-plenishment – पुनः पूर्ति

Re-plenish – पुनः पूर्ति करना

Revival – पुनः प्रवर्तन

Re-entry – पुनः प्रवेश

Regain – पुनः प्राप्त करना

उपयुक्त प्रशासनिक शब्दावली के अंतर्गत यह देखा गया है कि जहाँ-जहाँ पर भी Re उपसर्ग का प्रयोग किया गया वहाँ पर पुनः रूपिम का प्रयोग किया गया । पुनः हिन्दी भाषा का मुक्तरूप है । इसका अर्थ सामान्य हिन्दी में दोबार/फिर से के संदर्भ में है । परन्तु जब इस शब्द को प्रशासनिक श्ब्दावली के संदर्भ में देखते है, तो इसका आर्थिक स्तर वही रहता है परन्तु इसके प्रयोग का ढंग बदल जाता है । अंग्रेजी भाषा में Re उपसर्ग बद्ध रूपिम का कार्य करता है और यह किसी भी अन्य मूल शब्द में जुडकर कई संदर्भों में प्रयोग में आता है । यह रूपिम किसी भी दृष्टिकोण से भाषा के अंतर्गत

उत्पादक है क्योंकि Re-पुनः केवल प्रशासनिक शब्दावली में ही नहीं परन्तु प्रत्यय क्षेत्र में उत्पादक है जैसे :

Reborn	– पुनः जन्म
Re-connection	– पुनः जोडना
Re-presentation	– पुनः प्रस्तावना
Re-produce	– पुनः उत्पादन आदि

इस प्रकार से यह रूपिम अध्ययन की दृष्टि से बहुत ही संचरिक एवं सुचारु रूप से कार्य करता है ।

इस तरह के रूपिमों से पाठक एवं अध्ययनकर्ता को यह सुविधा होती है कि वह बिना किसी कठिनाई से इस शब्द रूप का प्रयोग कर सकता है और उसे उत्पादक बना सकता है । भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भी पुनः कभी संज्ञा के रूप में और कभी विशेषण के रूप में कार्य करता है इसका अर्थ वही बना रहता है अधिकतर यह रूपिम संज्ञा की विशेषता बताता है ।

यहाँ पर देखा गया है कि किस तरह से पुनः सार्वजनिक प्रयोजनमूलक है और उत्पादकता की कोटि में सर्वोत्तम स्थान ले सकता है । नीचे इसी प्रशासनिक शब्दावली के संदर्भ में दूसरे उदाहरण देखे जा सकते है ।

Opinion	– मत
Voter	– मतदाता
Voting	– मतदान
Polling booth	– मतदान बूथ
Vote	– मत देना
Votable	– मतदेय
Ballot papers	– मतपत्र
Voting by ballot	– मतपत्र द्वारा मतदान

Ballot box	– मतपेटी
Canvassing	– मतयाचना
Un campranising	– मताधिकार
Affranchise	– मताधिकार देना
Age of suffrege	– मतायु
Canvassing	– मतार्थन
Consensus	– मतैक्य
Intoxication	– मत्तता
Pisciculture	– मत्स्यपालन

उपर्युक्त शब्दों ने "मत" रूपिम का कार्य कर रहा है । "मत" सामान्यत: संस्कृत मूला है और हिन्दी में प्रचलित शब्द है और यह मुक्त रूपिम है । इसका अर्थ सहमति/राय के संदर्भ में है अन्य क्षेत्रों में इसका अर्थ यही है । "मत" पूर्ण रूप से संज्ञा रूप है । परन्तु जब यह प्रशासनिक शब्दावली के संदर्भ में आता है कहीं कहीं यह विशेषण रूप एवं क्रिया रूप में दिखाई पडता है ।

प्रशासनिक शब्दावली में "मत" रूपिम Vote के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है । कही यह मूल शब्द आरंभ में स्थित होता है । आंशिक रूप से अंतर देखा जाय तो Vote, Voter, Voting आदि शब्दों का अर्थ भी राय के संदर्भ में ही है ।

उपयुक्त उदाहरणों में यह भी दृष्टिगत किया गया है कि कहीं-कहीं अंग्रेजी में Canvassing शब्द के लिए हिन्दी में दो पर्याय लिए गये है एक "मतयाचना" और दूसरा "मतार्थन" । इस तरह के दो उपयोगों से सही शब्द का चयन करने में कठिनाई होती है । इस तरह के प्रयोग करने से कोई असमंजस में पड जाता है कि Canvassing शब्द के लिए हिन्दी शब्दावली में कौन सा शब्द ले और वह सीधे Canvassing का लिप्यान्तरण कर लेता है तब की हिन्दी में इस शब्द की सामग्री उपलब्ध है । इन्हीं कारणों से शब्दावलियाँ तो बनाई गई है परन्तु सही चयन नहीं हो पाता है । इन्हीं तत्वों

को ध्यान में रखकर यह विचार व्यक्त किया गया है कि एक शब्द के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जा सकता है । शब्द में उपसर्ग, मध्यसर्ग और कही पर प्रत्यय जोडकर शब्द की संरचना संपन्न की जा सकती है । इसी दिशा में उपर्युक्त शब्द के नवनिर्मित समतुल्य शब्दावली कुछ इस तरह बन सकती है । मत - मतदान, मतैक्य, मती आदि शब्द में मूल को केंद्रित रखकर उसमें उपसर्गों एवं प्रत्ययों को दे कर और उनकी समानता को देखकर समुचय लक्ष भाषा और स्रोत भाषा में एक ही शब्द को संकल्पना के लिए चयन किया जाता है और उसे धीरे-धीरे समूचे भाषा क्षेत्र में समान रूप दिया जाता है ताकि जहाँ पर भी "मत" रूपिम आए उसके अर्थ की एवं क्षेत्र की दृष्टि से ठीक परखे और उसे देखते ही एक विशिष्ट रूप उभर कर आये ।

इसी श्रृंखला में दूसरे उदाहरण को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक शब्द में जो शब्द विस्तृत है उनमें विस्तृतता उपसर्ग एवं प्रत्यय जोडने से ही आती है । निम्न लिखित शब्द इस प्रकार है ।

Calculation	– परिकलन
Calculating	– परिकलित्र
Revolution	– परिक्रमण
Accession	– परिग्रहण
Introduction	– परिचय
Circulating	– परिचल
Effect	– परिणाम
Aceuaintance	– परिचित
Gratification	– परितोषण
Abandonment	– परित्याग
Visitor	– परिदर्शक
Council	– परिषद
Hardwork	– परिश्रमी

Convert	– परिवर्तित करना
Addition	– परिवर्धन
Transportation	– परिवाहन
Probation	– परिवीक्षा
Family allowances	– परिवार भत्ता
Rectification	– परिशोधन
Preservation	– परिरक्षण
Appendix	– परिशिष्ट
Avoidable	– परिहार्य
Premises	– परिसर
Federation	– परिसंघ

अर्युक्त प्रशासनिक शब्दावली में "परि" उपसर्ग के रूप में कार्य कर रहा है परन्तु, अंग्रेजी में "Peri" का उपसर्ग के रूप में कोई भी शब्द नहीं है । वनस्पति विज्ञान में यह देखा गया की अंग्रेजी में "Peri" के स्थान "परि" का प्रयोग किया गया । इस तरह का प्रयोग वनस्पति भाषा विशेष के अंतर्गत हुआ है जब की प्रशासनिक शब्दावली में केवल हिन्दी में "परि" का प्रयोग हुआ है । अंग्रेजी शब्दों में समानांतर संरचना नहीं है और यह आवश्यक भी नहीं है । "परि" संस्कृत उपसर्ग है । इस का अर्थ चारों ओर से शब्द को देखना और विस्तृत बनाना है । यह शब्द के आरंभ में जुड कर शब्द को विस्तृत करता है, उपयुक्त उदाहरणों में पूरे के पूरे शब्दों में "परि" का उपयोग हुआ है अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि "परि" रूपिम उत्पादक और इस का कोई निश्चित अर्थ नहीं रहता क्योंकि वह एक मूल शब्द में जुडकर अपने आप को उसके अनुकूल बना लेता है । पारिभाषिक संज्ञाएँ, पारिभाषिक विशेषण एवं पारिभाषिक क्रियाएँ इन उदाहरणों में प्रस्तुत हैं परन्तु अधिकतर ये शब्द विशेषणमूलक दृष्टिगत होते हैं । प्रशासनिक शब्दावली के अंतर्गत अभी तक जितने भी उदाहरण देखे गए है उन उदाहरणों में केवल हिन्दी के शब्दों में ही उपसर्ग, प्रत्यय एवं मध्यसर्ग का योग हो रहा है अन्यथा अंग्रेजी शब्दों में नहीं, जबकी वनस्पति विज्ञान में यह देखा कि अंग्रेजी शब्दों के साथ-साथ

हिन्दी में भी लगभग एक ही समान के उपसर्ग एवं प्रत्यय जुड रहे हैं यह प्रक्रिया प्रशासनिक शब्दावली में नहीं है । यहाँ पर इसकी विधि में थोडा बहुत अंतर है । इस अंतर शब्द के संदर्भ में प्रशासनिक शब्दावली में इसके विभिन्न प्रकार्यों को देखा जा सकता है । निम्न लिखित उदाहरण इस प्रकार से है ।

अंत:करण	– conscience
अंत:क्षेप	– intervertion
अंत में जुडना	– suffix
अंतर	– variance
अंतरंग	– confidentian
अंतरण	– transfer
अंतरनुभागीय पत्राचार	– inter sectional references
अंतर एकक	– inter unit
अंतरिक्ष	– space
अंतरिम	– interim
अंतर्गत	– within
अंतरक्षेप	– closing balance
अंतरसंचार	– inter communication
अंतिम उत्पाद	– end product
अंतिम	– final
अंतिम सन्दाय	– last payment
अंतिम स्थल	– terminus
अंतिम भुगतान	– last payment
अंतरावधि	– interval
अंतरिम अनुदान	– interim grant
अंतरदेशिय	– inland

उपर्युक्त उदाहरणों में तीन-चार तरह के शब्दों को देखा गया है जैसे :–

अंत – inter

अंतर – inter

अंतिम – last/final

अंततः – ultimately

ये सभी रूपिम उपसर्ग की भूमिका निभा रहे हैं । ये सभी रूपिम हिन्दी एवं संस्कृत भाषा के स्वतंत्र अर्थ मूलक शब्द (मुक्त रूपिम भी) है । ये शब्द के प्रारंभ में ही जुडते है अंत में प्रशासनिक शब्दावली में प्रयुक्त हुए है । इसका अर्थ समाप्त या पूरा हो जाना के संदर्भ में है । इस शब्द के अर्थ की विशेषता यह है कि चाहे कौनसा भी क्षेत्र हो कौनसा भी विषय हो इसका मूल अर्थ वही बना रहता है । इसमें किसी भी तरह का बदलाव नहीं होता है । इसी कारणवश इसे उत्पादकता की श्रेणी में ले जा सकते है । ये एक संज्ञा रूपि शब्द है बहुत कम इसका वर्ग परिवर्तन होता है । अर्थात पारिभाषिक विशेषण एवं पारिभाषिक क्रिया के शब्द रूप बहुत कम बनते है । ये शब्द केवल प्रशासनिक शब्दावली में ही नहीं परन्तु विभिन्न भाषाई कोठियों में आते हैं, जैसे संस्कृत, हिन्दी एवं तेलुगू इन भाषाओं में इसका अर्थ एवं उच्चारण समरूपी रहता है । हिन्दी में "अंत" का अर्थ अंग्रेजी में कभी "Inter", "Last", "Final" "Ultimately" अथवा "Interim" के संदर्भ में प्रयोग होता है । "अंत" मूल रूप है "अंतर", "अंतिम" और "अंततः" इसके पर्याय है ।

उपर्युक्त उदाहरणों में अंग्रेजी भाषा का जो Suffix शब्द है इसके लिए "अंत" में जुडना शब्द को लिया गया है जबकि हिन्दी में Suffix शब्द के लिए "प्रत्यय" शब्द उपलब्ध है । इस शब्द के होने पर दूसरे शब्द की आवश्यकता नहीं थी । इस तरह के प्रयोग करने से भाषा एवं शब्दों में विभिन्नता उत्पन्न होगी और जो एक शब्द उत्पादकता की कोटि में आगे बढ रहा है उसका उत्पादन कम हो जाएगा । जब पहले से ही Suffix के लिए प्रत्यय शब्द हिन्दी में है दूसरे शब्द के संदर्भ में सोंचना उचित नहीं है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि शब्दों में क्रम बनाए रखना बहुत आवश्यक है । मूलरूप से वे शब्द जिस में एक ही समान के उपसर्ग जुड रहे है इस क्रम को बनाए रखने से एक तो अध्ययन और दूसरा उनकी श्रेणी बनी रहेगी और उपयोग यह है कि अगर भाषा में एक ही प्रकार के शब्द संकल्पित किए जाएंगे तो तब ही हिन्दी शब्दों के पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दों को लक्ष्य भाषा में ले जा सकते है और उसे उसके अनुकूल बना सकते है । किसी भी भाषा विशेष क्षेत्र में एक पारिभाषिक शब्द के लिए एक ही अर्थ होना चाहिए । एक से अधिक शब्द होने से या अर्थ होने उसकी पारिभाषिकता खो जाती है और उपयोग करने में भी कठिनाई होती है । एक ही शब्द के होने से चयन में भी सुविधा होगी और शब्द का महत्त्व भी उस क्षेत्र के संदर्भ में बना रहेगा ।

अंत

अंतिम

अंततः

ये तीनों रूप मूल रूप से एक ही है परन्तु यह शब्द अपने-अपने संदर्भ के अनुसार भाषा में प्रयुक्त होते हैं और अपनी भूमिका निभाते हैं ।

अब तक प्रशासनिक शब्दावली के संदर्भ में उपसर्गों के उदाहरणों को देखा है । आगे मध्यसर्ग किस प्रकार से शब्द में जुडते है उसे देखा जा रहा है । मध्यसर्ग जब भी शब्द में जुडता है उस शब्द में ध्वन्यात्मक परिवर्तन भी हो सकता है । निम्न लिखित उदाहरणों में मध्यसर्ग जुडे हुए है ।

अल्पोपभाग – under consumption

अल्पीकरण – derogation

औद्योगीकरण – industrialisation आदि

प्रस्तुत शब्दों में मध्यसर्ग का प्रयोग किया गया है । "अल्पोपभाग" में "अल्प" under के लिए और "भाग" Consumption के लिए प्रयुक्त हुआ है । इस शब्द में "ओप" मध्यसर्ग जुडा है । जैसे

अल्प + ओप + भाग : अल्पोपभाग । उपसर्ग और प्रत्यय की तुलना में मध्यसर्ग का प्रयोग रूपिमों के संदर्भ में बहुत कम होता है । मध्यसर्ग जब भी शब्द में जुडते है पुरे शब्द में किसी भी संदर्भ में, विषय में ध्वन्यात्मक परिवर्तन करते हैं इसी तरह के एक और उदाहरण जो उपर प्रस्तुत है वह "अल्पीकरण" रूपिम है इस रूपिम में –

अल्प + ई + करण = अल्पीकरण । जहाँ-जहाँ भी शब्द में "करण" रूपिम का प्रयोग होता है । उन सभी शब्दों में मध्यसर्ग अवश्य रहता है क्योंकि किसी भी पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्द में जहाँ-जहाँ भी "करण" रूपिम प्रत्यय के रूप में जुडता है वहाँ पर मध्यप्रत्यय का प्रयोग होता है जैसे "अमान्यीकरण", "प्रमाणीकरण", मुद्रीकरण और आधुनिकीकरण आदि । इन सभी शब्दों में "ई" मध्यसर्ग का प्रयोग हुआ है । उसी तरह से "औद्योगीकरण" में भी "ई" मध्यसर्ग का प्रयोग हुआ है । यह शब्द "उद्योग" का विस्तार रूप है जिसमें "करण" प्रत्यय के रूप में और "ई" मध्यसर्ग के रूप में प्रयुक्त हुआ है इस तरह से "उद्योग" industry के लिए "औद्योगीकरण" industrialisation को निर्मित किया गया "उद्योग" से "औद्योगीकरण" होना पूरी ध्वनी संरचना में परिवर्तन होता है । अधिकतर गणना यह की गई है कि "ई" मध्यसर्ग अधिक मात्रा में प्रयोग होता है । गुण शब्द जब हमारे सम्मुख आता है तब हमारे मन में उसका अर्थ स्वभाव उत्पन्न होता है । "गुण" भाव वाचक संज्ञा है । यह स्वतंत्र एवं मुक्त रूप है और सामान्य हिन्दी का भी शब्द है । "गुण" शब्द सुनते ही हमारे मन में विभिन्न प्रकार की भावनात्मक अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न होती है । नीचे इसी "गण" शब्द का विश्लेषण करेंगे और अब तक उपसर्ग और मध्यसर्ग की व्याख्या की गई है । आगे प्रत्ययों के संदर्भ में विचार किया जायेगा । "गुण" शब्द में विभिन्न प्रकार के प्रत्यय जुडते है तब इसकी अर्थवत्ता भी परिवर्तित हो जाती है । गुण में निम्न प्रकार के प्रत्यय जुडे है जैसे

गुण	– property quality
गुणता	– quality
गुणवत्ता	– quality
गुणवान	– merritoreous
गुणात्मक	– qualitative

गुणानुक्रम — order of merit

गुणावगुणा — merits and demerits

इन सभी में "ता", "वतता", "वान", "आत्मक", "आणुक्रम" और "आवगुण" प्रत्ययों का योग हुआ है । इन सभी शब्दों को जब उच्चारित करते है हमारे मन में एक भावत्मक अभिव्यक्ति जागृत होती है जबकि यह सभी के सभी शब्द साहित्य से संबंधित नहीं है परन्तु प्रशासनिक शब्दावली के क्षेत्र के है ।

उपयुक्त उदाहरणों में :

गुण — quality

गुणता — quality

गुणवतता — quality

इन तीनों शब्दों के लिए एक ही शब्द quality का प्रयोग हुआ है जो गलत है "गुण" मूल शब्द है "ता" और "वतता" संस्कृत प्रत्यय है "गुणता" का लिए qualities और "गुणवतता" के लिए qualitatively शब्द बना सकते है क्योंकि तीनों स्थानों पर quality का प्रशासनिक शब्दावली के संदर्भ में उचित नहीं है । अगर quality शब्द को ही मूल में रखना चाहते है तब "गुण" शब्द काफी है । तब "गुणता" एवं "गुणवतता" की आवश्यकता नहीं है और qualities, qualitatively अंग्रेजी भाषा में शब्द पहले से ही प्रस्तुत है उन शब्दों को पारिभाषिक शब्दों में ले आना अनुचित ही होगा इस तरह का प्रयोग करना ही उत्पादकता कहलाता है ।

उसी तरह से अगर "गुणात्मक" शब्द को देखा जाये तो इसमें जो "आत्म" प्रत्यय है दो शब्दो का मेल है "आत्मा" और "अक" प्रत्यय यह दोनों शब्द रूप जब "गुण" शब्द में जुडते है तब उसे "गुणात्मक" बनाते है । उसी तरह से "गुणानुक्रम" एवं "गुणावगुण" में दो प्रत्यययों का योग हुआ है ।

गुणानुक्रम = गुण + आनु + क्रम

गुणावगुण - गुण + आव + गुण

उपयुक्त शब्दों में "गुण" और "क्रम" शब्द का प्रयोग ज्यादा एवं प्रत्यय का कार्य कम कर रहे है क्योंकि यह दोनों के दानों प्रत्यय नहीं है परन्तु यह स्वतंत्र रूप से शब्द ही है । अर्थात इसकी व्याख्या प्रत्यय के रूप में ना करके मध्यसर्ग के रूप में कर सकते है क्योंकि यहाँ पर "आणु" और "आव दोनों ही शब्द मध्यसर्ग का कार्य कर रहे है ।

तात्पर्य यह है कि "गुण" शब्द अर्थ की दृष्टि से एक है परन्तु जब इसमें विभिन्न प्रकार के प्रत्ययों उपसर्गों एवं मध्यसर्गों का प्रयोग होता, इसके अर्थ में, इसके प्रकार्य में और इसके क्षेत्र में अंतर आ जाता है । केवल इतना ही नहीं अगर "गुण" शब्द में और भी प्रत्ययों और उपसर्गों को जोडकर शब्द को अन्य भाषाई स्थर पर प्रयोग कर सकते है जैस "अवगुणात्मकता" इसमें "अव" उपसर्ग है "आत्मकता" में दो प्रत्यय है "आत्मक" और "ता" आत्मक में भी तीन प्रत्यय है, आ,तम, क ये संस्कृत मूलक हैं, ये तीन रूपिमों से बना हुआ एक बद्ध रूपिम है ।

आत्म -
क -
त -
} रूपिम

ये अपने आप में उत्पादक बनता है । इस विस्तृतता का होना ही शब्द में उत्पादकता को जन्म देता है प्रत्ययों के श्रृंखला में आगे और एक उदाहरण प्रस्तुत है ।

प्रचार	– publicity
प्रचालन	– operation
प्रचलित	– current
प्रचलन	– useage

उपर्युकत शब्द प्रशासनिक शब्दावली के संदर्भ में है । यहाँ पर मूल शब्द "प्रचर" है यह हिन्दी का मूल मुक्त रूप है इस शब्द में विभिन्न तरह के प्रत्यययों एवं उपसर्गों का प्रयोग करके उसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है । उपर्युक्त शब्द में कहीं पर "-आर", "-आलन", "-इत" और कहीं पर "लन" प्रत्यय जोडा गया है । ये सभी प्रत्यय हिन्दी भाषा में भी प्रत्यय है और जब ये शब्द में जुडते है तो उसे पारिभाषिक एवं तकनीकी बनाते है और इसी पारिभाषिक शब्द में यह केन्द्रित होकर विभिन्न प्रोक्तियों में प्रयुक्त होते है ।

इसी प्रोक्ति विशेष में प्रत्यय से जुडे एक और शब्द के उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं ।

संघ – union/association

संघवाद – unionism

संघीय – union

संघठन – composition

संघठक – constituent

उपर्युक्त शब्द प्रशासनिक शब्दावली के संदर्भ में है । इन सभी में मूल रूप बहुत उभर कर आ रहा है और वह "संघ" है । सामान्य हिन्दी में इसका अर्थ "संयुक्त/मिलना" से है और यही अर्थ प्रशासनिक शब्दावली के संदर्भ में भी सम्पन्न हो रहा है । -वाद, -ईय, -टन, -ठक आदि प्रत्यय "संघ" मूल रूपिम में जुड कर एक नवीन शब्द रूप का उत्पादन कर रहे है । "संघ" एक संस्कृत स्त्रोतिय शब्द है और यह एक पारिभाषिक संज्ञा रूप में भाषा में प्रयुक्त होता है । इसके जो अन्य रूप है जैसे संघीय, संघटक, संघठन यह सभी पारिभाषिक विशेषण रूप है ।

अर्थात कहने का निष्कर्ष यही है कि चाहे शब्द में उपसर्ग, मध्यसर्ग एवं प्रत्यय जुडने से शब्द में एक तरह की विवधता उत्पन्न होती है । चाहे शब्द हिन्दी के, संस्कृत के या विदेशी भाषा के हो उनमें नये तरह के शब्दों को उत्पन्न करना एवं उन्हें उत्पादक बनाना व्यक्ति के हाथ में होता है । यदि प्रत्येक शब्द के अर्थ को जान गए तो उन शब्दों में आवश्यकतानुसार व्याकरणिक अव्ययों को

जोडकर विभिन्न क्षेत्रों में उसका प्रयोग कर सकते है क्योंकि भाषा बहुत ही लचीली (flexible) है । इस लचीलेपन को प्रयोग में लाकर नये शब्दों का निर्माण कर सकते है । आगे चलकर यही नव निर्मित शब्द उत्पादकता के कार्य को आगे बडा सकते है ।

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द	प्रत्यय
judicial	- आदालती	- ई
payment	- भुगतान	- तान
preside	- अध्यक्षता	- ता
under	- अधीन	- न
redundant	- अनावश्यक	- क
non traditional	- अपरम्परागत	- आगत
absolute	- अप्रतचलित	- इत
standard	- मानक	- क
estimate	- आंकना	- ना
flight	- उडान	- आन
industrialization	- औद्योगीकरण	- करण
upper	- ऊपरी	- इ
deduction	- कटौती	- औती
strinquency	- कड़ापन	- पन
delinquency	- अपराधवृति	- वृति
count	- गिनना	- आ
refreshment	- जलपान	- पान
evade	- टालना	- ना
coastal	- तटीय	- इय
pressman	- पत्रकार	- कार
defence	- बचाव	- आव
riot	- बलता	- ता

mortgagor	- बंधककर्ता	- कर्ता
insured	- बीमाकृत	- कृत
pharmacy	- भेषजी	- जी
aid	- मदद	- द
mediator	- मध्यग	- ग
hardworking	- मेहनती	- ती
understanding	- समझदारी	- दारी
state	- हालत	- त
recent	- हालही	- ही
disadvantage	- हानिकर	- कर

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द	उपसर्ग
unskilled	- अकुशल	- अ
forward	- अग्रवर्ती	- अग्र
surtax	- अतिकर	- अति
warrant	- अधिपत्र	- अधि
advertently	- अनजाने	- अन
sequences	- अनुक्रम	- अनु
allegation	- अभिकथन	- अभि
half yearly	- अर्ध वार्षिक	- अर्ध
depreciation	- अवक्षय	- अव
non - delivery	- अवितरण	- अवि
figure	- आकृति	- आ
prize	- इनाम	- इ
fuel	- ईंधन	- ई
fairprice	- उचित भाव	- अचित
higher education	- उच्च शिक्षा	- उच्च
reclaimation	- उद्धार	- उद्

solitary	- एकमात्र	- एक
underage	- कम उम्र	- कम
dutyroom	- कार्यकक्ष	- कार्य
intrique	- कुचक्र	- कु
stress	- जोर देना	- जोर
tenable	- तर्कसंगत	- तर्क
bad character	- दु:शील	- दु:
direct	- निदेश	- नि
parasite	- परजीवी	- पर
perspective	- परिप्रेक्ष	- परि
reward	- पारितोषिक	- पारि
repurchase	- पुन: क्रय	- पुन:
mode	- प्रकार	- प्र
retaliation	- प्रतिकार	- प्रति
defence	- बचाव	- ब
majority	- बहुमत	- बहु
recovery	- वसूली	- व
disassociation	- विघटन	- वि
balance	- संतुलन	- सं
assault	- हमला	- ह

5.4 बैंकिंग शब्दावली

ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर चिंतन एवं अनुसंधान के परिणाम स्वरूप नये-नये सिद्धांत और तत्संबंधित संकल्पनाओं का जन्म होता रहता है । साथ ही साथ विज्ञान और तकनिक के विकास के कारण नयी-नयी वस्तुओं का निर्माण भी होता रहता है । इन संकल्पनाओं और वस्तुओं को उनकी निश्चित अर्थवता के साथ व्यक्त करने के लिए पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता पडती है । ज्ञान विज्ञान का यह चिन्तन जिस भाषा में मूल रूप में होता है वहाँ तो उसे व्यक्त करने वाले

पारिभाषिक शब्द भी सहज रूप से विकसित होते रहते है किन्तु जहाँ यह चिन्तन किसी अन्य भाषा से ग्रहण किया जाता है वहाँ यह समस्या उत्पन्न होती है कि उसे यथावत रूप में व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द कहाँ से लाए जाए । आधुनिक काल में जब हिन्दी ने अंग्रेजी में विकसित शास्त्रिय ज्ञान को ग्रहण करना शुरू किया तो उसके सामने भी पारिभाषिक शब्दावली के अभाव की यही समस्या आई । इसी क्षेत्र में बैंकिंग की संकल्पना भी अंग्रेजी से प्राप्त हुई अत: जब बैंकिंग कारोबार हिन्दी में किए जाने की आवश्यकता हुई तो संभवत: हिन्दी में बैंकिंग की पारिभाषिक शब्दावली की जरूरत भी महसूस हुई ।

भाषा की न्यूनतम ईकाई रूप है और यह रूप भाषा व्याकरणीक के नियमों के अनुसार बनते है इससे यह नहीं समझना चाहिए की व्याकरण से भाषा बनती है । सच तो यह है कि भाषा पहले अस्तित्व में आती है, व्याकरण भाषा के बहुत बाद में बनते है । कहने का तात्पर्य यह है कि शब्द एवं रूप से ही भाषा का निर्माण होता है और उनके सुव्यवस्थित प्रयोग से अन्य तत्व सामने आते है जिसे समझने के लिए व्याकरण का प्रयोग करना पडता है । दूसरी बात यह है कि प्रत्येक शब्द का अपना एक अर्थ होता है और यह शब्द एवं अर्थ अपने जगह सार्थक होते है और तीसरी बात यह है कि भाषा में सार्थक लघुतम इकाइयाँ तीन होती है शब्द, उपसर्ग और प्रत्यय किन्तु इनमें शब्द ही स्वतंत्र होते है उपसर्ग और प्रत्यय इन्हीं शब्दों के साथ जुडकर आते है ।

इन्हीं उपसर्गों और प्रत्यययों की सहायता लेते हुए बैंकों में हिन्दी के शब्दों का प्रयोग होता है । यहाँ नीचे कुछ ऐसे शब्दों को देखा जायेगा जिसमें उपसर्ग जुडे हुए है और वह किस तरह से बैंकिंग शब्दावली में जुडकर शब्द को एक नया अर्थ प्रदान कर रहे है ।

संकलन – compilation

संकलपना – concept

संक्रमण – transit

संगणण – computation

संग्रहण – mobilisation

संचयी – cumulative

संचार – communication

संचारण – transmission

संरक्षी – protective

संषोधी – amending

संवित्रण – disbussement

उपर्युक्त शब्द बैंकिंग शब्दावली के संदर्भ में है यहाँ पर "सं" उपसर्ग का प्रयोग शब्द में किया गया है । प्रस्तुत उपसर्ग संस्कृत निष्ट है और यह हर समय बद्ध रूपिम के रूप में ही प्रयोग में आता है । "सं" उपसर्ग स्वतंत्र रूप में कोई अर्थ नहीं रखता परन्तु जब यह कोई शब्द के साथ जुडकर आता है तो कोई विशिष्ट अर्थ प्रदान करता है । उपयुक्त शब्दों में "संकल्पना" जो शब्द है इस शब्द का निर्माण से हुआ है संकल्पना सामान्य हिन्दी में कल्पना का अर्थ विचार करना है परन्तु जब "सं" उपसर्ग कल्पना से जुड जाता है तब "संकल्पना" शब्द बन जाता है । यह "संकल्पना" शब्द अब पारिभाषिक हो चुका है क्योंकि बैंकिंग शब्दावली में इसका एक विशिष्ट अर्थ है । इस "संकल्पना" शब्द से कई शब्दों का निर्माण होता है जैसे :

संकल्प, संकल्पित, संकल्पीय आदि ।

उपर्युक्त शब्द भी भाषा में प्रयुक्त है और इनका प्रचार भी कभी सामान्य भाषा के संदर्भ में और कभी पारिभाषिक शब्दों के रूप में हो रहा है । "संकल्पना" के दिए गये शब्द रूपों का प्रयोग केवल बैंकिंग के क्षेत्र तक ना कर के उसका प्रयोग अन्य क्षेत्रों में भी कर सकते है परन्तु इन शब्दों का अर्थ क्षेत्र और विषय के अनुसार परिवर्तित हो सकते हैं ।

उपर्युक्त शब्दों में एक और शब्द है "संचार" यह शब्द भी तीन शब्द रूपिमों से निर्मित है स+चर+आ यहाँ पर चर मूल है, और "आ" मध्यसर्ग "संचार" का अर्थ "Communication" के

संदर्भ में है । यह "संचार" शब्द का प्रयोग निम्न लिखित शब्द रूपों में भी होता है जैसे :

दूरसंचार, दूरसंचालन, दूरसंचालक ।

इस "संचार" शब्द में दो तरह के उपसर्ग जुडे हुए है एक "सं" उपसर्ग और दूसरा "दूर" उपसर्ग है । इस तरह से "चार" शब्द "संचार" बना तथा "संचार" में "दूर" उपसर्ग के रूप में जुडने से "दूरसंचार" बना । यह संचार शब्द सभी क्षेत्रों तथा विषयों में प्रचलित है और एक ही अर्थ प्रदान करता है अतः यह भाषा की दृष्टि से उत्पादक कहा जा सकता है । अतः सामान्य शब्दों में जब उपसर्ग जुड जाते है तब वह पारिभाषिक हो जाते है और इनका प्रयोग विभिन्न संदर्भों में होने लगता है ।

इसी उपसर्ग की श्रृंखला में एक और शब्द को देखेंगे जहाँ पर "प्र" उपसर्ग का प्रयोग हो रहा है । "प्र" संस्कृत भाषा का उपसर्ग है और हिन्दी में भी बद्ध रूपिम के रूप में भाषा में प्रयुक्त होता है जिसका कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं है परन्तु जब यह किसी भी शब्द के साथ जुड जाता है तब एक विशिष्ट अर्थ प्रदान करता है । निम्न लिखित रूप बैंकिंग शब्दावली में प्रयुक्त होते है जैसे :

प्रकरण - case

प्रकल्पित - presumed

प्रगति - progress

प्रचल - circulating

प्रदान - grant

प्रपत्र - form

प्रकल्पना - presumption

प्रवर्ग - category

उपर्युक्त शब्दों में विभिन्न तरह के शब्द है और सामान्य हिन्दी में इन शब्दों का प्रयोग विभिन्न तरह से होता है । जब यह सामान्य शब्द पारिभाषिक शब्द बन जाते है तब इनका प्रयोग विशिष्ट रूप से होता है । उपयुक्त शब्दों में "प्रगति" जो शब्द है, "गति" का अर्थ प्रदान करती है । सामान्य हिन्दी

में "progress" आगे बडने के संदर्भ में है। परन्तु जब इस शब्द में "प्र" उपसर्ग जुडता है तब "प्रगति" शब्द का निर्माण होता है। "प्रगति" का अर्थ भी progress के संदर्भ में ही है। यह "प्रगति" शब्द का अर्थ किसी भी क्षेत्र में और विषय में अपरिवर्तित है अर्थात यह कह सकते है कि "प्रगति" शब्द भी भाषा की दृष्टि से उत्पादक है क्योंकि इसकी अर्थवतता एवं शब्द दोनों के दोनों संपूर्ण भाषा में अपना एक ही रूप समाये रखते है अर्थात इसके उत्पादक होने के कारण प्रस्तुत होते है।

"प्रगति" शब्द पारिभाषिक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है यह शब्द अपना वर्ग परिवर्तन भी पारिभाषिक संकल्पना के आधार पर करता है जैसे :

प्रगतिपरक, प्रगतिपूर्ण, प्रगतित, प्रगतिस्वरूप आदि।

"प्रगति" शब्द के यह शब्दरूप विभिन्न आयामों और विभिन्न संदर्भों में प्रयुक्त होते है। इसी कारणवंश इनका वर्ग परिवर्तन भी होता है यह संज्ञा से विशेषण और संज्ञा से क्रिया शब्द रूप में निर्मित होते है।

"प्रपत्र" एक ऐसा शब्द है जिसमें दो शब्द है एक बद्ध रूपमि "प्र" और मुक्त रूपिम "पत्र"/ सामान्य भाषा में पत्र का अर्थ "letters" के संदर्भ में है परन्तु जब इस "पत्र" शब्द में "प्र" उपसर्ग का प्रयोग होता है तब "प्रपत्र" शब्द का निर्माण होता है और यह "प्रपत्र" शब्द संपूर्ण रूप से पारिभाषिक एवं तकनीकी है। "प्रपत्र" का अर्थ "forms", "drafts", "instruments" आदि के संदर्भों में है यह शब्द "पत्र" मूल अर्थ के साथ-साथ विभिन्न प्रोक्ति मूलक अर्थों को अपने में समा कर एक समर्थ उत्पादक रूपिम के भाषा में उभरकर आया है। भाषा में से कुछ शब्द पारिभाषिक एवं तकनीकी बन जाते है। इसी के संदर्भ में एक और उदाहरण जिसमें लिया जा सकता है।

उपकरण	- apparatus
उपचय	- accruel
उपग्रह	- satelite
उपक्रम	- undertaking

उपदान	- gratuity
उपधारा	- sub - section
उपचित	- accrued
उपकार्यालय	- sub - office
उपभोध	- consumption

उपर्युक्त शब्द में "उप" प्रत्यय का प्रयोग हुआ है । यह प्रत्यय संस्कृत निष्ट है और बद्ध रूपिम के रूप में प्रयोग होता है इसका किसी भी तरह से स्वतंत्र अर्थ नहीं है ।

उपर्युक्त शब्दों में "उपचय" और "उपचित" दो शब्द है जिसका अर्थ बैंकिंग शब्दावली के संदर्भ में उपचित ब्याज, उपचित छुट्टी और उपचित ऋण के संदर्भ में प्रयुक्त होता है । "उपचय" एवं "उपचित" दोनों एक ही शब्द है केवल इसमें "इत" प्रत्यय जुडने से भिन्नता दृष्टिगत होती है । यह पूर्ण रूप से पारिभाषिक है एवं इसका प्रयोग केवल बैंकिंग शब्दावली के संदर्भ में ही होता है यह दोनों पारिभाषिक विशेषण रूप है ।

"उपदान" और "उपधारा" शब्द भी पारिभाषिक शब्द रूप है । "उपदान" के संदर्भ में "दान" शब्द सामान्य हिन्दी में "दान" शब्द जो वस्तु अवश्यकता के अनुरूप अमूल्य रूप में दी जाती है । उसे दान कहा जा सकता है । जब इसमें "उप" उपसर्ग का जोड होता है तब यह शब्द gratuity के संदर्भ में प्रयुक्त हो जाता है । "उपदान" शब्द पूर्ण रूप से पारिभाषिक है और इसका प्रयोग कार्यालय, बैंकिंग एवं प्रशासन शब्दावली के संदर्भ में एक ही अर्थ के अंतर्गत होता है । उसी प्रकार से "उपधारा" शब्द के "धारा" शब्द का सामान्य हिन्दी में "बहना" अर्थ होता है, परन्तु "धारा" शब्द भी पारिभाषिक हो चुका है जिसका अर्थ "section" के संदर्भ में है और "उपधारा" का अर्थ "sub-section" के रूप में आता है । "उप" उपसर्ग की यह विशेषता है कि जहाँ-जहाँ भी "उप" उपसर्ग का प्रयोग होता है वहाँ पर अंग्रेजी में "sub" उपसर्ग का प्रयोग होता है ।

अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा, व्याकरणिक नियमों में रहकर एक सुनिश्चित रूप अपनाती है और वह इन्हीं उपसर्ग एवं प्रत्यय की सहायता से पारिभाषिक एवं तकनीकी बनती है । जो शब्द सामान्य भाषा के है और उन्हीं शब्दों में जब प्रत्यय एवं उपसर्ग जुड जाते है तो वह पारिभाषिक शब्द बन जाते है ।

बैंकिंग शब्दावली के अंतर्गत उपसर्गों के संदर्भों में देखा गया आगे मध्यसर्ग के उदाहरण विवेचित है ।

आशुपरिकलक	- ready reckoner
मानकीकरण	- standardisation
वर्गीकरण	- classification

उपर्युक्त शब्द "आशुपरिकलक" शब्द में आशु+परि+कल+क रूपिमों के योग से शब्द का निर्माण हुआ है इस शब्द में "परि" मध्यसर्ग, "आशु" उपसर्ग है और "क" प्रत्यय है "कल" शब्द सामान्य हिन्दी भाषा का शब्द इस सामान्य हिन्दी भाषा के शब्द में कहीं पर उपसर्ग, कहीं पर मध्यसर्ग और कहीं पर प्रत्यय को जोडकर इसे पारिभाषिक शब्द बनाया गया है । यहाँ पर "परि" रूपिम है वह मध्यसर्ग के रूप में प्रयुक्त हुआ तब की यही "परि" रूपिम वनस्पति विज्ञान की शब्दावली में और प्रशासनिक शब्दावली में उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त हुआ है । हिन्दी के वही रूपिम जो कभी उपसर्ग के रूप में आते है कभी मध्यसर्ग के रूप में आते है और कभी प्रत्यय के रूप में आते है रूपिम वही रहता है और उसका अर्थ भी वही रह सकता है परन्तु जब वह उपसर्ग, मध्यसर्ग और प्रत्यय के रूप में जुडते है तब इनमे उच्चारण एवं प्रयोग में परिवर्तन हो जाता है । उसी तरह से "मानकीकरण" व "वर्गीकरण" शब्द में "ई" मध्य रूपिम का प्रयोग हुआ है । जैसे कि प्रशासनिक शब्दावली में यह देखा गया है कि जहाँ-जहाँ भी "करण" प्रत्यय के रूप में शब्द में जुडता है वहाँ पर "ई" मध्यसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है । ये संस्कृत से लिया गया है और संस्कृत तत्सम हैं ।

इन उदाहरणों से यह दृष्टिगत होता है कि प्रत्यय, उपसर्ग और मध्यसर्ग सामान्य भाषा से लेकर

पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावली के रूपिमों में प्रयुक्त होकर अनुकूल विषय को एक विशिष्ट रूप देते है । नीचे प्रत्यय से जुडे कुछ शब्दों को जो पूर्णरूप से पारिभाषिक एवं तकनीकी दिया गया है इन उदाहरणों में प्रत्यय जुडे है ।

उतराई - unloading/loading

महंगाई - dearness

ढलाई - foundry

भुनाई - encashment

लदाई - loading आदि ।

उपर्युक्त शब्दों में "आई" प्रत्यय का प्रयोग किया गया है । "आई" प्रत्यय हिन्दी का प्रत्यय है ये बद्ध रूपिम है यह शब्दों में प्रत्यय के रूप में जुडकर प्रयोग में आता है । उपर्युक्त उदाहरणों में जो शब्द है जैस ढलाई, लदाई, भुनाई, महंगाई आदि इनके उच्चारण में ही पारिभाषिक विशेषण रूप दिखाई पडते है । ये शब्द पारिभाषिक संज्ञाओं की विशेषता बता रहे हैं ।

"उतराई" जो शब्द है इस शब्द में "उत्तर" मूल मुक्त रूपिम है और "आई" बद्ध रूपिम का कार्य कर रहा है । सामान्य हिन्दी में "उत्तर" का अर्थ नीचे की ओर आना से है परन्तु जब यह बैंकिंग शब्दावली के संदर्भ में आता है तब पूर्णरूप से यह पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्द बन जाता है । बैंकिंग शब्दावली के संदर्भ में इसका उपयोग निम्न लिखित प्रकार से होता है जैसे :

उतराई खर्च - unloading charges

उतराई प्रभार - loading charges

उतराई प्रमाण पत्र - loading certificate

उतराई पतन - post of discharge आदि ।

बैंकिंग शब्दावली में जहाँ-जहाँ भी "unloading" एवं "loading" का प्रयोग होता है वहाँ पर

"उतराई" शब्द का ही प्रयोग होता है अर्थात यह शब्द बैंकिंग शब्दावली के संदर्भ में पूर्णरूप से पारिभाषिक हो गया है ।

उसी प्रकार से जब महंगाई शब्द भी महंगा+आई रूपिमों से बना हुआ है । सामान्य भाषा में "महंगाई" शब्द का अर्थ तो सभी जानते हैं, परन्तु जब यह बैंकिंग शब्दावली के संदर्भ में प्रयोग होता है तो इसका प्रयोग "महंगाई भत्ता" "महंगाई वेतन" आदि के रूप में आता है । "महंगाई" मूल रूप से "वाणिज्य" का शब्द है इस शब्द का अर्थ किसी भी क्षेत्र एवं विषय में बदलता रहता है इस प्रकार से अर्थ का बदलना व्यक्ति को शब्द चयन के संदर्भ में असमंजस में डाल देता है ।

इस प्रकार से ऐसे कई शब्द है जो सामान्य भाषा में एवं पारिभाषिक भाषा में विभिन्न रूप बनाते है, कभी एक ही रूप बताते है और कभी इन का रूप शून्य होता है क्योंकि भाषा की कोई निश्चितता नहीं रहती, भाषा को निश्चित बनना और भाषा में जो प्रचलित शब्द है उनको उत्पादक बनाना ही लक्ष्य होता है । नीचे कुछ शब्दों को जिसमें "इक" रूपिम (प्रत्यय) का प्रयोग हुआ.है जैसे :

आंतरिक - domestic/internal

औद्योगिक - industrial

औपचारिक - formal

अकादमिक - academic

पारिश्रमिक - remuniration आदि ।

"इक" प्रत्यय की एक विशेषता यह है कि जब भी यह शब्द में जुडकर प्रयोग में आता है तो इसकी ध्वनि में परिवर्तन होता है जैसे :

अंतर+इक = अंतरिक होना चाहिए । परन्तु यहाँ पर आंतरिक है । यहाँ पर "इक" प्रत्यय जोडने से मूल शब्द के प्रथम स्वर में परिवर्तन हैं । यहाँ यह भी देखा जा सकता हैं कि मूल शब्द का प्रथम स्वर में जो परिवर्तिन है वह दीर्घ व गुण रूप में होता हैं । यह संस्कृत तत्सम शब्दों में ही घटित

होता है । "इक" संस्कृत भाषा का प्रत्यय है और यह संपूर्ण भाषा में किसी भी शब्द के साथ जुडता है तब यह ध्वनि में और व्याकरिणक नियमों में पूर्णरूप से बदलाव लाता है । उदाहरण आंतरिक, औपचारिक, औद्योगिक और पारिश्रमिक । जब यही रूपिम भाषा में स्वीकृत विदेशी शब्दों के साथ जुडता हैं, संस्कृत नियम का उलंघन होता हैं जैसे academy अकादमिक किन्तु यहाँ स्पष्ट है कि "इक" एक ऐसा उत्पादक रूपिम है । जिसे अनेक क्षेत्रों में विदेशी शब्दों के साथ भी जोडा जा सकता है । यहाँ एक और शब्द ले सकते हैं

अंत: क्षेत्रिय = inter regional

अंत: + क्षेत्र + ईय

अनिर्धारणीय = non assessable

अ + निर्धारण + ईय

एकपक्षीय = arbitatry/unilateral

एक + पक्ष + ईय

द्विदेशिय = bilateral

द्वि + देश + ईय

एकाशखीय = unilateral

एक + शाख + ईय आदि ।

इन शब्दों में मूल शब्द के साथ-साथ प्रत्यय एवं उपसर्ग उपसर्गवत रूपिम भी है । "एक" तथा "द्वि" जैसे पूर्वसर्ग संख्या वाचक है यह स्वतंत्र शब्द होने के साथ-साथ पूर्वसर्ग का कार्य भी कर रहे है । इनमें "ईय" प्रत्यय जुडा हुआ है । "एकशाखीय" एवं "एकपक्षीय" दोनों विभिन्न शब्द है परन्तु इनका अर्थ "unilateral" एक ही है । ऐसे शब्दों के होने से कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पडता है जैसे "शाखा" का अर्थ "branch" के संदर्भ में होता है और "पक्ष" का अर्थ "साथ" देना होता है परन्तु यहाँ पर दोनों के लिए "unilateral" का प्रयोग किया गया है । इस तरह के शब्दों के चयन में कठिनाई होती है ऐसे शब्द उत्पादकता के क्षेत्र में ज्यादा नहीं चल सकते परन्तु "ईय" रूपिम जो है वह उत्पादक है ।

"अंतरक्षेत्रिय" शब्द में भी जो "अंत:" उपसर्ग वह "inter" के अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है इसी उपसर्ग का प्रयोग करते हुए प्रशासनिक शब्दावली के संदर्भ में अंतर, अंत: और अंतत: आदि उपसर्गों को देखे थे और यह भी चर्चित किया था कि इनका अर्थ किसी भी क्षेत्र एवं विषय में एक ही रहता है इस प्रकार से यहाँ बैंकिंग शब्दावली के संदर्भ में भी इसका अर्थ उसी प्रकार से है अर्थात "अत:" जैसे शब्द भाषा के दृष्टि में उत्पादकता की कोटी में आते है ।

अंत में यह कह सकते है कि बैंकिंग शब्दावली के अंतर्गत जो भी शब्द देखे गये है उन सभी शब्दों को उत्पाद बनाया जा सकता है और व्याकरणिक वर्गों को भी बदला जा सकता है परन्तु यह कार्य करने के लिए हमे पहले कुछ नियमों की स्थापना करनी होगी तभी हम शब्दों को उत्पादक बना सकते है ।

5.5 **निष्कर्ष** : यहाँ पर वनस्पति विज्ञान में, प्रशासनिक शब्दावली में तथा बैंकिंग शब्दावली में यह समानता देखी है कि इन क्षेत्रों के अंतर्गत जो भी पारिभाषिक शब्द है यह पूरे के पूरे पारिभाषिक शब्द सामान्य हिन्दी भाषा के भी शब्द है । इन्हीं सामान्य शब्दों में कभी उपसर्ग, कभी मध्यसर्ग और कभी प्रत्यय जोडकर उनका प्रयोग विषय के अनुकूल किया गया है । एक बात यह निश्चित है कि इन सामान्य शब्दों को संकल्पित करके इन्हें पारिभाषिक एवं तकनीकी बनाते है और इन्हीं पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दों को फिर से सामान्य भाषा के संदर्भ में ले आते है अर्थात जिस तरह मनुष्य का जीवन एक चक्र के समान है ठीक उसी तरह भाषा भी स्वयं एक चक्र है और इस चक्र की सामग्री उपसर्ग, मध्यसर्ग, प्रत्यय, रूप, शब्द, एवं अन्य व्याकरणिक अव्यय है जिसके नींव पर यह घुमता है ।

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द	उपसर्ग
nonnegotiable	- अपरक्राम्य	- अ
supercouductivity	- अतिचालकता	- अति
super tax	- अधिकर	- अधि
unproductive	- अन्उत्पादक	- अन्
inadvertently	- अनजाने	- अन

donated	- अनुदत्त	- अनु
inter office	- अंतर कार्यालय	- अंतर
wrong	- अपकार	- अप
agency	- अभिकरण	- अभि
halt	- अवस्थान	- अव
proceeds	- आगम	- आ
earmark	- उद्दिष्ट	- उ
satellite	- उपग्रह	- उप
maldistribution	- कुवितरण	- कु
rare	- दुर्लभ	- दुः
reject	- नामंजूर	- ना
deposit	- निक्षेप	- नि
free	- निःशुल्क	- नि
later	- परवर्ती	- पर
calculation	- परिकलन	- परि
case	- प्रकरण	- प्र
unfavourable	- प्रतिकूल	- प्रति
alternative	- विकल्प	- वि
plant	- संयंत्र	- सं
block	- समुच्चयित	- सम्
gross	- सकल	- स
facilitate	- सुकर	- सु

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द	प्रत्यय
tabulation	- सारणीयन	- अन
establishment	- स्थापना	- ना
loading	- उतराई	- आई
earning	- कमाऊ	- आऊ
factual	- तथ्यात्मक	- आत्मक
disposal	- निपटान	- आन

family	- घराना	- आना
dismissal	- प्रदच्युति	- इ
parttime	- अंशकालिक	- ईक
preamble	- उद्देश्यिकता	- ना
daily	- दैनिक	- इकी
market	- अंकित	- इत
counter	- गणित्र	- इत्र
last	- अंतिम	- इम
fogmen	- कुहासिया	- इया
junior	- कनिष्ठ	- इष्ठ
regressive	- अवरोही	- ई
renewable	- नवीकरणीय	- ईय
reduction	- कटौती	- औती
registration	- पंजीकरण	- करण
draftsman	- प्रारूपकार	- कार
acting	- कार्यकारी	- कारी
maximum	- अधिकतम	- तम
higher	- उच्चतर	- तर
excees	- अधिकता	- ता
centerwise	- केंद्रवार	- वार
neutral	- तटस्थ	- स्थ

षष्ट अध्याय

विशेषण संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम

षष्ठ अध्याय

विशेषण संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम

6.0 प्रस्तावना

शब्द भाषा की कोशीय इकाई है । कोशीय इकाई के रूप में अर्थ की प्रतीती को अपने में समेट कर रखता है । ऐसे शब्द वाक्य में जब प्रयुक्त होते है तब उसे पद कहते है । पद के रूप में वह अपने साथ लिंग, वचन, कारक, काल आदि में से आवश्यक तत्वों को साथ लेकर चलता है । ऐसी ही स्थिति में शब्द वाक्य में सभी प्रकार की संप्रेषणीय अर्थों एवं तथ्यों को प्रसारित कर सकता है ।

पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दों की संकल्पना करके पारिभाषिक शब्दों को और भी स्पष्ट बनाने के लिए उनको सरल व उनके क्षेत्र को और भी विस्तृत बनाने के लिए उनके शाब्दिक रूप को सभी वर्गों में देखा जाना चाहिए । अर्थात् मूल में एक पारिभाषिक शब्द है, इस पारिभाषिक शब्द को संज्ञा, विशेषण और क्रिया रूपों में भी देखा जाता है । यह संरचना अनेक रूपिमों की सम्मिलित और व्यवस्थित संरचना होती है । इसी के आधार पर शब्द को व्याकरण की व्यवस्था से बाँधा जाता है । इस अध्याय में जो वनस्पति विज्ञान, प्रशासनिक शब्दावली व बैंकिंग शब्दावली के संदर्भ में पारिभाषिक शब्द है उन शब्दों का पारिभाषिक विशेषण रूप विचारणीय है और कुछ शब्दों को पारिभाषिक विशेषण शब्द बनाने की प्रक्रिया पर विचार करना भी इस अध्याय का लक्ष रहा है ।

पारिभाषिक शब्दों को पारिभाषिक विशेषण शब्द बनाने के पीछे यह उद्देश्य है कि जिस तरह से सामान्य भाषा सरल व लचीली है उसी तरह से पारिभाषिक भाषा भी सरल व लचीली बन सके, सभी को आसानी से समझ में आ सके तथा प्रयोग और प्रयोजन में किसी भी दृष्टि से कठिनाई उत्पन्न नहीं कर सके । इस प्रकार से पारिभाषिक शब्द भी अच्छी तरह से मंझें जाएगें और प्रयोग के क्षेत्र में भी उत्पादक बन सके ।

6.1 सामान्य भाषा में संज्ञा का विशेषण में रूपान्तरण

भाषा में संज्ञा व क्रिया शब्दों में अंतरण रूपान्तरण होता है । व्याकरण में जो संज्ञा है वह मूल में है और विशेषण, क्रिया आदि इसके स्थान पर कार्य करते है । कोई संज्ञा की विशेषता बताता है, कोई कार्य करता है और इन्हीं तत्वों को ध्यान में रखकर पारिभाषिक शब्दावली में किसी एक क्षेत्र को केन्द्र में रखकर उस क्षेत्र के पारिभाषिक शब्दों को संज्ञा से संबंधित विशेषण और क्रिया रूप में देखने और बनाने का प्रयत्न किया गया है ।

हिन्दी में जितने भी संज्ञा से विशेषण और विशेषण से क्रिया, विशेषण से संज्ञा और क्रिया से विशेषण और क्रिया से संज्ञा और संज्ञा से क्रिया बनानेवाले रूपिम है उन सभी रूपिमों को व्याकरणिक कोटियों पर देखा गया है । मुख्यतः प्रत्यय रूपिम वर्ग परिवर्तन में कार्य करते है वे रूपिम है "पन", "ता", "इक", "इत", "इय", "ना", "न", "ईत", "ईय", "का", "इ", "का", "त्व", "य", "इमा", "आ", "आई", "आन", "हठ", "आस", "आयत", "इख", "नी", "गी", "तम", "इन","आईन", "आनी", "इंका", "वाला", "हारा", "गर", "दार" आदि । मुख्य रूप से उपर्युक्त सभी रूपिम विभिन्न वर्ग परिवर्तन का कार्य करते है ।

विशेषण शब्दों का निर्माण निम्न लिखित निर्माणक तत्वों से होता है जैसे :–

1. गुणवाचक विशेषण निर्माणक
2. कृतूवाचक विशेषण निर्माणक और
3. क्रियार्थी विशेषण निर्माणक

1. गुणवाचक विशेषण निर्माणक : यह रूपिम विभिन्न गुणवाचक विशेषणों का निर्माण करते है ये रूपिम है आऊ, अनीय, वना, इया, वां, उआ, त, इत, य, ई

2. कृतूवाचक विशेषण निर्माणक रूपिम : ये रूपिम विभिन्न कृतूवाचक विशेषणों का निर्माण करते है और किसी भी प्राणी को कर्तव्य का बोध दिलाते हैं । ये रूपिम विशेषण शब्द कृत् वाची होने के

कारण संज्ञावत् भी प्रयुक्त होते हैं । जैसे आक, आका, आडी, आलू, इयल, इया, आऊ, एरा, ऐत, ऐया, ओड़, ओड़ा, ओरा, क, अक्कड, ना/नी, वाला, वेया, सार, हार, हारा ।

3. **क्रियार्थी विशेषण निर्माण्क रूपिम :** ये रूपिम क्रिया व्यापार का बोध कराने के साथ-साथ विशेषण का काम भी करते हैं । इन में शब्द निर्माण की प्रक्रिया शब्द स्वर की न होकर पदबन्धि स्तर की होती है । यह दो वर्गों में विभक्त हो सकते है

1. **वर्तमान कालिक :** - यह रूपिम "ता","ती", "ते" असमापक क्रिया के रूप में विशेषण का कार्य करते है ।

2. **भूतकालिक :** - यह रूपिम "आ", "ई", "ऐ" भूतकालिक असमापक क्रिया के रूप में विशेषण का कार्य करते है ।

उपर्युक्त वर्ग के रूपिम संस्कृत भाषा से, हिन्दी भाषा से और विदेशी भाषा से लिए गये होते है । ये सभी रूपिम विशेषण द्योतक है और कभी संज्ञा रूपों को, क्रिया रूपों को और विशेषण रूपों को विशेषण में परिवर्तित करते है ।

उपर्युक्त रूपिमों में से कुछ रूपिम ऐसे है जो पारिभाषिक शब्दावली में जुडकर पारिभाषिक शब्दों को उत्पादक बनाते है । वनस्पति विज्ञान के, प्रशासनिक शब्दावली के और बैंकिंग शब्दावली के कुछ ऐसे ही शब्द संज्ञा के और विशेषण के मूल में है और इन रूपों को विशेषणार्थ बनाना है ।

6.2 पारिभाषिक शब्दावली

नीचे पारिभाषिक शब्दों की सूची है ।

वनस्पति विज्ञान शब्दावली

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द
Abculture	अपसंमवर्धन
Abies	बलूत
Abietine	बलूती
Abiotic	जिवेतर
Ablast	अकोरक
Abrus	एब्रस
Abscess	विद्रधी
Absoption	अवशोषण
Foliation	पत्रण
Foliferous	पर्णधारी
Folioid	पर्णाभ
Foliola	पर्णक
Follicle	फॉलिक्ल
Folliform	पर्णरूप
Semiaquatic	अंशजलीय
Semiarid	अर्धशुष्क
Semicell	कोशीकार्थ कोशीकार्ध
Semihastatus	अर्ध भालाकार
Seminiferous	बीजधर

Pericarp	फलभित्ति
Pericarpic	परिफलक्षेत्र
Pericycle	परिरंभ
Periderm	परित्तवक्
Perigone	परिदलपुंज
Perinium	बिजाणु परिभित्ति
Annular	वलयाकार
Annulus	वलय
Annulose	वलयित
Annulet	वलयिका
Fruit	फल
Fructiparous	फलधारी
Fructification	फलन
Fructiferous	फलद
Carotenoid	काँर्टीनायड
Cartenols	कारोटीनोल्स/पर्णपीताभ
Carotene	पर्णपीतक

प्रशासनिक शब्दावली

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द
Re-purchase	पुनः क्रय
Resume	पुनः आरंभ करना

Re-entry	पुनः प्रवेश
Re-gain	पुनः प्राप्त करना
Opinion	मत
Voter	मतदाता
Votable	मतदेय्
Un-compromising	मताग्रही
Intoxication	मतता
Consensus	मतैकय
Calculating	परिकलित्र
Calculation	परिकलन
Accession	परिग्रहण
Circulating	परिचल
Acquaitance	परिचित
Gratification	परितोषण
Premises	परिसर
Transfer	अंतरण
Confidential	अंतरंग
With in	अंतर्गत
In-land	अंतर्देशिय
Quality	गुणता
Quality	गुणवत्ता

Qualitative	गुणात्मक
Current	प्रचलित
Usage	प्रचलन
Operation	प्रचालन
Union	संघीय
Comporsition	संघठन
Constituent	संघठक

बैंकिंग शब्दावली

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द
Compilation	संकलन
Transit	संक्रमण
Computation	संघगणन
Mobilisation	संग्रहण
Cumulative	संचयी
Amending	संषोधी
Disbussement	संवित्रण
Presumed	प्रकल्पित
Progress	प्रगति
Circulating	प्रचल
Grant	प्रदान
Category	प्रवर्ग

Apparatus	उपकरण
Accruel	उपचय
Undertaking	उपक्रम
Accued	उपचित
Sub-office	उप कार्यालय
Consumption	उपभोध

Unloading	उतराई
Dearness	महंगाई
Foundery	ढलाई
Encashment	भुनाई
Loading	लदाई

Domestic	आंतरिक
Industrial	औद्योगिक
Formal	औपचारिक
Academic	अकादमिक
Remuneration	पारिश्रमिक

उपर्युक्त सभी शब्द तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्द है । ये सभी शब्द वनस्पति विज्ञान, प्रशासनिक शब्दावली और बैंकिंग शब्दावली से लिए गए है । ये शब्द अंग्रेजी और हिन्दी में है इनके विशेषण रूप बनाए जा सकते हैं इनके विशेषण रूप बनाए जाने में किन-किन प्रत्ययों का योगदान रहेगा/रहा है, इसका हमें गहराई से और निर्णायक ढंग से विश्लेषित करना है । नीचे उपर्युक्त शब्दों के विशेषण रूपों को देखा जा सकता है ।

6.3 वनस्पति विज्ञान :

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द	विशेषण रूप	प्रत्यय
Abies	बलूत	बलूतित	- इत
Absorption	अवशोषण	अवशोषणीय	- इय

जैसे पौधे के तरूण मूल ही अवशोषणीय रूप ही जल सीचंन का कार्य करते है ।

Foliation	पंत्रण	पत्राणत	- त
Foliate	पत्रणुंआ	पत्राणुंआ	- ऊआ
Foliating	पत्राणितित	पत्राणितित	- इत
Folliform	पर्णरूप	पर्णारूपी	- ई
Follicle	फॉलिक्ल	पर्णावृत	- वृत
Pericarp	फलभित्ति	परिफलभित्ति	- त
Perinium	बिजाणुपरिभिति	परिबिजाणुभितित	- त

"त" व "ईत" दो प्रत्यय हैं, परन्तु "ई" पहले से शब्द में हैं, इसी कारण वश वहाँ - "त" प्रत्यय जुड रहा हैं, ये परिपूरक वितरण में आ सकते है ।

Annulus	वलय	वलयाक्	- आक्
Fructification	फलद	फलदेय	- एय
Carotene	पर्णापीतक	पर्णापीतकीय	- ईय
Carotenols	कारोटीनोल्स	पर्णपीतभा	- आ
Carotenoid	कॉर्टीनायड	पर्णपीतन	- न

6.4 प्रशासनीक शब्दावली

Intoxication	मतत्ता	मततीय	- ईय

Acquaitance	परिचित	परिचितवां	- वां
Quality	गुणता	गुणीय	- ईय
Qualitative	गुणात्मक	गुणीयता	- ईय, ता
Usage	प्रचलन	प्रचलनीय	- ईय
Constituent	संघठन	संघठकीय	- ईय

6.5 बैंकिंग शब्दावली

Presumed	प्रकलपित	प्रकलपियु	- ऊ
Circulating	प्रचल	प्रचलीन	- इन
Progress	प्रगति	प्रगतित्व	- त्व
Cumulative	संचयी	संचायु	- आ, यु
Consumption	उपभोध	उपभोधन	- न

उपर्युक्त शब्दों को विशेषण रूप दिया गया है । ये विशेषण रूप विभिन्न वर्गों में विशेषण का कार्य करते है । ये विशेषण रूप तकनीकी एवं पारिभाषिक विशेषण रूप है ।

वनस्पति विज्ञान : प्रस्तुत विषय में जो पारिभाषिक और तकनीकी शब्द थे उनमें से कुछ रूपों को लेकर उनके विशेषण रूप बनाए जा सकते है, जैसे, बलूत शब्द बलूतित बनता है । यह बलूतित रूप वनस्पति विज्ञान के अंतर्गत नहीं है । बलूत के लगातार प्रचलन के संदर्भ में बलूतित शब्द रूप का भी प्रचलन किया जा सकता है, उसी प्रकार से अवशोषण शब्द को अवशोषणीय विशेषण रूप दिया जा सकता है । जो जल सींचन का कार्य करता है । Foliation के लिए "पत्राणत", Foliate के लिए "पत्रणुआ", Foliating के लिए "पत्रणितित" विशेषण रूप दिए जा सकते है जिनमें मूल एक ही है । परन्तु विभिन्न रूपों के लिए विभिन्न रूपों का प्रयोग किया जा सकता है जैसे "tion" के लिए "त", "ate" के लिए "ऊआ" और "ing" के लिए "इतत" प्रत्यय जोडे जा सकते है ।

इन प्रत्यय रूपों को जोड़ने के पिछे एक लक्ष्य जो उभर कर आता है वह यह है कि जिस तरह सामान्य भाषा में क्रम और लयात्मकता बनी रहती है ठीक उसी लयात्मकता को पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावली में लाया जा सकता हैं, यह अपेक्षणिय भी है । यहाँ पर "Follicle" का हिन्दी में लिप्यंतरण किया गया परन्तु ऊपर के क्रम को बनाए रखने के लिए यहाँ पर "पर्णावृत" शब्द रूप Follicle को दिया जा सकता है । "वृत" संस्कृत मूलक प्रत्यय है और केवल इनकी श्रृंखला बनाने के लिए यह प्रयास किया जा सकता है । उसी तरह से "Pericarp" के लिए "फलभित्ति" हिन्दी शब्द है उसे 'परिफलभित्तित' विशेषण रूप दिया जा सकता है । यह शब्द रूप वनस्पति विज्ञान के अंतर्गत चल सकता है । उसी तरह "Perinium" को "परिबिजाणुभित्तित" रूप दिया जा सकता है, यह भी उस क्षेत्र में चल सकता है । इसी प्रकार और कुछ शब्दों को लेकर उनके विशेषण रूप बनाए जा सकते है और ये रूप भाषा में क्रम, लयात्मकता और अर्थभेदक तत्वों को उत्पन्न कर सकते हैं । यह केवल एक प्रयत्न है । उसी तरह से प्रशासनिक शब्दावली में भी ऐसे ही कुछ रूपिमों का प्रयोग कर उनके भी विशेषण रूप बनाए जा सकते है जैसे "Votable" के लिए "मतकार", "Intoxication" के लिए "मततीय", "Consensus" के लिए "मतैक्यता" आदि । जिस तरह से सामान्य हिन्दी पर्यायवाची शब्द होते है उसी प्रकार से पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दों के संदर्भ में भी विशेषण रूपों के द्वारा यह प्रयत्न किया जा सकता है जैसे "within" के लिए "अंतर्गत" शब्द है परन्तु इसे "अंतरकारित" बनाया जा सकता है उसी प्रकार "गुणता" के लिए "गुणीय" तथा "गुणात्मक" के लिए "गुणीयता" अर्थात इन सबके पीछे तात्पर्य यही है कि जिस तरह से सामान्य भाषा में शब्द को एक वर्ग से दूसरे वर्ग में लाने के लिए नियमों का पालन किया जाता है और व्यवस्था बनी हुई है, वही प्रयास और उसी व्यवस्था पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावली के संदर्भ में भी लायी जा सकती है । तभी भाषा में ज्ञान विज्ञान का साहित्य सुलभ रूप से अवतरित किया जा सकेगा । इस प्रकार विशेषण को निष्पन करने में सहायक उत्पादक रूपीमों में इत, इय, ईय, त, ऊआ, आर, ई, वृत, आक्, औक, एय, का, न, कार, ता, वां, आर, त्च, ऊ, आ, और न प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है । इन प्रत्ययों में से इत, ईय, त, ई, इय, ईत, और ता प्रत्यय अधिक मात्रा में है अर्थात इन प्रत्ययों के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि ये प्रत्यय अधिक उत्पादक हैं और विशेषण रूपिम प्रत्यय ही हैं ।

6.6 <u>अंग्रेजी में विशेषण</u> : अंग्रेजी भाषा में विशेषण को उनके कार्य के अनुसार निम्न लिखित वर्गों में विभाजित किया गया है जैसे : –

1) Adjectives of quality इसमें किसी भी संज्ञा का गुण बताता है जैसे He is an honest man

2) Adjectives of quantity इसके अंतर्गत संज्ञा के quantity को बताता है जैसे, I ate some rice.

3) Adjectives of numbers इसके अंतर्गत विशेषण की संख्या बताता है जैसे The hands have five finguers.

ये adjectives of numbers तीन प्रकार के होते है जैसे : –

a) Definite numeral adjectives : which denotes an exact number जैसे, charminar is a four minarate monument.

b) Indefinite numeral adjectives : which doesnt denote the exact numbers eg: any, many, few, some, certain, several etc. eg: few boys are playing.

c) Distributive numeral adjectives : which refers to each one of a number eg: each, every, either, neither, eg: every word of this sentence is false.

d) Demonstrative adjectives : it points out which person or thing is meant. Eg: this boy is stronger than Hari eg: this, that, those, these, there, theirs etc.

e) Interogative adjectives : in which words like what, which, whose are used. usually these words are used with nouns to ask questions eg: whose book is this, where shall we go etc.

f) Emphasising adjectives : in this words like own and very are used eg: I saw it with my own eyes.

g) Enclaimatory adjectives : in which the word what is used eg: what fanny, what silly.

उपर्युक्त विवेचन में अंग्रेजी के अंतर्गत विशेषण कई संदर्भों में देखे गए है । नीचे हिन्दी के अंतर्गत विशेषण किस रूप में और कितने प्रकार प्रस्तुत होते हैं उस पर भी प्रकाश डाला गया हैं ।

गुणवाचक संज्ञा (Adjective of quality) : ये विशेषण अपने विशेष्यों के अग्रलिखित वर्गों के गुणावगुण का बोध कराते है । इस विशेषण के अंतर्गत निम्न लिखित तत्व आते है जैसे : –

गुण - मीठा तरबुज

आकार - लम्बा पेट

रंग - लाल वस्त्र

दशा - सुखे पत्ते

काल - प्राचीन कथा

स्थान - बनारसी साडी

स्वभाव - दृष्ट अधीकरी

शारीरीक स्वास्थ्य लक्षण - जवान विधवा

मानसीक स्वास्थ्य - पागल औरत

दिशा - पश्चिमी देश

तापमान - गर्म चाय

भार - भारी संदूक

धरातल - ऊंचा पहाड

गति - मंद चाल

प्रतीति - अटपटा स्वाद

स्पर्श - मूलायम रोटी

वस्तुगत मूल्याकरण - हानिकारक दवाई

स्वद - तीखी मीर्च

गंद - सौंधी खुशबू

दृश्य - मलीन आंचल

अंग्रेजी में जो Adjective of quantity है वह उपर्युक्त गुणवाचक विशेषण के अंतर्गत 20 तत्वों में इनका मेल हो गया है जैसे दशा, गुण, भार आदि ।

संख्यावाची विशेषण (Adjective of numbers) : हिन्दी भाषा के अंतर्गत प्रायः ये विशेषण जातिवाचक संज्ञा का बोध कराते है । इस संख्या शब्द अंक गणितीय संख्या, वस्तु मात्रा और उनका क्रम व्यक्त करते है । संख्या बोधक विशेषण दो प्रकार के होते है ।

1. निश्चित संख्यावाचक (Definite numerel adjective)
2. अनिश्चित संख्यावाचक (Indefinite numerel adjective)

1. **निश्चित संख्यावाचक** : यह छः प्रकार के होते है ।

a) **गणनावाची** : इसमें एक जैसे वस्तुओं का अमूर्थ संख्या की अवधारणा को व्यक्त करते है जैसे एक, दो, तीन ...... दस । हिन्दी की सभी गनतीया इसके अंतर्गत आती है ।

b) **खण्ड वाची** : यह अपूर्ण संसख्याओं की सूचना देते है जैसे एक चौथाई (1/4) सवा पाव (1 1/4) देड़ (1 1/2) आदि ।

c) **क्रम वाची** : इसके अंतर्गत वस्तुओं एवं व्यक्तियों की गिनती करते समय उनका क्रमः निर्धारित करते है जैसे पहला आदमी, दूसरा आदमी आदि ।

d) **गुण वाची** : वस्तु आदि की आवृति या गुणा की सूचना देते है जैसे दूगना, चौगुना आदि ।

e) **समुदाय वाची** : इसके अंतर्गत वस्तुओं की संख्या को एक समूह के रूप में प्रस्तुत करते है जैसे दोनों, तीनो, चारो आदि ।

f) **प्रत्यय वाची** : इसके अंतर्गत वस्तुओं के कतीथ संख्या के एक समूह को प्रस्तुत करता है जैसे प्रति दो व्यक्तियों को, हर दो बच्चों को ।

2. **अनिश्चित संख्यावाचक** : यह विशेषण छः प्रकार के होते जैसे : –

a) **लगभग वाची** : जिसके अंतर्गत लगभग चार, करीब, तकरीबन, कोई पाँच सौ आदि उदाः तकरीबन हजार लोगों के आने की संभावना है ।

b) **<u>बहुवाची</u>** : इस विशेषण के अंतर्गत संख्या के बहुतत्व का बोधक होता है जैसे - बहु - बहुत - बहुतेरे -अनेक, कई, दर्जन, दसीयों, बीसीयों, अनेकानेक, अधिक आदि ।

c) **<u>अल्पवाची</u>** : जिसमें अल्प तत्व के सूचक होते है जैसे अल्प, कम, थोडा, कुछ आदि । (यह अंग्रेजी में जो Adjective of quantity था उसके अंतर्गत आते है) जैसे मैने थोडा चावल खाया ।

d) **अनुमान वाची** : जैसे संख्या के अंदाजा या अनुमान के सूचक है उदाः एक, दो, तीन, चार, सौ-पचास, हजार - पाँच सौ आदि ।

e) **<u>पर्याप्त वाची</u>** : व्यक्ति आदि की पर्याप्तता का सूचक है । जैसे संख्या, परिणाम, काफी, पर्याप्त आदि ।

f) **<u>इतर वाची</u>** : यह विशेषण वर्गीय अनिश्चीत अनुपस्थीत सदस्यों की सूचना देते है । जैसे अन्य और दूसरे लोगा ।

अंग्रेजी विशेषणों के अंतर्गत संज्ञा से विशेषण और क्रिया से विशेषण शब्दों के अंतर्गत परिवर्तन हुआ है ।

Noun	Adjective	Suffix
boy	boyish	- ish
care	careful	- ful
trouble	troublesome	- some
shame	shameless	- less
gift	gifted	- ed
man	manly	- ly
courage	courageous	- ous
pardon	pardonable	- able
dirt	dirty	- y
rich	richest	- est

beauty	beautiful	- ful

Verb	Adjective	Suffix
tire	tireless	- less
talk	talkative	- ative
move	movable	- able
cease	ceasless	- less
run	runner	- ner
sour	sourless	- less

उपर्युक्त उदाहरणों में विभिन्न प्रकार के प्रत्यययों को देखा गया जो संज्ञा से विशेषण और क्रिया से विशेषण बनने का कार्य कर रहे है इसमें से ful, est, ed, ly, less, ish अधिक प्रचलित और उत्पादक रूपिम है । उसी तरह से अगर हिन्दी के अंतर्गत संज्ञा से विशेषण और क्रिया से विशेषण बनाने वाले निम्न लिखित तत्वों को देखा जा सकते है ।

संज्ञा	विशेषण	प्रत्यय
बच्चा	बचपन	- पन
सुंदर	सुंदरता	- ता
उच्च	उच्चतर	- तर
ताज	ताजगी	- ई
चाँद	चाँदनी	- ई
खाट	खटिया	- इया
पहाड	पहाडी	- ई
सोने	सुनार	- आर
गंध	गंधी	- ई

दूध	दूधवाला	- वाला
मिठाई	मिठाईवाला	- वाला आदि
क्रिया	**विशेषण**	**प्रत्यय**
बिकना	बिकाऊ	- आऊ
डर	डरावना	- अवना
पड	पड्उआ	- ऊआ
कथन	कथीत	- ईत
निंदा	निंदय	- य

विशेषणों के अंतर्गत विभिन्न तधीथ प्रत्यययों का उनके प्रकार्य के आधार पर उन्हें देखा जा सकता है जैसे : –

शिष्य	शिष्या	- आ
कुत्ता	कुत्तिया	- इया
लेखक	लेखिका	- का
ठाकुर	ठकुराइन	- आइन
चौधरी	चौधरानी	- आनी

उपर्युक्त उदाहरणों में लिंग एवं कर्म और कर्ता को देखा गया है । कुछ विशेषण ऐसे भी होते है जो सभी वर्गों में जुडकर अपना रूप परिवर्तन करते है ।

6.7 निष्कर्ष

मुख्यतः यह देखा गया है कि जहाँ तक अंग्रेजी विशेषणों की बात है जिसमें est, ful, ed, ly, less, ish आदि विशेषण रूपि में प्रत्यय बनाने का कार्य करते है उसी तरह हिन्दी में इत, ता, ईय, त, इ आदि विशेषण ध्योतक है । जैसे वनस्पति में, प्रशासनिक एवं बैंकिंग शब्दवली के अंतर्गत

जहाँ-जहाँ भी "tion" का प्रयोग हुआ वहाँ पर "ईय" प्रत्यय का प्रयोग हो सकताा है और "ies" के स्थान पर "त" प्रत्यय का प्रयोग हो सकता है और कहीं-कहीं पर संस्कृत प्रत्यययों का भी प्रयोग किया जा सकता है । लेकिन सबको व्यवस्थित करना और एक रूपात्मक बनाना समचीन होगा ।

friend	friendly	frendship
good	better	best
अच्छा	अच्छाई	अच्छापन
मित्र	मैत्री	मित्रता

उपर्युक्त शब्द में Friend/दोस्त मूल शब्द इनका वर्ग ly/-ई और ship/-आना प्रत्यय के जुडने से परिवर्तित हुआ है । उसी प्रकार good/अच्छा मूल शब्द है उसमें er/-आई और est/पन प्रत्यय जुडने से वर्ग परिबर्तन हुआ है । अर्थात जहाँ-जहाँ पर भी "ly" प्रत्यय जुड रहा है वहाँ पर "ई" प्रत्यय आना जहाँ-जहाँ पर भी "est" प्रत्यय जुड रहा है वहाँ पर "आई" प्रत्यय आना यह भाषा के अंतर्गत होता है क्योंकि अंग्रेजी भाषा में positive, comparative और superlative तीन प्रकार के comparetive degrees है तब की हिन्दी के अंतर्गत भी यही तुलनात्मक स्तर पाये जाते है । जैसे उच्च - उच्चतर - उच्चतम । भाषा के अंतर्गत ही यह एक अपनी संरचना हैं, जिसके द्वारा वांछित रूप में अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया जा सकता है । उपर्युक्त व्यवस्था को सहज रूप में विशेषण संरचना व्यवस्था में विस्तृत रूप में लागू किया जा सकता हैं, ऐसी स्थिति में प्रयुक्त होनेवाले सभी बद्ध रूपिम अधिक उर्वर एवं उत्पादक बन सकते हैं ।

सप्तम् अध्याय

क्रिया संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम

सप्तम अध्याय

क्रिया संबंधी उत्पादक रूपिम : प्रयोजनमूलक आयाम

7.0 प्रस्तावना

क्रिया वाक्य-रचना की दृष्टि से वाक्य का अनिवार्य घटक हैं । क्रिया पद रचना वह शब्द समूह हैं जिससे किसी कार्य - व्यापार के होने या करने की सूचना मिलती हैं । प्रत्येक क्रिया के मूल रूप को "धातु" कहते हैं । इस धातु में "ना" प्रत्यय जोडने से क्रिया का सामान्य अर्थ बोध हाता हैं । भाषा में क्रियाओं का निर्माण पांच प्रकार से किया जाता है ।

1) धातु से क्रिया निर्माण
2) धातु -इतर शब्दों से क्रिया निर्माण
3) क्रिया -इतर शब्द+क्रिया संयोग से क्रिया निर्माण
4) क्रिया+क्रिया के योग से क्रिया निर्माण
5) क्रिया -इतर शब्द+क्रिया अनुक्रय से क्रिया निर्माण

भाषा में क्रिया रूपों का सही विश्लेषण केवल उनकी ध्वन्यात्मक तथा अर्थपरक दृष्टि से नहीं हो सकता । इसके लिए उनके प्रकार्य तथा प्रयोजन को भी ध्यान में रखना होगा । क्रिया भेद के सात आधार है : –

1) क्रिया -व्यापार का परिणाम
2) क्रिया व्यापार का सम्पादन
3) वक्ता का अभिप्रेत अर्थ
4) कर्म -पूर्ति
5) कर्म - संख्या
6) कार्य - व्यापार प्रधानता
7) तथ्यात्मकता आदि

परन्तु पारिभाषिक व तकनीकी शब्द के क्षेत्र में इन क्रिया रूपों व क्रिया के आधारों का वर्णन आवश्यक नहीं है । प्रस्तुत अध्याय में यह देखना हैं कि किस तरह से ये पारिभाषिक शब्द जब

पारिभाषिक क्रिया रूप धारण करते हैं, उनकी उत्पादकता की सीमा क्या हो सकती हैं । इतना तो निश्चित है कि जब भी "ना" रूपिम शब्द में जुडता है तब शब्द क्रिया का कार्य करता हैं, अर्थात कहने का यह है कि "ना" रूपिम क्रिया शब्द रूपों का बोधक हैं ।

इस अध्याय में वनस्पति, प्रशासनिम व बैंकिंग के संदर्भ में जो भी तकनीकी व पारिभाषिक शब्द हैं, उन में अगर "ना" रूपिम को जोडेगें तो उन की क्रिया बोधक शब्द निष्पन्न होने की उत्पादकता किस सीमा तक आगे बढ़ सकती हैं, ये पारिभाषिक शब्द किस तरह से इस क्रिया बोधक "न" रूपिम से जुडें रहेंगे, क्या इन की उत्पपदकता सार्थक हो सकती हैं या नहीं इन्हीं आधारों को ध्यान में रखकर इन पारिभाषिक शब्दों को पारिभाषिक क्रिया शब्द बनने की स्थिति पर विचार किया गया है । क्रिया बोधक शब्द के निशपन होने पर अन्य संरचना तत्व जैसे लिंग, वचन, काल, सहायक क्रिया आदि सभ हिन्दी क्रिया संरचना प्रक्रिया से जड जाते है उसी प्रकार संपन्न हो जायेंगे । इसीलिए इस दिशा में विवेचन करना प्रस्तुत अध्याय का नहीं है । यहाँ पर यह देखना है कि जो पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्द हैं क्या वे क्रिया बोधक हो सकते हैं या नहीं । और अगर ये हो सकते हैं तो क्या ये क्रिया के नियमों का पालन करेंगे या नहीं ।

7.1 **क्रिया तत्वों के नियम** : भाषा के अंतर्गत क्रियाएँ दो प्रकार की हैं सकर्मक और अकर्मक ।

सकर्मक क्रिया : जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की आवश्यकता होती है और जिस क्रिया के कार्य व्यापार का परिणाम स्वयं क्रिया करनेवाले कर्ता पर न पडकर प्रत्यक्षतः कर्म पर पडता है उसे सकर्मक क्रिया कहते है जैसे खाना, पीना, भेजना, पढ़ाना, लिखाना आदि

उदाः अध्यापक छात्रों को पढ़ा रहा है

नीलिमा आम खा रही है

अकर्मक क्रिया : जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की आवश्यकता नहीं होती है अथवा वाक्य में जिस क्रिया के कार्य व्यापार का प्रभाव प्रत्यक्ष स्वयं क्रिया के कर्ता पर पडता है उसे अकर्मक क्रिया कहते है ।

उदा: भागना, भीगना, डरना, रोना आदि

पिताजी सो रहे हैं

पेड टूट गया है

क्रियाओं के अंतर्गत जहाँ पर अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रियाओं को देखा गया उसी कोटि में क्रिया का एक और रूप उभर कर आता जो प्रेरणार्थक क्रिया है ।

प्रेरणार्थक क्रिया : प्रेरणार्थक धातु का विकृत रूप है । मूल धातु के जिस विकृत रूप से यह बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य व्यापार न कर किसी दूसरे को कार्य करने पर प्रेरित करता हो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते है जैसे : –

सीखना	- सिखाना	- सिखवाना
बैठना	- बैठाना	- बिठवाना

राम टंकण सीखता है - इसमें सीखने का कार्य कर्ता स्वयं करता है ।

राम टंकण सिखाता है - यहाँ पर काम कोई और करता है और राम उसे सीखने की प्रेरणा देता है ।

मूल धातु से प्रेरणार्थक धातु बनाते समय कुछ ध्वनि विकार होते है जैसे निम्न लिखित उदाहरणों को देखा जा सकता है ।

खाना > खिलाना	-	आ > इ
पीटना > पिटाना	-	ई > इ
छुटना > छोडना	-	ऊ > ओ
लेटना > लिटाना	-	ए > इ

इस तरह से ध्वनि के साथ-साथ उच्चारण में भी बदलाव आता है । जहाँ तक क्रिया धातु में "ना" प्रत्यय जोड़ने की प्रक्रिया है और इसे कार्य के रूप में देखा गया है जहाँ पर मूल धातु रूप में

"ना" प्रत्यय जोड़ने से वह रूप तीनों कालो के संदर्भ में आना चाहिए जैसे "फिल्म" संज्ञा रूप "फिल्माना" क्रियार्थक रूप है और क्रियार्थक "फिल्माना" रूप क्रिया सभ्यता में यह रूप हिन्दी अन्य क्रिया रूप के समान प्रयोग में आता है । फिल्म अंग्रेजी शब्द है जिसका प्रयोग संज्ञा और दोनों रूपों में होता है इस शब्द को हिन्दी में उसी अर्थ में स्वीकार किया गया है, और दोनों रूपों में शब्द प्रचलित है, किया द्योतक रूप में जैसे : –

फिल्माऊंगा - भविष्य काल

फिल्माता हूँ - वर्तमान काल

फिल्माया गया है - भूत काल

इस तरह से यहाँ पर "फिल्म" से "फिल्माना" और इसके विभिन्न कालिक रूपों को देखा गया है और इसी नियम और व्यवस्था को पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दों के संदर्भ में करना होगा । तब ही ऐसे शब्द उत्पादकता की कोटि में आ सकते है । प्रेरणार्थक क्रियाओं के संदर्भ में मूल धातु और "ना" प्रत्यय जोडने की प्रक्रिया से शब्द में क्रिया का धातु रूप निष्पन्न होता है । यह पद्धति सभी में चलनी चाहिए । उसी तरह से जब संयुक्त क्रिया रूपों में संज्ञा को देखते है तो इसके अंतर्गत मूल शब्द में "करना" शब्द के योग से सभी सकर्मक क्रियाएँ शब्द संरचना की व्यवस्था में आगे बढ़ती है । विशेषण शब्द रूप के साथ करना जोड कर उसका क्रिया पदबंध रूप निश्न किया जाता हैं । ऐसे पदबंधों में जहाँ "करना" के योग से क्रिया पदबंध निष्पन्न होता हैं, वहाँ यह देखा जा सकता हैं कि ऐसे क्रिया शब्द सकर्मक क्रियाओं की कोटि में आ जाते हैं और अकर्मक क्रियाओं के अंतर्गत "होना" और "बनना" शब्द संज्ञा व विशेषण के साथ जब जुडता है यह भी क्रिया पदबंध संरचना के अंतर्गत अग्रसर होता है और यह अकर्मक क्रिया वर्ग में रखा जा सकता है ।

क्रिया के विभिन्न रूपों को तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली के अंतर्गत यह देखना होगा कि मूल धातु चाहे वह संज्ञा हो या विशेषण इनमें सकर्मक क्रिया एवं अकर्मक क्रिया को जोडकर इस पारिभाषिक शब्दावली को पारिभाषिक क्रिया रूप बनाने होगें । जिस तरह से सामान्य भाषा में मूल धातु में "करना" या "होना" क्रियार्थी रूपिमों को जोडकर उनके विभिन्न पदबंध रूपों को देखा जाता

है । ठीक उसी तरह के नियमों और व्यवस्थाओं को पारिभाषिक एवं तकनीकी भाषा के अंतर्गत लाना होगा ताकि यह भाषा के भी शब्द केवल पारिभाषिक न होकर व्याकरणिक वर्गों में इन्हें देखा जा सके । इन्हीं क्रियाई रूपी व्यवस्थाओं को वनस्पति विज्ञान प्रशासनिक शब्दावली और बैंकिंग शब्दावली पर लागू करना होगा और यह देखना होगा कि इस शब्दावली के शब्दों की सीमा कहाँ तक उत्पादक होंगीं ।

नीचे इन तीनों क्षेत्रों के शब्दावलियों को विभन्नि क्रियाई रूपों में देखा गया है ।

7.2 वनस्पति विज्ञान

Abjoint - अपयोजन - अपयोजित करना/होना ।

यहाँ पर अपयोजन क्रिया रूप है । यह क्रियाई रूप लिंग, वचन और काल के संदर्भ में अपने आप में स्वयं प्रस्तुत होता है । परन्तु यहाँ पर अपयोजित होना या करना रूप में सकर्मक एवं अकर्मक क्रियाएँ प्रस्तावित हैं । यहाँ पर 'योज' धातु शब्द है । 'अप' उपसर्ग है, जिससे अपयोज बना और 'न' क्रिया द्योतक है । जब इसे अपयोजित बना रहे हैं, यह अपयोजित विशेषण शब्द है । इसका संज्ञा रूप क्या हो सकता है । और अपयोजन क्रिया रूप तो है ही परन्तु अपयोजित शब्द की सीमा भाषा के अंतर्गत कितनी हो सकती है । अपयोजन रूप हिन्दी भाषा के क्रिया के संदर्भ में प्रयुक्त नहीं होता ऐसी स्थिति में इसे क्रिया पदबंद में डालना होगा ।

अपयोजन - अपयोजित करना/होना - इत् प्रत्यय

यह एक संभावना शब्द रूप बनाने के रूप की हो सकती है । - तब यह अपयोजित शब्द क्रिया पदबंध के नियमों से बनता हैं ।

abjunction - अपयोजन - अपयोजनित करना/होना ।

अपयोजन - अपयोजनित - करना/होना/इत् प्रत्यय

यहाँ पर इस अपयोजन शब्द में इत् प्रत्यय जोडकर अपयोजनित विशेषण बनाया गया है और इस विशेषण रूप में करना या होना जेडकर इसे क्रियार्थक बनाया जा सकता है ।

abussion - विलगन/विलगनित करना/होना

यहाँ पर विलगन शब्द में इत् प्रत्यय जोडकर विलगित बनाया गया है । इसका संज्ञा रूप विलग है । विशेषण रूप विलगित है और विलगन रूप में 'न' संयुक्त हो क्रिया के रूप में जुडकर विलगन बना है ।

विलगन	- विलगित	- करना/होना/इत् प्रत्यय	
foliceous	- पर्णील	- पर्णीलन	
		- पर्णीलन	- करना/होना
		- पर्णीलित	- करना/होना

यहाँ पर पर्णिल संज्ञा शब्द है । इसमें 'न' प्रत्यय जोडकर पर्णिलन बनाया गया है और इत् प्रत्यय जोडकर पर्णिलित् बनाया गया है । इस तरह से यह शब्द संज्ञा से विशेषण और विशेषण से क्रिया रूप बना है ।

folliform	- पर्णरूप	- पर्णरूपिम करना/होना
	- पर्णरूपी	- इ - प्रत्यय - होना/करना
	- पर्णरूपन	- न

एक शब्द से तीन - प्रक्रियाएँ बन रहीं हैं, इस के तीन रूप बने है, बिम्ब इसके अलग हैं, भिन्न प्रकार से क्रिया विशेषता के प्रकार कर सकते हैं । प्रक्रिया को परिभाषित करना होगा और जब पूरे विज्ञान की प्रोक्ति क्रिया बन सकती है ।

प्रस्तुत शब्द में कहीं पर इत् प्रत्यय और कहीं पर इ प्रत्यय और कहीं पर न प्रत्यय जोडकर इनमें सकर्मक एवं अकर्मक क्रियाएँ हो सकती हैं ।

pericentral	- परिकेन्द्र	- परिकेन्द्रित	- करना/होना ।
		- परिकेन्द्रन - न	
		- परिकेन्द्रना - ना	

उपर्युक्त उदाहरण में परिकेन्द्र में इत्, न, ना प्रत्यय जोड कर इनके रूपों को देखा गया है ।

peridermium	- परिकला	- परिकलन	- करना/होना
		- परिकलित	- इत् "
		- परिकलना	- ना "

उपर्युक्त उदाहरण में इत्, ना और न प्रत्यय जोडकर इन्हें फिर सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं से जोड कर इन्हें क्रियार्थी रूप दिया हैं और यह 'परि' शब्द की संकल्पना के साथ जुडकर प्रक्रिया संकेत के संदर्भ में उत्पादक प्रारूप बनता है ।

semi - cell	- कोषिकार्ध	- कोषिकार्धन	- करना/होना
	- कोषिकार्धित	- इत्	
	- कोषिकार्धना	- ना	
	- कोषिकार्ध	- करना/होना	

उपर्युक्त उदाहरण में जो कोषिकार्धना शब्द है वह किस सीमा तक उत्पादक हो सकता है इसका प्रयास भाषा के अंतर्गत इसका प्रयोग करकर देखना चाहिए अर्थात् कोशिकार्ध जो शब्द है वह उपर्युक्त रूपों में उत्पादक हो सकता है ।

abies	- बलूतित	- करना/होना
	- बलूतना	- ना
	- बलूत	- करना/होना
	- बलूतन	- न

उपर्युक्त उदाहरण में बलूत एक संज्ञा शब्द है । बलूतित विशेषण शब्द है और बलूतित करना या होना क्रियाई रूप है और उसके अन्य प्रकार के क्रियाई रूप दिए गए है । यह रूप कहाँ तक उत्पादक है और इसका प्रयोग किस सीमा तक उपयोगी रहेगा । क्या यह शब्द उत्पादक हो सकता है या नहीं इसका निर्धारण करना होगा, और उसका निर्धारण केवल उसके प्रयोग से हो सकता है ।

7.3 **प्रशासनिक शब्दावली :** इस कोटि के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

cansrassing	- मतार्थ	- मतार्थन	- करना/होना
		- मतार्थित	- इत् - करना/होना
		- मतार्थना	- ना
		- मतार्थ	- करना/होना
consenses	- मतैक्य	- मतैक्य	- करना/होना
		- मतैक्यता	- होना
calcutaling	- परिकलन	- परिकलन	- करना/होना
		- परिकलना	- ना
		- परिकलित	- करना/होना/इत्
circulating	- परिचल	- परिचलन	- करना/होना
		- परिचल	- करना/होना
		- परिचलित	- इत्/करना/होना
concept	- संकल्पना	- संकल्पित	- इत्/करना/होना
		- संकल्पना	- ना

		- संकल्प	- करना/होना
		- संकल्पन	- न
premises	- परिसर	- परिसर	- होना
		- परिसरन	- न
		- परिसरना	- ना

उपर्युक्त प्रशासनिक शब्दावली के अंतर्गत न, ना, इत्, करना, होना आदि प्रत्ययों को संज्ञा एवं विशेषण मूल शब्दों में जोडकर उन्हें क्रियार्थक बनाया गया है । इन सभी शब्दों में कहीं पर भी ध्वन्यात्मक परिवर्तन नहीं हुआ है । परन्तु इन सभी में सकर्मक एवं अकर्मक क्रियाएँ जोडकर इन्हें पारिभाषिक प्रशासनिक, शब्दावली के संदर्भ में संयुक्त क्रिया के रूप में देखा गया है । यह मूल धातु रूपी शब्दों में प्रत्ययों को जोडकर जो शब्दावली बनाई गई है । ये पदबंधात्मक क्रिया है । वह शब्दावली किस सीमा तक उत्पादकता की कोटि में अग्रसर होगी और कितने ऐसे पारिभाषिक शब्द है जो उत्पादक हो सकेंगें । इन सभी की परिकल्पनाओं को ध्यान में रखकर, जो मूल धातु रूप है उनमें संयुक्त क्रियाएँ जोडकर उन्हें उत्पादक बनाना होगा ।

7.4 बैंकिंग शब्दावली

protective	- संरक्षी	- संरक्षण	- करना/होना
		- संरक्षित	- होना
		- संरक्षण	- देना/ना
		- संरक्षिन	- न
		- संरक्षी	- करना/होना
case	- प्रकरण	- प्रकरण	- करना/होना
		- पकरणित	- करना/होना

accruel	- उपचय	- उपचय	- करना/होना
		- उपचयन	- न
		- उपचयित	- इत्
accrued	- उपचित	- उपचित	- करना/होना
		- उपचितन	- न
		- उपचितित	- इत्

भाषा नियमों एवं व्यवस्था पर निर्मित है । भाषा व्यवस्था का जब प्रश्न उठता है तब हमारे सम्मुख व्याकरणिक कोटियाँ निष्पन्न होती है और व्याकरणिक कोटियों के अंतर्गत संज्ञा रूप और विशेषण रूप कई हो सकते हैं और इनमें विभिन्न तरह के प्रत्ययों का भी योग होता है । परन्तु क्रिया धातु रूपों में केवल तीन प्रकार के तत्व उभर कर आते हैं - सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया और प्रेरणार्थक । यह अलग बात है कि मूल धातु रूप में किसी भी तरह का परिवर्तन आएं । सकर्मक, अकर्मक क्रियाओं में धातु के अंत में प्रत्यय जुडकर रूप परिवर्तन होता है और इन रूपों को काल, लिंग और वचन के संदर्भ में प्रयोग किया जा सकता है । परन्तु जब मूल धातु में ही परिवर्तन आता है । उनमें ध्वन्यात्मक परिवर्तन होता है और विभिन्न प्रकार के प्रत्यय भी जुडते है । क्रिया के संदर्भ में मूल धातु में परिवर्तन आना बहुत कम देखा गया है और ये साध्य रूपों में नहीं आते, क्योंकि ये साध्य रूप निश्चित व्यवस्था में उभरते हैं । अर्थात् कहने का तात्पर्य यही है कि धातु रूप भाषा और क्षेत्रों में पहले से ही उपस्थित रहते हैं परन्तु इनका उपस्थित रहना, उनकी सीमाओं में बंधे रहने, के अंतर्गत रहता है । जब यह पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावली के अंतर्गत रहते हैं तो व्याकरणिक नियमों एवं व्यवस्थाओं के अनुरूप उन्हें उत्पादक बनाया जा सकता है और इनकी उत्पादकता की सीमा क्या हो सकती है यह प्रयोग के द्वारा ही उनकी क्षमता का पता या अनुमान लगाया जा सकता है ।

उपर्युक्त उदाहरणों में मूल धातु रूप संज्ञाएँ विशेषण रूपी शब्द है और उन शब्दों को क्रिया के संदर्भ में भी साध्य बनाया गया है और ये जब क्रिया के संदर्भ में आ गए हैं तो ये किस सीमा तक

उत्पादक बनेंगे या रहेंगे यह प्रयोग कर्ता व प्रयोग क्षेत्र पर निर्भर करता है । अर्थात् इन सभी क्रिया रूपों में अधिकतर इत् प्रत्यय जोडने से क्रिया रूपी मूल धातु विशेषण रूप में परिवर्तित हो सकती है । अर्थात् संज्ञा से विशेषण बनाने में "इत्" प्रत्यय उत्पादक है और इन क्रियार्थक विशेषण रूपों में अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के रूप साध्य होते हैं ।

7.5 निष्कर्ष

सामान्य भाषा में जिस तरह की भाषा व्यवस्था एक वर्ग से दूसरे वर्ग में परिवर्तित करने की व्यवस्था को रूपांतरित करती है ठीक उसी पद्धति को विशिष्ठ, पारिभषिक एवं तकनीकी भाषा के संदर्भ में हम प्रयोग कर सकते हैं और जो रूपिम इस भाषा के अंतर्गत उभर कर आते हैं उन्हें ही उत्पउदक कहा जा सकता है ।

उपसंहार

"हिन्दी के उत्पादक रूपिम प्रयोजन मूलक आयाम (संज्ञा, विशेषण एवं क्रिया के संदर्भ में)" विषय के अंतर्गत ऐसे कुछ तत्वों को निर्धारित करने की अवश्यकता महसूस की गयी है जिनकी आधार शिला पर ये रूप पारिभाषिक संदर्भ में भी सरल एवं नैसर्गिक हो । पारिभाषिक शब्दों के अंतर्गत जो प्रत्यय एवं उपसर्ग जुड़ते है, उन तत्वों को उत्पादक बनाने का लक्ष्य आज प्रासंगिक है । सामान्यतः पारिभाषिक शब्दावली को कठिन माना जाता है और उसके रूपायन के लिए कई तरह की सावधानियाँ वरतनी पडती हैं । इसी तत्व को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन हुआ है । पारिभाषिक एवं तकनिकी शब्दावली में जो रूप के रूपिम है क्या ये रूपिम इसी क्षेत्र के अंतर्गत उत्पादक बन पाएगें या नहीं ? क्या ये रूप संभवतः पारिभाषिकी है ? क्या इन रूपों को संस्कृत भाषा या विदेशी भाषा से लिया गया है ? और अगर ये रूप हिन्दी के ही रूप हैं तो इन रूपों की विशिष्टता कहाँ पर उभर कर आती है आदि बातों को ध्यान में रखकर यह अध्ययन प्रस्तुत हुआ है जो आज की आवश्यकताओं की दिशा में समधान ढूँढ़ने का प्रयास है ।

हिन्दी के प्रयोजनमूलक आयाम एवं आधार का प्रयोग इस क्षेत्र में कहाँ तक अग्रसर रहा । क्या ये साहित्येतर क्षेत्र में भी उसी तरह से प्रयोजनमूलक रहेगें जैसे ये साहित्यिक क्षेत्र में थे । इन सभी तत्वों को भी दृष्टिगत किया गया । इस आधुनिक युग में भाषा को संरचनात्मक तथ्यात्मक और व्याकरणिक तत्वों पर रखा गया और इन सभी के अंतर्गत सामाजिक एवं साहित्यिक स्थितियों के साथ-साथ भाषा के प्रयोजनमूलक तत्व को भी देखा गया । इसमें रूपिमों को आधार बनाया गया और यह देखा गया कि कौनसे रूपिम किस क्षेत्र में कितने उत्पादक है । जब हिन्दी राजभाषा के रूप में स्वीकृत हुई, तब इसके व्यवहार क्षेत्र में बढौती हुई और उसके विभिन्न प्रकार के पक्षों पर भी विचार हो रहा है । जैसे - जैसे इसका पक्ष खुलता जाएगा या स्पष्ट होता जायेगा वैसे-वैसे उतनी ही सरलता से इस क्षेत्र में कार्य कर सकेगें ।

वैयाकरणों और भाषा वैज्ञानिकों ने भाषा की न्यूनतम अर्थवान और संरचित इकाई रूप

(morph) को माना है । प्रकार्य के रूप से रूप के दो भेद है रूपिम (morpheme) और संरूप (allomorph) । रूपिम न्यूनतम अर्थपूर्ण इकाई है जो विशिष्ट भाषा के संदर्भ में देखी जाती है और संरूप वह इकाई है जहाँ दो से अधिक रूप एक ही अर्थ प्रदान करते हैं । रूपिम दो प्रकार के हैं मुक्त और बद्ध । ये बद्ध और मुक्त रूपिम भी प्रकार्य की दृष्टि से एक ही कार्य को संपन्न करते हैं चाहे वह सामान्य क्षेत्र हो या विशिष्ट । अब तक हिन्दी भाषा के अंतर्गत भारतीय एवं पाश्चात्य वैयाकरणों ने यह सिद्ध किया कि व्याकरण संज्ञा, विशेषण, क्रिया, उपसर्ग, मध्यसर्ग, प्रत्यय एवं अव्ययों पर आधारित है और इन सभी का प्रयोग भाषा के अंतर्गत होता है और इसी के आधार पर भाषा की संरचना एवं विकास आधारित है । इसी रूप में इन लोगों ने क्षेत्र एवं परिस्थिति के अनुरूप उपर्युक्त व्याकरणिक तत्वों को जोडा है और नए रूपों को प्रस्तुत किया है । इसी पद्धति से भाषा का विकास साहित्यिक क्षेत्र में इतना हो चुका कि उन सभी का अध्ययन करना कठिन है ।

रूप भाषाई स्तर पर सामान्य रहते हैं । इन सामान्य रूपों को जब विशिष्ट रूप से प्रयोगित भाषा के अंतर्गत लिया जाता है तब यह रूप पारिभाषिक एवं तकनिकी रूप बन जाते हैं । इसका संबंध साहित्येतर से जितना है उतना ही पारिभाषिक शब्दावली से भी है । प्राय: पारिभाषिक शब्दों में मूल रूप सामान्य भाषा का ही है और जब इसमें उपसर्ग, प्रत्यय और अन्य व्याकरणिक तत्वों को पारिभाषिक और तकनिकी क्षेत्रों के अनुरूप उनमें रखा जाता है । तब ये ही शब्द विशिष्ट भाषा के पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं । जैसे 'बलूत'-यह एक वनस्पति विज्ञान का शब्द है जिसका अंग्रेजी शब्द Abies है । अगर इस बलूत को खण्डित किया जाये तो इसमें मूल शब्द 'बल' रहेगा जिसका अर्थ सामान्य हिन्दी में शक्ति है और इसमें "ऊत्" प्रत्यय जोडेगें तो यह शब्द बलूत बनेगा जो एक वैज्ञानिक तकनीकी/पारिभाषिक शब्द है । कहने का तात्पर्य यही है कि ऐसी साहित्येतर क्षेत्र की शब्दावलियों को तकनिकी एवं पारिभाषिक शब्द कहते हैं । लगभग इन शब्दों में मूल 'रूप' सामान्य भाषा के ही रहते हैं । जिसमें विभिन्न तरह के व्याकरणिक तत्वों को अपने क्षेत्र एवं परिस्थितियों के अनुरूप जोडा जाता है और उसे नया एवं संक्लिष्ट नाम दिया जाता है ।

तकनिकी एवं पारिभाषिक शब्दावली को सरल एवं लचीली बनाने की आवश्यकता है । वनस्पति

विज्ञान, प्रशासनिक और बैंकिंग शब्दावली के क्षेत्रों को लेकर के इन दिशाओं की स्थिति पर जो विचार किया गया है, इनमें से कुछ उत्पादक रूपिम उभर कर आते हैं और इन रूपिमों का अध्ययन हुआ हैं । इस अध्ययन से यह देखा गया कि क्या ये रूपिम संज्ञा वर्ग के है, विशेषण वर्ग के है या क्रिया वर्ग के हैं और अगर रूपिम संज्ञा वर्ग का है तो क्या ये रूपिम विशेषण वर्ग में या फिर क्रिया वर्ग में प्रस्तुत हो सकते हैं या नहीं ? और अगर प्रस्तुत हो सकते हैं तो इसके अंतर्गत ऐसे कौनसे प्रत्यय एवं उपसर्ग है जो इन रूपिमों के साथ जुडकर इन्हें उत्पादक बना रहें हैं । ऐसे कुछ रूपिम है जो अलग-अलग वर्गों में प्रत्यय एवं उपसर्गों के साथ उत्पादक हो रहे हैं । ये रूपिम उस क्षेत्र के अनरूप उत्पादक कहलाएगें । इस अध्ययन के दौरान निम्नलिखित बद्ध व मुक्त रुपिम उत्पादक सिद्ध हुए हैं । यहाँ उत्पादक रूपियों के उदाहरण देते है – इत, त, ता, ई, इक, इय, न, ना, वाला, हारा, आई,

ऐसा करने से संभावनाएँ ये हो सकती हैं कि पारिभाषिक एवं तकनिकी भाषा भी सामान्य भाषा के समान सरल, लचीली एवं लयात्मक बन सकती है । पाठक या अध्ययनकर्ता जिस सरलता से साहित्यिक भाषा का आनन्द लेते हैं उसी तरह का आनन्द वे साहित्येतर भाषा से ले सकते हैं । उपर्युक्त पद्धतियों का चयन अपने साहित्येतर भाषा क्षेत्र के संदर्भ में करेंगे । स्पष्टता और सुबाधता की सीमाएँ विस्तृत होंगीं । मानव के मस्तिष्क में मूल रूप से यह गढ़ गया कि पारिभाषिक शब्द का अध्ययन करना बहुत कठिन है और इसी कारणवश आज के विद्यार्थी भाषा विज्ञान के संदर्भ में पढना एवं उसका अध्ययन करना या उसे अपनी रुचि का विषय बनाना स्वीकार नहीं करते । इस भ्रम को हमें निकालना चाहिए ।

इस शोध में भी कुछ ऐसे पारिभाषिक एवं तकनिकी रूपिमों को लिया गया और उन्हें संज्ञा, विशेषण और क्रिया के वर्गों में रखा गया और उनके अंतर्गत, उनके शब्द रूपों के अनुसार प्रत्ययों और उपसर्गों को जोडा गया और उन्हें उत्पादक सिद्ध किया गया और यही प्रयास अगर सभी क्षेत्रों में करेगें तो पूर्ण रूप से नहीं परन्तु आंशिक रूप से यह कह सकते हैं कि साहित्येतर भाषा भी अपने मानदण्डों के अनुरूप सरल एवं मानक हो सकती है और सभी प्रयुक्ति क्षेत्रों को एक साथ रखकर विशेष योजन के अंतर्गत सम्यक अध्ययन हो तो यह आशा की जा सकती हैं कि अंतर-अनुशासनिक स्थितियों

(Inter-disciplinary) और एकार्थी पारिभाषिकता को अवतरित करने के संदर्भों को निर्धारित किया जा सकता हैं, इस प्रकार के चयन से हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली संपन्न बनाई जा सकती है । इस दिशा में यह कार्य सहायक होगा यही विश्वास हैं ।

परिशिष्ट

अ) सहायक ग्रन्थ हिन्दी

1. "अग्रवाल", वासुदेव शरण — पाणिनी परिचय
1965 मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद् मध्य प्रदेश
2. "आयंगर" वी. कृष्णा स्वामी — पाणिनी व्याकरण की भूमिका
1983 प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली
3. "गुरु" कामता प्रसाद — हिन्दी व्याकरण
1995 नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
4. "गोस्वामी" कृष्ण कुमार — प्रजनन मूलक भाषा और कार्यालय हिन्दी
1995 कालिंगा पब्लिकेशंस, दिल्ली
5. "गोस्वामी" एवं श्रीवास्तव — कार्यालय हिन्दी
1981 कालिंगा पब्लिकेशंस, दिल्ली
6. "चौधरी" अनन्त — हिन्दी व्याकरण का इतिहास
1972 बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना
7. "तिवारी" भोलानाथ एवं "चतुर्वेदी" महेन्द्र — पारिभाषिक हिन्दी : कुछ समस्याएं
1987 विद्याप्रकाशन मंदिर दरियागंज, दिल्ली
8. "तिवारी" भोलानाथ — शब्द विज्ञान
1988 साहित्य सहकार, कृष्णनगर दिल्ली
9. "परमहंस" — हिन्दी कामौलिक व्याकरण
1980 विभू प्रकाशन, दिल्ली
10. "पाण्डे" अमरनाथ — शब्द विमर्ष
1988 नटराज एवं सन्स, पटना
11. "ब्रजमोहन" — शब्द चर्चा
1986 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
12. "भाटिया" कैलाश चन्द्र — शब्द श्री
1978 शांति पब्लिकेशन, कलकत्ता
13. "मिश्र" नरेश — हिन्दी शब्द समूह का विकास
1987 नटराज पब्लिकेशन, बिहार
14. "मिश्र" विद्यानिवास — हिन्दी की शब्द संपदा
1982 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

15. "राजगोपालन्" एन.बी. — हिन्दी का भाषा वैज्ञानिक व्याकरण
1973 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

16. "वाजपाई" किशोरी लाल — हिन्दी व्याकरण
1981 मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ

17. "शर्मा" रमानाथ — पाणिनी व्याकरण में प्रजनन प्रविधियां
1976 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

18. "सिंह" दिलीप — व्यवसायिक हिन्दी
1991 दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

19. "सिंह" विजयपाल — सामान्य हिन्दी
1978 हिन्दी प्रचारक संस्थान, आगरा

20. "सिंहल" ओमप्रकाश एवं "वड़ेहरा" तिलकराज — व्यवहारिक हिन्दी
1983 पितांबर पब्लिकेशन, दिल्ली

21. "त्रिपाठी" रामदेव — भाषा विज्ञान की भारतीय परम्परा और पाणिनी
1981 बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, बिहार

22. डॉ. "सिन्हा" लक्ष्मण प्रसाद — "हिन्दी भाषा का रूपिमीय विश्लेषण"
प्रकाशक अंशुकमल प्रकाशन, पटना - 800001

23. "गोदरे" विनोद — "प्रयोजनमूलक हिन्दी"
वाणी प्रकाशन, दिल्ली

24. डॉ. "शर्मा" लक्ष्मीनारायण — "हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण"
विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

25. "कांत" सुरेश — "बैंकों में हिन्दी का प्रयोग"
1995, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली

26. डॉ. एस.के. तुली — शब्दकोश - वनस्पति विज्ञान,
1995, शंख प्रिंट और पैक, जयपुर

27. डॉ."तिवारी" भोलानाथ — "हिन्दी भाषा की शब्द संरचना"
1986, साहित्य सहकार, दिल्ली

28. डॉ. "वर्मा" धीरेन्द्र — "हिन्दी भाषा का इतिहास"
1973, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद

29. डॉ. "तिवारी" उदयनारायण — "हिनदी भाषा का उद्‌गम और विकास"
1975, लीडर प्रेस, इलाहाबाद

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) भारत सरकार — "बृहत् प्रशासन शब्दावली"
1992, रामकृष्णापुरम, दिल्ली

आ) सहायक ग्रन्थ अंग्रेजी

1.	"Bauer" Laurie	Introducing Liguistics Morphology 1988, University Press, Edinburgh
2.	"Beranard" Bloch	English Verb Inflection (Language) 1947, Eghlish University Press, London
3.	BloomFeild	Lanauage 1933, Henry Hult & Co. New York
4.	"Cardona" George	Panini (Survey of Research) 1980, Lipi Prakasan, Delhi
5.	Enwirstle	Language of Linguistics 1947, Oxford University Press, London
6.	El. Dash & Tucker	The Soclology of Society (Language Attitutes, Pg.165) 1975, T.J.Press, Cornwell
7.	Fasold	The Sociolinguistics of Society 1984, T.J. Press Ltd., Padstow Cornwall
8.	Greenberg, J.H.	Universal Of Human Languages, Vol. 3, word Structure. 1978,Stanford University Press, California
9.	Halliday, M.K.K.	An Introduction to functional Grammer 1985, Edward Arnold Ltd., London
10.	Hockett, C.F.	A Course of Modern Lingulstics 1958,McMillan Publishing Co., New York
11.	Jakobson Roman	Selected papers in structural Linguistics 1978, Monton Publishing, London.
12.	Kaushik Jai Narayan	Basic Hindi Vocabulary 1979, Lipi Prakasan, New Delhi.
13.	Khabchandani, L.M.	Language in Plural Society 1988, Motilal Banwaridas, Delhi
14.	Mathewis, P.H.	Morphology - An Introduction to the theory of word Structure 1978, Cambridge University Press, London

15.	Milroy James and Milroy Lesley	Authority in Lanauage, 1985, Routledge & Kegan Paul, London and New York
16.	Morrls S.	Language 1934, Univeralty Press of Hawaii Hono-lulu
17.	Mukherji Aditi and	Language Planning Need for - Emperical feedback (Manuscript) Papers presented ICLAND, International Conference organised by Osmania University, Hyderabad
18.	Mukherji Aditi	Language Standersation and Modernization, PGDTS, Course 413.9 Lexicon for Translation and Term Planning, Hyderabad Central Unversity.
19.	Nida Eugene A.	Morphology - the Descriptive Analysis of Words 1970, Michigan Press, Canada
20.	Palmer F.R.	Grammer 1971,T.G.S. Cambe & P. Rickard, London
21.	Pattanayak S.K.	Term Planning for Developing Nation, Unit 413.11, PGDTS, Course 413, Lexicon for Translation and Term Planning, University of Hyderabad.
22.	Qulne Orman	Word and Object 1965 George Hellen & Unwin, England
23.	Sweet	Grammer 1971, University of Washington Press, Washington
24.	Ulman	The Language of Phoenetics 1947, University of Walos Press, Cardiff
25.	Varma Satyakam	Vakyapadiyam 1978, Munshiyam Mohanlal, Delhi.